अध्यापन निर्देश

प्रस्तुत सहायक सामग्री को शिक्षक पाठ्यपुस्तक के विकल्प के रूप में न लें। निर्धारित पाठ्य सामग्री के पूर्ण अध्यापन के बाद ही प्रस्तुत सहायक सामग्री का प्रयोग छात्रों को विषयबोध एवं पुनरावृत्ति कार्य कराने के लिए करें।

1. अंतरा भाग-I गद्य खण्ड के अंतर्गत पाठ प्रारंभ करने से पूर्व पाठ की विधा का परिचय करवाना आवश्यक है।
2. तत्पश्चात् भाषा-शैलीगत विशेषताओं का परिचय करवाएँ।
3. गद्यांश की व्याख्या के संदर्भ में छात्रों को अंक विभाजन के विषय में बताकर स्पष्ट करें कि व्याख्या को तीन उपशीर्षकों के अंतर्गत लिखें। 1. प्रसंग, 2. व्याख्या एवं 3. विशेष।
4. प्रसंग के अन्तर्गत लेखक एवं पाठ का नाम लिखने का अभ्यास कराएँ, पाठ्यपुस्तक का नाम लिखना आवश्यक नहीं है।
5. विषयवस्तु पर आधाारित उत्तरों की शब्द सीमा 50-60 शब्दों की हो।
6. लेखक-परिचय को भी तीन उपशीर्षकों में लिखने का अभ्यास कराना आवश्यक है-

   1. जीवन परिचय, 2. रचनाएँ , 3. भाषा-शैलीगत विशेषताएँ।
7. अंतरा भाग-I काव्य खण्ड के अंतर्गत निर्धारित पाठ प्रारंभ करने से पूर्व कवि का सामान्य परिचय, वह किस धारा/वाद के हैं तथा उन्हें मिले पुरस्कारों की चर्चा अवश्य करें।
8. भाषा की जानकारी अति आवश्यक है क्योंकि व्याख्या, काव्य-सौंदर्य, जीवन परिचय इत्यादि के लेखन में यह सहायक सिद्ध होती है।
9. काव्यांश की व्याख्या को भी तीन उपशीर्षकों में बाँटने का ज्ञान कराना भी आवश्यक है क्योंकि प्रश्नपत्र में अंक विभाजन इसी प्रकार होता है यथा- 1. प्रसंग, 2. व्याख्या, 3. शिल्प सौंदर्य।
10. प्राय: छात्र व्याख्या एवं काव्य सौंदर्य के प्रश्नों के उत्तर एक समान लिख देते हैं। अत: शिक्षक का दायित्व है कि वह छात्रों को समझाए कि काव्य सौंदर्य दो उपशीर्षकों (1. भाव सौंदर्य, 2. शिल्प सौंदर्य) के अंतर्गत लिखा जाए तथा व्याख्या तीन उपशीर्षकों के अंतर्गत लिखी जाए।

11. छात्रों को अंकानुसार उत्तर शब्द-सीमा के अंतर्गत लिखवाने का अभ्यास करवाएँ।

12. कवि का जीवन परिचय तीन उपशीर्षकों के अंतर्गत लिखा जाए- 1. जीवन परिचय, 2. रचनाएँ, 3. काव्यगत विशेषताएँ।

13. पूरक पुस्तक 'अंतराल' के अंतर्गत सर्वप्रथम छात्रों को एकांकी, आत्मकथा तथा जीवनी के अंतर से परिचित करवाएँ।

14. पाठ पढ़ाने के पश्चात् पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त सहायक सामग्री के अंतर्गत दिए गए बोधात्मक प्रश्नों का अभ्यास अवश्य कराएँ।

15. चरित्र-चित्रण से संबंधित प्रश्नों के अभ्यास कार्य में यह अवश्य बताएँ कि चरित्र-चित्रण को उपशीर्षकों में ही लिखना चाहिए।

16. विविध विधाओं पर आधारित 3 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर 60-70 शब्द, तथा 4 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में देनें चाहिए।

17. ''अभिव्यक्ति एवं माध्यम'' शीर्षक के अंतर्गत सहायक सामग्री में प्रत्येक पाठ के पश्चात् लघूत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं। यद्यपि कक्षा XI में लघु प्रश्न नहीं पूछे जाते हैं तथापि विषय की सम्यक् जानकारी के लिए प्रश्नों का अभ्यास करवाना अति आवश्यक है।

18. पत्रकारीय लेखन से संबंधित गतिविधियाँ (रिपोर्ट लिखना, समाचार लिखना, संपादक को पत्र) कक्षा में अवश्य करवाएँ।

19. 'डायरी-लेखन' के अंतर्गत कक्षा में 'ऐनीफ्रेंक की डायरी' का वाचन करवाना छात्रों के हित में है। इससे छात्रों में डायरी लिखने की रुचि का भी विकास किया जा सकता है।

20. छात्रों को समाचारपत्र पढ़ने एवं समाचार सुनने के लिए प्रेरित करें तथा कक्षा में समूह-चर्चा को अवश्य स्थान दें।

21. छात्रों से उनका स्ववृत्त बनवाया जाए।

22. टिप्पण, आनुषंगिक टिप्पण, अनुस्मारक, कार्यसूची एवं कार्यवृत्त इत्यादि के प्रारूप का ज्ञान एवं लेखन का अभ्यास कार्य करवाना अति आवश्यक है।

23. सहायक सामग्री के अंतर्गत सभी लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर सार में नहीं हैं इसलिए छात्रों को प्रेरित किया जाए कि उन प्रश्नों के उत्तर वे पाठ से स्वयं खोजें।

24. 'पत्र लेखन' के अंतर्गत पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न पत्रों के प्रारूप के साथ ही उन्हें अंक विभाजन से भी अवगत कराएँ, यथा- प्रारंभ और अंत की औपचारिकताओं के लिए 1+1 अंक, विषय प्रतिपादन के लिए 2 अंक एवं प्रस्तुतिकरण के लिए 1 अंक निर्धारित होता है। इसलिए छात्रों को अंकानुसार पत्र-लेखन अभ्यास कार्य करवाया जाए।

25. संपादक के नाम पत्र के संदर्भ में कुछ दैनिक समाचारपत्रों के नाम एवं उनके प्रकाशन कार्यालयों के पते अवश्य याद करवाएँ।

26. छात्रों को इस बात का अंतर अवश्य समझाएँ कि समस्या के समाधाान का आग्रह किससे करना है और किससे नहीं।

27. छात्रों को बताया जाए कि पत्र-लेखन में कहीं पर भी वे अपने नाम, पते या विद्यालय के वास्तविक नाम का उल्लेख न करें।

28. प्रश्नपत्र में सर्वाधिक अंक (10) निबंध-लेखन के लिए निर्धारित होते हैं। शिक्षकों को निबंध-लेखन अभ्यास कार्य परं विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

29. सूक्तिपरक निबंधों के अभ्यास के लिए कुछ प्रचलित सूक्तियों का अर्थ (संदर्भ सहित) अवश्य समझाएँ।

30. सबसे महत्वपूर्ण कार्य शिक्षक के लिए यह है कि वह छात्र को प्रश्नपत्र हल करने का सही तरीका अवश्य समझाएँ। छात्रों को बताएँ कि एक प्रश्न के खण्डों-उपखण्डों को एक ही स्थान पर लिखें तथा यथासंभव प्रश्नों को प्रश्नपत्र के क्रमानुसार हल करने का प्रयास करें।

सहायक सामग्री निर्माण समिति

हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा-XI

क्र.सं.	*नाम*	*पद*
1.	**श्रीमती रानी देवी** ***(समूह संदर्शिका)***	*प्रधानाचार्या* सर्वोदय कन्या विद्यालय नं. 1 ज़ीनत महल, कमला मार्किट, नई दिल्ली-2
2.	**डॉ. सीमा पाण्डे** ***(सदस्य)***	*व्याख्याता - हिंदी* दीनदयाल उपाध्याय सर्वोदय बाल विद्यालय, राउज़ ऐवन्यू, नई दिल्ली-2
3.	**श्रीमती आशा रानी** ***(सदस्य)***	*व्याख्याता - हिंदी* सर्वोदय कन्या विद्यालय नं. 1 ज़ीनत महल, कमला मार्किट, नई दिल्ली-2
4.	**कु. उमादेवी** ***(सदस्य)***	*व्याख्याता - हिंदी* सर्वोदय सहशिक्षा उच्चतम माध्यमिक विद्यालय किचनर रोड, मालचा मार्ग, नई दिल्ली-21
5.	**श्रीमती कान्ता** ***(सदस्य)***	*व्याख्याता - हिंदी* डॉ. राजेन्द्रप्रसाद सर्वोदय विद्यालय, राष्ट्रपति संपदा, नई दिल्ली-4
6.	**कु. श्वेतिका बत्रा** ***(सदस्य)***	*व्याख्याता - हिंदी* सर्वोदय कन्या विद्यालय, बुलबुलीखाना, आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली-2

विषय सूची

क्र.सं.	*अध्याय*	*पृष्ठ संख्या*
1.	अंतरा भाग-I (गद्य खण्ड)	8-37
2.	अंतरा भाग-I (काव्य खण्ड)	38-78
3.	पूरक पुस्तक (अंतराल)	79-86
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	87-110
5.	अपठित बोध (गंद्याश तथा काव्यांश)	111-119
6.	पत्र-लेखन	120-125
7.	निबंध-लेखन	126-128
8.	प्रतिदर्श प्रश्न पत्र	129-138

हिंदी (ऐच्छिक)

कोड सं. 002

कक्षा-XI

(क)	अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश-बोध)	(10+5)	15
(ख)	रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन		25
(ग)	अंतरा भाग-1 : (काव्य भाग)		20
	: (गद्य-भाग)		15
	अंतराल भाग-1		15
(घ)	मौखिक		10

क अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश-बोध) **(10+5)**

1. गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न- 10
2. काव्यांश पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न- 05

ख रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन

अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर सृजनात्मक लेखन से संबंधित दो प्रश्न **25**

3. निबंध (विकल्प सहित) 10
4. कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) 05
5. व्यावहारिक लेखन (प्रतिवेदन, कार्यसूची, कार्यवृत्त इत्यादि) पर दो प्रश्न (5+5) 10

ग अंतरा भाग-1 (20+15) **35**

काव्य भाग 20

6. दो में से एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या 08
7. कविताओं के कथ्य पर दो प्रश्न (3+3) 06
8. काव्य-सौंदर्य पर दो प्रश्न (3+3) 06

गद्य-भागः			**15**
9. सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक)			04
10. पाठों की विषय वस्तु पर आधारित **तीन** में से **दो** प्रश्न		(3+3)	06
11. **दो** में से किसी **एक** लेखक/कवि का साहित्यिक परिचय			05
अंतराल : भाग 1			**15**
12. विषयवस्तु पर आधारित (तीन में से दो प्रश्न)		(4+4)	08
13. विविध विधाओं पर आधारित दो बोधाात्मक प्रश्न		(4+3)	07
घ **मौखिक परीक्षण : (ऐच्छिक)**		**5+5**	**10**

श्रवण (सुनना) : वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप करना, वाद-विवाद, भाषण, कवितापाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझना।

बोलना : भाषण, सस्वर कविता-पाठ, वार्तालाप और उसकी औपचारिकता, कार्यक्रम-प्रस्तुति, कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना, परिचय देना, भावानुकूल संवाद-वाचन।

वार्तालाप की दक्षताएँ:

टिप्पणी : वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय ही होगा। निर्धारित 10 अंकों में से 5 श्रवण (सुनना) के मूल्यांकन के लिए और 5 (बोलना) के मूल्यांकन के लिए होंगे।

श्रवण (सुनना) का मूल्यांकन

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 250 शब्दों का होना चाहिए। अध्यापक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी/परीक्षक अलग कागज़ पर दिए हुए श्रवण बोध के अभ्यासों को हल कर सकेंगे।

अभ्यास रिक्तस्थान-पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य/असत्य का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं। प्रत्येक आधे अंक के लिए 1-1 परीक्षण प्रश्न होगा।

मौखिक अभिव्यक्ति (बोलना) का मूल्यांकनः

1. **चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णनः** इस भाग में अपेक्षा की जाएगी कि विद्यार्थी विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करें।
2. **किसी चित्र का वर्णन :** चित्र लोगों या स्थानों के हो सकते हैं।
3. **किसी निर्धारित विषय पर बोलना :** जिससे विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सकें।
4. कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना।

छात्र-निर्देश

अन्तरा भाग-1

गद्य-खण्ड

(1) गद्य-खण्ड के अन्तर्गत सप्रसंग व्याख्या का 4 अंक का एक प्रश्न पूछा जाता है।

(2) सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न का उत्तर तीन उपशीर्षकों के अन्तर्गत देना आवश्यक है-

1. प्रसंग, 2. व्याख्या, 3. विशेष

(3) प्रसंग-लेखन के अन्तर्गत पाठ एवं लेखक का नाम अनिवार्य रूप से दें। पाठ्यपुस्तक का नाम न लिखें। एक पंक्ति में व्याख्या के लिए दिए गए गद्यांश का पूर्वापर प्रसंग अवश्य लिखें।

(4) व्याख्या के अन्तर्गत गद्यांश की पंक्तियों का पूर्वापर प्रसंग से संबंध स्थापित करते हुए गद्यांश की व्याख्या करें।

(5) विशेष के अनतर्गत लेखक की भाषा एवं शैलीगत विशेषताएँ लिखें।

(6) गद्यखण्ड की विषयवस्तु पर आधारित प्रश्न 3 अंक के पूछे जाते हैं इसलिए उनके उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखें।

(7) लेखक परिचय को भी तीन उपशीर्षकों में बाँटकर लिखें- जीवन परिचय, रचनाएँ तथा साहित्यगत विशेषताएँ।

(8) 'जीवन परिचय' शीर्षक के अंतर्गत लेखक के जन्म, परिवार, शिक्षा एवं साहित्यिक गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारी दें।

(9) 'रचनाएँ' शीर्षक के अन्तर्गत लेखक द्वारा रचित अन्य रचनाओं के नाम लिखें।

(10) साहित्यगत विशेषताओं के अन्तर्गत लेखक के लेखन के विषयों, भाषा एवम् शैलीगत विशेषताओं की जानकारी दें।

अन्तरा भाग-1

गद्य खण्ड

पाठ-1 ईदगाह

विधा - कहानी

कहानीकार- प्रेमचंद

कहानीकार की मुख्य रचनाएँ-

कहानी संग्रह	-	मानसरोवर (आठ भाग), गुप्तधन (दो भाग)
उपन्यास	-	निर्मला, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान
नाटक	-	कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी
निबन्ध-संग्रह	-	विविध प्रसंग
साहित्यिक निबन्ध	-	कुछ विचार

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. भाषा सजीव एवम् बोलचाल के निकट
2. रोचक एवम् मुहावरेदार
3. तत्सम तथा उर्दू शब्दों का प्रयोग, पात्रनुकूलता
4. भाषा-शैली- भावपूर्ण, वर्णनात्मक एवं संवादात्मक

स्मरणीय तथ्य-

मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'ईदगाह' बालमनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। कहानी का प्रमुख पात्र हामिद है जो अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। हामिद के चरित्र के माध्यम से यह बताया गया है कि किस प्रकार अभावग्रस्त जिंदगी में बच्चे समय से पहले समझदार हो जाते हैं, वे अपनी इच्छाओं का दमन करना एवं परिस्थितियों से समझौता करना शीघ्र ही सीख जाते हैं।

ईद के अवसर पर गाँव में ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। सभी लोग कामकाज निपटाकर ईद के मेले जाने की जल्दी में हैं। बच्चे सबसे ज्यादा खुश हैं। उन्हें गृहस्थी की चिंताओं से कोई मतलब नहीं। उन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि उनके अब्बाजान ईद के लिए पैसों का इंतजाम करने चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं और यदि चौधरी पैसे उधार देने से मना कर दे तो वे ईद का त्योहार नहीं मना पाएँगे। उनका यह ईद का खुशी का अवसर मुहर्रम जैसे मातम में बदल जाएगा। बच्चों को तो बस ईदगाह जाने की जल्दी है।

हामिद चार-पाँच साल का दुबला-पतला लड़का है, वह अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। उसके माता-पिता गत वर्ष गुज़र चुके हैं, परन्तु उसे बताया गया है कि उसके अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं और उसकी अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं। इसलिए हामिद आशावान है और प्रसन्न है।

अमीना स्वयं सेवैयों के इंतजाम के लिए घर पर रहकर हामिद को तीन पैसे देकर मेले भेज देती है। हामिद के साथ उसके दोस्त-मोहसिन, महमूद, नूरे और सम्मी भी हैं।

ईदगाह में नमाज पढ़ने के पश्चात् हामिद के दोस्त चर्खियों पर झूलते हैं परन्तु हामिद दूर खड़ा रहता है। खिलौनों की दुकान से महमूद सिपाही, नूरे वकील, मोहसिन भिश्ती तथा सम्मी धोबिन खरीदता हैं। हामिद खिलौनों की निंदा करता है परन्तु साथ ही ललचाई निगाहों से उन्हें देखता भी है। सभी मित्र मिठाइयाँ खरीदते हैं और हामिद को चिढ़ा-चिढ़ाकर खाते हैं।

मेले के अंत में लोहे की दुकान पर चिमटा देखकर हामिद को अपनी दादी का ख्याल आता है। दुकानदार से मोलभाव करके वह चिमटा खरीद लेता है। हामिद के तर्कों के कारण उसके सभी दोस्त उसके चिमटे से प्रभावित हो जाते हैं। घर पहुँचकर सभी दोस्तों के खिलौने किसी न किसी प्रकार टूट जाते हैं।

हामिद के घर पहुँचते ही दादी अमीना उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी पर अचानक उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंक गई। पूछने पर हामिद बताता है कि उसने मेले से तीन पैसे का चिमटा खरीद लिया। दादी उसकी नासमझी पर क्रोधित होते हुए पूछती है कि पूरे मेले में उसे कोई और चीज़ खरीदने के लिए नहीं मिली? हामिद अपराधी भाव से बताता है कि दादी की उँगलियाँ तवे से जल जाती थी, इसलिए उसने चिमटा खरीदा। यह सुनकर बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया।

दादी अमीना हामिद का त्याग, उसका स्नेह, उसका विवेक देखकर हैरान रह गई। सुबह से भूखा बच्चा! दूसरों को मिठाई खाते देख, खिलौने लेते देख, कैसे इसने अपने मन को मनाया होगा। मेले में भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। यह सब सोचकर अमीना का मन गद्गद् हो गया।

दादी अमीना एक बालिका के समान रोने लगी। वह दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जा रही थी तथा आँसू की बड़ी-2 बूँदे गिराती जा रही थी। परन्तु हामिद इस रहस्य को समझने के लिए बहुत छोटा था।

बौद्धिक प्रश्न-

(1) 'ईदगाह' कहानी का मुख्य पात्र कौन है?

(2) हामिद की दादी का नाम क्या है?

(3) दादी ने हामिद को अकेले मेले क्यों भेजा?

(4) पुलिसकर्मियों के बारे में हामिद और मित्रों की क्या धारणा है?

(5) बच्चों ने चौधरी के पास जिन्नात होने की बात क्यों कही?

(6) हामिद के मित्रों ने मेले से क्या-2 खरीदा?

(7) हामिद के हाथ में चिमटा देखकर दादी क्यों क्रोधित हो गई?

(8) दादी का क्रोध स्नेह में क्यों बदल गया?

(9) 'हामिद इसका रहस्य क्या समझता :- यहाँ मुंशी प्रेमचंद किस रहस्य की ओर संकेत कर रहे हैं?

(10)हामिद की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने उसे कहानी का नायक बना दिया।

(11) आशय स्पष्ट कीजिए-

(i) 'उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।'

(ii) 'उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल ले, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए।'

(iii) 'मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।'

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(i) इस्लाम की निगाह .... लड़ी में पिरोए हुए है।

(ii) बुढ़िया का क्रोध .... रहस्य क्या समझता!

पाठ-2 दोपहर का भोजन

विधा - कहानी

कहानीकार- अमरकांत

कहानीकार की मुख्य रचनाएँ-

कहानी संग्रह	-	ज़िंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र-मिलन, कुहासा
उपन्यास	-	सूखा पत्ता, ग्राम सेविका, काले उजले दिन, सुखजीवी, बीच की दीवार, इन्हीं हथियारों से

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. भाषा सहज, सजीव एवम् प्रभावशाली
2. आंचलिक मुहावरों एवं शब्दों का प्रयोग
3. चित्रात्मकता
4. भाषा-शैली- वर्णनात्मक एवं संवादात्मक

स्मरणीय तथ्य-

'दोपहर का भोजन' गरीबी से जूझते एक निम्न मध्यवर्गीय शहरी परिवार की कहानी है, जिसके मुखिया की अचानक नौकरी छूट जाने के कारण परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो जाता है। परिवार के सदस्यों को भरपेट भोजन तक नसीब नहीं हो रहा है। पूरे परिवार का संघर्ष भावी उम्मीदों पर टिका है। सिद्धेश्वरी संकट की इस घड़ी में परिवार के सभी सदस्यों को एकजुट एवं चिंतामुक्त रखने का अथक प्रयास करती है। वह अपने परिवार को टूटने नहीं देना चाहती है।

सिद्धेश्वरी तथा मुंशीजी के परिवार में उनके अतिरिक्त उनके तीन पुत्र हैं- 21 वर्षीय बड़ा बेटा रामचन्द्र, 18 वर्षीय मँझला बेटा मोहन तथा 6 वर्षीय छोटा बेटा प्रमोद।

रामचन्द्र एक स्थानीय दैनिक समाचार-पत्र के दफ़्तर में प्रूफ़ रीडरी का काम सीखता है तथा नौकरी की तलाश में है। मोहन हाईस्कूल के इम्तिहान की तैयारी कर रहा है।

घर के सभी सदस्य रामचंद्र, मोहन तथा मुंशीजी बारी-बारी भोजन के लिए आते हैं। सभी मन ही मन इस वास्तविकता से परिचित हैं कि घर में पर्याप्त भोजन नहीं है। वे सभी कुछ न कुछ बहाना बनाकर आधे पेट ही भोजन करके उठ जाते हैं।

रामचन्द्र के भोजन के दौरान सिद्धेश्वरी मंझले बेटे मोहन की पढ़ाई की झूठी तारीफ करती है। वह मोहन से झूठमूठ कहती है कि रामचंद्र उसकी प्रशंसा करता है। मुंशीजी से भी वह झूठ बोलती है कि रामचन्द्र उन्हें देवता के समान कहता है। 'मकान किराया नियंत्रण विभाग' के क्लर्क के पद से उनकी छँटनी हो चुकी थी और आजकल मुंशीजी काम की तलाश में हैं। मुंशीजी भोजन करते समय सिद्धेश्वरी से नजरें चुराते हैं। उन्हें मालूम है कि घर में भोजन बहुत कम है और वह स्वयं को इस स्थिति का जिम्मेदार मानते हैं।

सिद्धेश्वरी पर्याप्त भोजन न होते हुए भी सदस्यों से और भोजन लेने का आग्रह करती है। ऐसा करके वह घर के सदस्यों को गरीबी एवं अभाव का एहसास नहीं होने देना चाहती। वह सदस्यों की एक-दूसरे के विषय में झूठी तारीफ करके गरीबी के अभावग्रस्त एवं संघर्षपूर्ण वातावरण में भी उन्हें एकजुट तथा खुशहाल रखने की कोशिश करती है।

सबको भोजन करवाने के पश्चात् सिद्धेश्वरी जब स्वयं भोजन करने बैठती है तो उसके हिस्से थोड़ी-सी दाल, जरा-सी चने की तरकारी तथा मात्र एक रोटी आती है। तभी उसे अचानक अपने सबसे छोटे पुत्र प्रमोद का ध्यान आता है, जिसने अभी भोजन नहीं किया था। वह आधी रोटी तोड़कर प्रमोद के लिए रख देती है तथा शेष आधी लेकर भोजन करने बैठ जाती है। पहला ग्रास मुँह में रखते ही उसकी आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे जो उसकी विवशता को बयान करते हैं।

बौद्धिक प्रश्न-

1. सिद्धेश्वरी घर के सदस्यों से एक-दूसरे के विषय में झूठ क्यों बोलती है?
2. मुंशीजी तथा सिद्धेश्वरी की असंबद्ध बातें कहानी से कैसे संबद्ध है?
3. 'उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टपटप आँसू चूने लगे।' इस कथन के आधार पर सिद्धेश्वरी की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।
4. 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
5. सिद्धेश्वरी का चरित्र चित्रण कीजिए।
6. आशय स्पष्ट कीजिए-
   (क) वह मतवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा भर पानी लेकर गट-गट चढ़ा गई।
   (ख) यह कहकर उसने अपने मँझले लड़के की ओर इस तरह देखा, जैसे उसने कोई चोरी की हो।

(ग) मुंशी जी ने चने के दानों की ओर इस दिलचस्पी से दृष्टिपात किया, जैसे उनसे बातचीत करने वाले हों।

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(क) मुंशी जी ने पत्नी .... गुड़ होगा क्या?

(ख) उन्माद की रोगिणी .... प्रमोद को कुछ हो जाए।

(ग) सारा घर .... कहीं जाना न हो।

पाठ-3 टार्च बेचने वाले

विधा - व्यंग्य

कहानीकार- हरिशंकर परसाई

लेखक की मुख्य रचनाएँ-

कहानी संग्रह	-	हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे
उपन्यास	-	रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज
निबन्ध-संग्रह	-	तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, पगडंडियों का ज़माना, सदाचार की तावीज़, शिकायत मुझे भी है, और अंत में
व्यंग्य-लेख संग्रह	-	वैष्णव की फिसलन, तिरछी रेखाएँ, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, विकलांग श्रद्धा का दौर

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. बोलचाल के शब्दों का कुशल प्रयोग
2. भावानुकूल भाषा
3. मुहावरों का प्रयोग
4. भाषा सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण
5. भाषाशैली व्यंग्यपूर्ण, संवादात्मक, उपदेशात्मक

स्मरणीय तथ्य-

'टार्च बेचने वाले' हरिशंकर परसाई की एक सशक्त व्यंग्य रचना है। परसाई जी ने दो दोस्तों की कहानी बतायी है कि दो मित्र हैं, जिनमें से पहला टार्च बेचने का काम शुरू करता है तथा दूसरा संत की वेशभूषा धारण कर प्रवचनकर्ता बन जाता है। पहला मित्र अपने दूसरे मित्र के धंधे में अर्जित लाभ को देखकर हैरान रह जाता है तथा स्वयं भी वही धंधा अपनाने का निश्चय करता है। लेखक ने इस रचना के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास तथा भोली-भाली जनता को ठगनेवाले

तथाकथित धर्माचार्यों पर कड़ा प्रहार किया है।

लेखक बहुत दिनों बाद उस व्यक्ति से मिला जो पहले चौराहे पर 'सूरज छाप' टार्च बेचा करता था। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी तथा उसने लंबा कुरता पहना हुआ था। बदली हुई वेशभूषा का कारण पूछे जाने पर उसने बताया कि एक घटना ने उसका जीवन बदल दिया इसलिए उसने टार्च बेचने का धंधा छोड़ दिया है।

इसके बाद वह लेखक को उस घटना के विषय में बताता है। पाँच वर्ष पूर्व वह तथा उसका मित्र निराश बैठे थे। उनके सामने एक प्रश्न था- 'पैसा कैसे पैदा करें?' इस सवाल के हल के लिए दोनों ने पैसा कमाने के लिए अलग-अलग दिशाओं में जाने का निश्चय किया तथा पाँच वर्ष बाद एक नियत स्थान पर मिलने का वादा किया।

पाँच वर्षों के दौरान पहला मित्र टार्च बेचने का काम करने लगा। वह लोगों को मैदान में इकट्ठा करता, उन्हें अँधेरे का डर दिखाता और उसकी सारी टार्च हाथों हाथ बिक जाती थी। उसका धंधा खूब चलता था।

पाँच वर्ष बाद वह निश्चित स्थान पर पहुँचता है परन्तु उसे उसका मित्र नहीं मिलता। वह उसे ढूँढ़ने निकल पड़ता है। एक शाम उसे एक मैदान में मंच पर सुंदर रेशमी वस्त्रों से सजे एक भव्य पुरुष बैठे दिखाई देते हैं। मैदान में हजारों नर-नारी श्रद्धा से झुके उनके प्रवचन सुन रहे थे। संत कह रहे थे कि यह युग ही अंधकारमय है। आज मनुष्य इस अंधकार से घबरा उठा है। अंतर की आँखें ज्योतिहीन हो गई हैं। मानव-आत्मा अंधकार में घुटती है। इस प्रकार वह लोगों को डराते हैं परन्तु फिर तुरन्त उन्हें सांत्वना देते हुए अपने 'साधना मंदिर' बुलाकर अंतर की ज्योति को जलाने का आह्वान करते हैं। लोग स्तब्ध होकर संत की बातें सुन रहे थे पर उसकी हँसी छूट रही थी।

वह उस भव्य पुरुष से मिलने उनकी कार के पास पहुँचा। उसने तो उस भव्य पुरुष को नहीं पहचाना परन्तु उस भव्य पुरूष ने उसे पहचानकर में बिठा लिया। संत की वेशभूषा में यह उसका मित्र ही था। बंगले पर पहुँचकर दोनों में खुलकर बातचीत हुई। वह अपने मित्र का वैभव देखकर हैरान था।

उसने संत बने अपने मित्र से पूछा कि उसने इतनी दौलत कैसे पाई, क्या वह भी टार्च बेचता है? फिर वह कहता है कि उन दोनों के प्रवचन एक जैसे ही हैं। वह भी लोगों को अँधेरे का डर दिखाकर टार्च बेचता है तथा उसका संत बना मित्र भी लोगों को अँधेरे का भय दिखाता है। दूसरा मित्र उत्तर देता है कि उसकी टार्च किसी कंपनी की बनाई हुई नहीं है, वह बहुत ही सूक्ष्म है परन्तु उसकी कीमत बहुत अधिक मिल जाती है।

पहला मित्र तथाकथित संत के साथ दो दिन तक रहा। सारा रहस्य उसकी समझ में आ गया कि लोगों को डराना तथा ज्ञान की बातें कहना इस धंधे का मूलमंत्र है। वह 'सूरज छाप' टार्च की पेटी नदी में फेंक देता है, दाढ़ी बढ़ाकर लंबा कुरता पहन लेता है। वह लेखक को बताता है कि पहले वह लोगों को बाह्य अंधकार से डराता था परन्तु अब वह उन्हें आत्मा के अंधकार का भय दिखाएगा। यानी अब भी बेचेगा तो वह टार्च ही परन्तु कंपनी बदल रहा है।

बौद्धिक प्रश्न-

1. लेखक ने टार्च बेचने वाली कंपनी का नाम 'सूरज छाप' ही क्यों रखा?
2. दोनों मित्र किसलिए अलग-अलग दिशाओं में जाते हैं?
3. पाँच साल बाद दोनों दोस्तों की मुलाकात किन परिस्थितियों में और कहाँ होती है?
4. पहला मित्र लोगों को टार्च खरीदने के लिए किस प्रकार प्रेरित करता था?
5. दूसरे मित्र ने पैसा कमाने का कौन-सा तरीका अपनाया?
6. 'जहाँ अंधकार है वहीं प्रकाश है।' - इसका क्या तात्पर्य है?
7. दोनों मित्रों के पैसे कमाने के तरीकों में क्या अंतर है? पाठ के आधार पर बताएँ।
8. 'सवाल के पाँव जमीन में गहरे गड़े हैं। यह उखड़ेगा नहीं।' इस कथन में मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत है और क्यों?
9. संत बने मित्र ने अपने मित्र को पहचान लिया, परन्तु दूसरे मित्र को उसे पहचानने में परेशानी क्यों हुई?
10. आशय स्पष्ट कीजिए-

    (क) आजकल सब जगह अँधेरा छाया रहता है। रातें बेहद काली होती हैं। अपना ही हाथ नहीं सूझता।

    (ख) प्रकाश बाहर नहीं है, उसे अंतर में खोजो। अंतर में बुझी उस ज्योति को जगाओ।

    (ग) धंधा वहीं करूँगा, यानी टार्च बेचूँगा। बस कंपनी बदल रहा हूँ।

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(क) मैं आज मनुष्य .... पीड़ा से त्रस्त है।

(ख) जहाँ अंधकार है .... अपने भीतर जगाओ।

(ग) तुम कुछ भी कहलाओ .... कम्पनी का टार्च बेचना है।

पाठ-4 गूँगे

विधा - कहानी

कहानीकार- रांगेय राघव

कहानीकार की अन्य रचनाएँ-

कहानी संग्रह	-	रामराज्य का वैभव, देवदासी, समुद्र के फेन, अधूरी मूरत, जीवन के दाने, अंगारे न बुझे, ऐयाश मुर्दे, इंसान पैदा हुआ
उपन्यास	-	घरौंदा, विषाद-मठ, मुर्दों का टीला, सीधा-सादा रास्ता, अँधेरे के जुगनू, बोलते खंडहर, कब तक पुकारूँ

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. भाषा सरल, सहज एवं प्रवाहपूर्ण
2. लाक्षणिक, भावपूर्ण एवं चित्रात्मक
3. मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग
4. भाषा शैली संवादात्मक, व्यंग्यपूर्ण एवं विचारप्रधान
5. भाषाशैली व्यंग्यपूर्ण, संवादात्मक, उपदेशात्मक

स्मरणीय तथ्य-

'गूँगे' कहानी के माध्यम से रांगेय राघव ने समाज में विकलांगों के प्रति संवेदनहीनता को दर्शाया है तथा साथ ही समाज में शोषित मनुष्य की बेबसी का भी चित्रण किया है।

कहानी का प्रमुख पात्र एक गूँगा किशोर है। वह जन्म से वज्र बहरा होने के कारण गूँगा है। गूँगा बहुत मेहनती एवं स्वाभिमानी है।

गूँगा तीव्र बुद्धि भी है। वह इशारों के माध्यम से अपने विषय में बताता है कि जब वह छोटा था तब उसकी माँ उसे छोड़कर चली गई क्योंकि उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। वह यह भी बताता है कि वह भीख नहीं लेता और मेहनत का खाता है। गूँगा मुँह खोलकर दिखाता है और बताता है कि बचपन में किसी ने गला साफ करने की कोशिश में काकल काट दिया। चमेली ने पहली बार

गले में काकल के महत्व को अनुभव किया।

चमेली बहुत भावुक थी। उसके हृदय में अनाथ बच्चों के प्रति दया थी। चमेली ने चार रुपये वेतन और खाने पर उसे नौकर रख लिया। गूँगे के बुआ-फूफा ने उसे पाला था परन्तु गूँगा वापिस उनके पास नहीं जाना चाहता था। वे लोग उसे बहुत मारते थे। वे चाहते थे कि गूँगा रूखा-सूखा खाकर बाजार में पल्लेदारी करके पैसा कमाकर लाए और उन्हें दे।

एक दिन अचानक गूँगा कहीं चला गया। सबके खाना खा चुकने के बाद गूँगे ने आकर इशारे से खाना माँगा। चमेली ने गुस्से में उसके आगे रोटियाँ फंक दी। पहले तो गूँगे ने रोटियाँ छुई नहीं परन्तु न जाने क्या सोचकर रोटियाँ उठाकर खा ली। फिर तो अकसर गूँगा जब चाहे भाग जाता था, जब चाहे लौट आता था।

चमेली के पुत्र वसंता ने कसकर गूँगे को चपत जड़ दी। गूँगे का हाथ उठा और फिर न जाने क्यों अपने आप रुक गया। उसकी आँखों में पानी भर आया और वह रोने लगा। चमेली के आने पर वसंता बताता है कि गूँगा उसे मारना चाहता था। गूँगा कुछ सुन नहीं सकता था परन्तु वह चमेली की भाव-भंगिमा से सब कुछ समझ जाता है। चमेली ने गूँगे को मारने के लिए हाथ उठाया तो गूँगे ने उसका हाथ पकड़ लिया। चमेली को लगा जैसे उसके पुत्र ने उसका हाथ पकड़ लिया हो। उसने घृणा से हाथ छुड़ा लिया। उसने सोचा कि यदि उसका बेटा गूँगा होता तो वह भी ऐसे ही दु:ख उठाता।

गूँगे के हाथ पकड़ने से चमेली को उसके शारीरिक बल का अंदाजा हुआ कि गूँगा वसंता से कहीं अधिक ताकतवर है। चमेली को हैरानी भी हुई कि गूँगा शायद यह बात समझता है कि वसंता मालिक का बेटा है इसलिए वह उसे हाथ नहीं लगा सकता है। मन ही मन उसे क्षोभ भी हुआ कि शायद इसलिए गूँगे ने उसका हाथ पकड़ा था कि वह तो वसंता की माँ थी, वह तो उसे दंड दे सकती थी। चमेली ने गूँगे को आश्रय दिया था, उसकी शारीरिक एवं भावनात्मक सुरक्षा चमेली की जिम्मेदारी थी। गूँगे को चमेली से निष्पक्ष न्याय की उम्मीद थी परन्तु चमेली के पुत्रमोह ने उसकी आँखों पर परदा डाल दिया था।

गूँगे पर चोरी का आरोप लगाया गया। चमेली उस पर बहुत क्रोधित हुई। उसने गूँगे का हाथ पकड़कर द्वार से निकल जाने का इशारा किया। गूँगे की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। चमेली उस पर खूब चिल्लाई, उसे बहुत बुरा-भला कहा। लेकिन जैसे मन्दिर की मूर्ति कोई उत्तर नहीं देती वैसे ही उसने भी कुछ नहीं कहा। उसे केवल इतना ही समझ आया कि मालकिन नाराज़ हैं और उसे घर से निकल जाने को कह रही हैं। उसे इस बात पर बहुत हैरानी और अविश्वास हो रहा था। अन्तत: चमेली ने उसे हाथ पकड़कर दरवाजे से बाहर धकेल दिया।

इस घटना के करीब घंटे भर बाद गूँगा वापिस आया। वह खून से भीग गया था, उसका सिर फट गया था। वह सड़क के लड़को से पिटकर आया था क्योंकि गूँगा होने के नाते वह उनसे दबना नहीं चाहता था। गूँगा दरवाजे की दहलीज पर सिर रखकर कुत्ते की तरह चिल्ला रहा था। चमेली सोचती है कि आज समाज में गूँगे अनेक रूपों में है। जो व्यक्ति अन्याय देखता है और चुप रहता है तथा

जो अत्याचार चुपचाप सहता है, वह भी गूँगा है। अन्याय तथा शोषण के खिलाफ आवाज न उठाने वाला, विचार होते हुए भी उन्हें प्रकट न कर सकने वाला भी गूँगा ही है। इन सबकी असमर्थता ही इन्हें गूँगा बना देती है।

बौद्धिक प्रश्न-

1. गूँगे ने इशारे से अपने बारे में क्या-क्या बताया?
2. गूँगे की अस्फुट और कर्कश आवाज़ सुनकर चमेली ने क्या अनुभव किया?
3. गूँगे ने अपने स्वाभिमानी होने का परिचय किस प्रकार दिया?
4. गूँगा अपने बुआ-फूफा के पास वापिस क्यों नहीं जाना चाहता था?
5. 'मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूँगेपन की प्रतिच्छाया है।'- वर्तमान सामाजिक परिवेश के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
6. गूँगे के अचानक भाग जाने पर चमेली की क्या प्रतिक्रिया हुई?
7. गूँगा स्वाभिमानी था फिर भी उसने चमेली की फेंकी हुई रोटियाँ क्यों उठाकर खा ली?
8. यदि वसंता गूँगा होता तो आपकी दृष्टि में चमेली का व्यवहार उसके प्रति कैसा होता?
9. अधिक ताकतवर होते हुए भी गूँगे ने वसंता पर हाथ क्यों नहीं उठाया?
10. 'गूँगा दया या सहानुभूति नहीं अधिकार चाहता था।'- सिद्ध कीजिए।
11. 'गूँगे में ममता है, अनुभूति है और है मनुष्यता'- विवेचना कीजिए।
12. कहानी का शीर्षक गूँगे है जबकि कहानी में एक ही गूँगा पात्र है। इसके माध्यम से लेखक ने समाज की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है?
13. आशय स्पष्ट कीजिए-

    (क) कैसी यातना है कि वह अपने हृदय को उगल देना चाहता है, किंतु उगल नहीं पाता।

    (ख) जैसे मंदिर की मूर्ति कोई उत्तर नहीं देती, वैसे ही उसने भी कुछ नहीं कहा।

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(1) करुणा ने सबको .... उगल नहीं पाता।

(2) वह लौटकर चूल्हे .... वसंता पर नहीं चलाया।

(3) किंतु वह क्षोभ .... अविश्वास हो रहा था।

(4) और ये गूँगे .... वे असमर्थ हैं।

पाठ-5 ज्योतिबा फुले

विधा - जीवनी

लेखिका - सुधा अरोड़ा

लेखिका की अन्य रचनाएँ-

कहानी संग्रह - बगैर तराशे हुए, युद्ध-विराम, महानगर की भौतिकी, काला शुक्रवार, काँसे का गिलास, औरत की कहानी (संपादित)

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य
2. उर्दू शब्दों से युक्त तत्सम प्रधान
3. प्रभावशाली एवं प्रवाहपूर्ण
4. भाषा शैली वर्णनात्मक, विचारप्रधान तथा उपदेशात्मक

स्मरणीय तथ्य-

लेखिका सुधा अरोड़ा जी ने ज्योतिबा फुले की जीवनी में ज्योतिबा फुले तथा उनकी पत्नी सावित्रीबाई के प्रेरक चरित्र को दर्शाया है। समाज के विरोध का सामना करते हुए भी उन्होंने दलितों, शोषितों एवं स्त्रियों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने समाज एवं शिक्षा सुधार के कार्य किए तथा समाज में फैली रूढ़ियों का विरोध किया।

शिक्षा एवम् सामाजिक सुधाार के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के बावजूद ज्योतिबा फुले का नाम भारत के सामाजिक विकास एवम् बदलाव आन्दोलन के पाँच समाज सुधारकों की सूची में शामिल नहीं है। इसका कारण यह है कि इस सूची को बनाने वाले उच्च वर्ण के प्रतिनिधि हैं तथा ज्योतिबा फुले ने स्वयं ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणवादी तथा पूंजीवादी मानसिकता का डटकर विरोध किया है।

ज्योतिबा फुले के अनुसार शासक एवं धर्म के ठेकेदार आपस में मिलीभगत कर सामाजिक व्यवस्था की मशीनरी का प्रयोग अपने हित में करते हैं। उनका कहना है कि स्त्रियों एवम् दलितों को इस शोषण-व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिए।

महात्मा ज्योतिबा फुले के विचार 'गुलामगिरी', 'शेतकर्यांचा आसूड' (किसानों का प्रतिशोध), 'सार्वजनिक सत्यधर्म आदि पुस्तकों में मिलते हैं। वे अपने समय से बहुत आगे की सोच रखते थे। उनके मतानुसार एक आदर्श परिवार वह है जिसमें पिता बौद्ध, माता ईसाई, बेटी मुसलमान तथा बेटा सत्यधर्मी हो। ज्योतिबा फुले के अनुसार यदि आधुनिक शिक्षा का लाभ विशेष वर्गों को नहीं मिलता है, तो ऐसी शिक्षा का कोई फायदा नहीं। गरीबों से कर एकत्रित कर उसे उच्चवर्ग की शिक्षा पर खर्च करना सर्वथा अनुचित है।

ज्योतिबा फुले के विचारानुसार पुरुषों ने स्त्री शिक्षा के द्वार इसलिए बंद कर रखे हैं ताकि वह अपने अधिकारों को न समझ पाएं तथा स्वतंत्रता की माँग न कर पाए।

ज्योतिबा स्त्री समानता के पक्षधर थे तथा उन्होंने स्त्री समानता प्रतिष्ठित करने वाली नई विवाह विधि की रचना की। उन्होंने विवाह-विधि से ब्राह्मणों का स्थान हटा दिया। नए विवाह मंत्र तैयार किए। ऐसे मंत्र जिन्हें वर-वधू आसानी से समझ सकें। स्त्री की गुलामगिरी सिद्ध करने वाले सारे मंत्र निकाल दिए। स्त्री-अधिकारों एवम् स्वतंत्रता के लिए ज्योतिबा फुले ने हर संभव प्रयास किए।

1888 में ज्योतिबा फुले ने यह कहकर 'महात्मा' की उपाधि लेने से इनकार कर दिया कि किसी उपाधि से सम्मानित होने के बाद व्यक्ति संघर्ष नहीं कर पाता।

कथनी और करनी में समानता ज्योतिबा फुले की विशेषता थी। स्त्री-शिक्षा के समर्थक ज्योतिबा फुले ने सर्वप्रथम अपनी पत्नी को शिक्षित किया। उन्हें मराठी तथा अंग्रेजी लिखना, पढ़ना तथा बोलना सिखाया।

सावित्रीबाई की बचपन से ही पढ़ने में रुचि थी। छः-सात साल की उम्र में एक बार वह शिखल गाँव के हाट गई। वहाँ एक लाट साहब ने इन्हें एक पुस्तक दी। इनके घर पहुँचते ही पिता ने गुस्से में उस पुस्तक को कूड़े में फेंक दिया। सावित्रीबाई ने वह पुस्तक उठाकर कोने में छुपा दी तथा उसे सहेजकर अपने साथ ससुराल ले आई और शिक्षित होने के पश्चात् वह पुस्तक पढ़ी।

भारत में पहली कन्या पाठशाला की स्थापना 14 जनवरी 1848 को पुणे में हुई। शूद्र तथा अतिशूद्र लड़कियों के लिए पाठशालाएँ खोलने के लिए ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई को बहुत-सी बाधाओं तथा बहिष्कारों का सामना करना पड़ा। ज्योतिबा के पिता ने पुरोहितों एवं रिश्तेदारों के दबाव में बेटे-बहू को घर से निकाल दिया। सावित्रीबाई को, पढ़ाने के लिए पाठशाला जाने से रोकने के लिए लोग उन्हें गालियाँ देते, उन पर थूकते, पत्थर मारते तथा गोबर उछालते थे। दोनों ने सभी प्रकार के विरोधों का डटकर सामना किया।

ज्योतिबा और सावित्रीबाई ने 1840-1890 तक पचास वर्षों तक कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। इन्होंने किसानों तथा अछूतों की झुग्गियों में जाकर उन्हें लड़कियों की शिक्षा के लिए प्रेरित किया। इन दोनों ने अनाथ तथा विधवाओं की सहायता की, नवजात शिशुओं की देखभाल की तथा निम्न जाति के लोगों की पानी की तकलीफ़ देखकर उनके लिए अपने घर के पानी के हौद खोल दिए थे। वास्तव में, ज्योतिबा फुले एवम् सावित्रीबाई का एक-दूसरे के लिए समर्पण आधुनिक दंपत्तियों

के लिए आदर्श दांपत्य जीवन की एक मिसाल है।

बौद्धिक प्रश्न-

1. ज्योतिबा फुले का नाम समाज सुधारकों की सूची में शुमार क्यों नहीं किया गया? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
2. स्त्री शिक्षा के बारे में ज्योतिबा फुले के क्या विचार थे?
3. ज्योतिबा फुले के मौलिक विचार कौन-2 सी पुस्तकों में संगृहित हैं?
4. ज्योतिबा फुले के अनुसार पुरुषों ने स्त्री-शिक्षा के दरवाजे क्यों बंद कर रखे हैं?
5. ज्योतिबा फुले ने किस प्रकार की मानसिकता पर प्रहार किया और क्यों?
6. ज्योतिबा फुले द्वारा प्रतिपादित आदर्श परिवार की अवधारणा क्या है?
7. सुधार कार्यों के दौरान फुले दंपत्ति को घर तथा समाज में किस प्रकार के विरोधों का सामना करना पड़ा?
8. ज्योतिबा फुले ने कौन-सी नई विवाह-विधि की रचना की और क्यों?
9. 'फुले दंपत्ति का जीवन आदर्श दांपत्य की एक मिसाल है।'- कैसे?
10. महात्मा की उपाधि से सम्मानित किए जाने पर ज्योतिबा फुले ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?
11. ज्योतिबा फुले के समाज सुधार के कार्यों में किस प्रकार सावित्रीबाई ने उनका साथ दिया?
12. आशय स्पष्ट कीजिए-

    (क) सच का सवेरा होते ही वेद डूब गए, विद्या शूद्रों के घर चली गई, भूदेव (ब्राह्मण) शरमा गए।

    (ख) इस शोषण-व्यवस्था के खिलाफ दलितों के अलावा स्त्रियों को भी आंदोलन करना चाहिए।

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(1) महात्मा ज्योतिबा फुले ने वर्ण .... आंदोलन करना चाहिए।

(2) स्वतंत्रता का अनुभव .... हर स्त्री की थी।

(3) मुझे महात्मा कहकर .... अलग न करें।

(4) मिशनरी महिलाओं की तरह .... हक में खड़े हुए।

पाठ-6 खानाबदोश

विधा - कहानी

कहानीकार- ओमप्रकाश वाल्मीकि

कहानीकार की अन्य रचनाएँ-

कविता संग्रह	-	सदियों का संताप, बस! बहुत हो चुका
कहानी संग्रह	-	सलाम, घुसपैठिये
आत्मकथा	-	जूठन

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. सहज, तथ्यपरक, आवेगमयी भाषा
2. भाषा में तद्भव और उर्दू शब्दावली का प्रयोग
3. चित्रात्मकता
4. शैली - विवरणात्मक, विचारात्मक एवं भावात्मक

स्मरणीय तथ्य-

इस कहानी में मेहनत मज़दूरी करके किसी तरह गुज़र-बसर कर रहे मज़दूर वर्ग के शोषण, यातना तथा समाज की जातिवादी मानसिकता का चित्रण किया गया है।

सुकिया और उसकी पत्नी कमाने-खाने की इच्छा से गाँव-देहात छोड़कर शहर आये थे। वे असगर ठेकेदार के भट्ठे पर ईंट पाथने का काम करते थे। भट्ठे पर मोरी का काम सबसे खतरनाक था। ईंटें पकाने के लिए कोयला, बुरादा, लकड़ी और गन्ने की बाली को मोरियों के अंदर डालना होता था। छोटी-सी असावधानी मौत का कारण बन सकती थी। भट्ठा मज़दूरों ने दड़बेनुमा छोटी-छोटी झोपड़ियाँ बना रखी थीं, इन झोपड़ियों में झुक कर जाना पड़ता था। संध्या के समय दिन-भर के थके-हारे मज़दूर रात को दड़बों में घुस जाते थे। साँप और बिच्छू का डर लगा रहता था तथा वातावरण में जंगल का सा सन्नाटा छा जाता था। मानो भट्टे के माहौल से तालमेल नहीं बिठा पाई थी, इसलिए खाना बनाते समय चूल्हे से आती चिट-पिट की आवाज़ों में उसे अपने मन की दुश्चिंताओं और आशंकाओं की आवाज़ें सुनाई देती थीं।

एक दिन भट्ठा मालिक मुख्तार सिंह कहीं बाहर चला गया तो उसका बेटा सुखदेव सिंह भट्ठे पर आने लगा। सुखदेव सिंह के भट्ठे पर आने से भट्ठे का माहौल बदल गया। ठेकेदार असगर उससे डरा-डरा रहने लगा। सुखदेव सिंह अपनी सेवा-टहल कराने के बहाने एक मज़दूर महेश की पत्नी किसनी का यौन-शोषण करने लगा। उसने किसनी को साबुन, कपड़े और ट्रांजिस्टर लाकर दिया। वह किसनी को शहर भी घुमाने ले जाने लगा। किसनी खुश थी, वह सूबेसिंह के साथ अधिक समय व्यतीत करने लगी थी। उसके रंग-ढंग में परिवर्तन आ गया था। उसका पति महेश शराब पीने लगा था। उसे देखकर मज़दूरों में फुसफुसाहट शुरू हो गई थी।

मानो और सुकिया खुश थे क्योंकि भट्ठे पर काम करते हुए उन्होंने कुछ पैसे बचाये थे। भट्ठे पर पकती लाल-लाल ईंटों को देखकर मानो खुश थी। वह ज्यादा काम करके, ज्यादा रुपये जोड़कर अपना एक पक्का मकान बनाने का सपना देखने लगी थी। एक दिन किसनी के अस्वस्थ होने पर सूबेसिंह ने ठेकेदार असगर के द्वारा मानो को अपने दफ्तर में बुलवाया। बुलावे की खबर सुनते ही मानो और सुकिया घबरा गये। वे सुखदेव की नीयत भांप गये। मानो इज्जत की जिंदगी जीना चाहती थी, वह किसनी बनना नहीं चाहती थी। उनकी घबराहट देखकर जसदेव मानों के स्थान पर स्वयं सूबेसिंह से मिलने चला गया। सूबेसिंह ने जसदेव को अपशब्द कहे और लात-घूँसों से पिटाई कर दी। सुकिया और मानो उसे झोंपड़ी में ले आये। जसदेव के इस अपनेपन के कारण मानो उसके लिए रोटी बना कर ले जाती लेकिन ब्राह्मण होने के कारण वह मानो की बनाई रोटी नहीं खाता। असगर ठेकेदार जसदेव को सुकिया और मानों के चक्कर में न पड़ने की सलाह देता है। जसदेव का व्यवहार मानो और सुकिया के प्रति बदलता चला जाता है। जसदेव की पिटाई से भट्ठा मज़दूरों में भय फैल जाता है।

सूबेसिंह की हिदायत पर असगर ठेकेदार सुकिया और मानो को तरह-तरह से परेशान करने लगा। उसने सुकिया से ईंट पाथने का साँचा ले लिया और मोरी का काम दे दिया। एक सुबह मानो ने अपनी ईंट पाथने की जगह पर सारी ईंटें टूटी हुई देखीं। वह दहाड़ मार कर रोने लगी। आवाज सुनकर सुकिया वहाँ आया तो टूटी ईंटें देखकर हक्का-बक्का रहा गया। असगर ठेकेदार ने टूटी ईंटों की मज़दूरी देने से साफ इंकार कर दिया।

सुकिया सारी बात समझ गया और मानो का हाथ पकड़ कर बोला कि- 'ये लोग हमारा घर नहीं बनने देंगे।' वे लोग भट्ठे को छोड़कर खानाबदोश की तरह किसी अनजाने स्थान की ओर चल पड़े।

बौद्धिक प्रश्न-

1. सुकिया और मानो भट्ठे पर क्या काम करते थे?
2. मोरी का काम खतरनाक क्यों था?
3. संध्या के समय भट्ठे का वातावरण कैसा हो जाता था?
4. सूबेसिंह के सम्पर्क में आने पर किसनी के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

5. किसनी और सूबेसिंह के संबंधों को देखकर मज़दूरों ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

6. सूबेसिंह ने जसदेव की पिटाई क्यों की?

7. जसदेव ने मानो का बनाया खाना क्यों नहीं खाया?

8. किसनी और सूबेसिंह तथा मानो और जसदेव के संबंधों द्वारा समाज की कौन-कौन सी समस्याएँ चित्रित की गई हैं?

9. सूबेसिंह ने मानो और सुकिया को किस-किस तरह से परेशान किया?

10. आपके विचार से मानो द्वारा बनाई ईंटें किसने और क्यों तोड़ी?

11. मानो और सुकिया ने क्या सपना देखा था? यह सपना कैसे टूट गया?

12. 'खानाबदोश' कहानी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए?

13. 'खानाबदोश' कहानी की मूल-संवेदना अथवा भाव पर प्रकाश डालो।

14. 'ईंटों को जोड़कर बनाए चूल्हे में जलती लकड़ियों की चिट-पिट जैसे मन में पसरी दुश्चिंताओं और तकलीफों की प्रतिध्वनियाँ थीं जहाँ सब कुछ अनिश्चित था।' यह वाक्य मानो की किस मनोस्थिति को उजागर करता है?

15. 'सुकिया ने मानो की आँखों से बहते तेज अँधड़ों को देखा और उसकी किरकिराहट अपने अंतर्मन में महसूस की। सपनों के टूट जाने की आवाज़ उसके कानों को फाड़ रही थी।' प्रस्तुत पंक्तियों का आशय स्पष्ट करो।

16. मानो किसनी क्यों नहीं बनना चाहती थी?

17. आशय स्पष्ट कीजिए-

    (क) अपने देस की सूखी रोटी भी परदेस के पकवानों से अच्छी होती है।

    (ख) फिर तुम तो दिन-रात साथ काम करते हो.... मेरी खातिर पिटे...... फिर यह बामन म्हारे बीच कहाँ से आ गया।

    (ग) सपनों के काँच उसकी आँख में किरकिरा रहे थे।

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(1) भट्ठे का काम खत्म .... पकवानों से अच्छी होती है।

(2) समूचा दिन अदृश्य .... कितनी ईंटें लग जाती हैं।

(3) कड़ी मेहनत और दिन रात .... कितनी ईंटें लग जाती है।

(4) सुकिया के पीछे-पीछे .... एक दिशाहीन यात्रा पर।

(5) भट्ठे से उठते काले .... एक पड़ाव था यह भट्ठा।

पाठ-7 नए की जन्म कुंडली : एक

विधा - विचारप्रधान निबंध 'एक साहित्यिक की डायरी' का एक अंश

निबंधकार - गजानन माधव मुक्तिबोध

निबंधकार की अन्य रचनाएँ-

काव्य संग्रह - चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरि-भूरि खाक धूल

आलोचनात्मक कृतियाँ - नए साहित्य का सौंदर्य-शास्त्र, कामायनी : एक पुनर्विचार, एक साहित्यिक की डायरी, मुक्तिबोध रचनावली

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. तत्सम प्रधान शब्दावली
2. चिंतन प्रधान शैली
3. तर्कशीलता
4. चित्रात्मकता

स्मरणीय तथ्य-

'नए की जन्म कुण्डली : एक' एक विचारात्मक निबंध है। लेखक ने सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और साहित्यिक परिवर्तन के फलस्वरूप वैज्ञानिक-मानसिक चेतना को ही 'नया' माना है। कई बार पुराने को तो छोड़ दिया जाता है परन्तु 'नये' को वास्तविक रूप में नहीं अपनाया जाता। लेखक ने वर्तमान युग में समाज में आने वाले परिवर्तन को 'नये' का नाम दिया है।

लेखक अपने मित्र को अत्यंत बुद्धिमान समझता है। वह उसकी विश्लेषण एवं तार्किक क्षमता से अत्यंत प्रभावित है। उसकी बुद्धि सुनार की चिमटी जैसी है जो बारीक से बारीक बात को भी पकड़ लेती है। लेखक उसे प्रतिभाशाली बताता है।

लेखक अपने मित्र के सौंदर्य से भी अभिभूत है। उसके माथे की लकीरों के सौंदर्य की समता मर्मवचन लिखे हुए कागज से करता है। वह कहता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में सौंदर्य का महत्व तो है, पर उसमें रहस्य भी बना रहना चाहिए तभी वह प्रभावशाली बनता है।

बारह वर्षों बाद लेखक की उससे मुलाकात होती है, तब भी वह उसके आकर्षण में कोई कमी नहीं पाता। लेकिन लेखक को अपने और अपने मित्र के व्यवहार और रुचियों में अंतर दिखाई देता है जैसे- उसका मित्र शैले की 'ओड टु वैस्ट विंड' अर्थात् काव्य और वह 'स्क्वेयर रूट और माइनस वन' अर्थात् गणित नहीं समझ पाता। लेखक भावुक है और उसका मित्र तर्कशील एवं बुद्धिवादी। उसका मित्र जिद्दी भी है, वह राजनीति अपना लेता है और साहित्यिक रचनाएँ भी करता है। लेखक को चित्रकला, नृत्यकला और मानव-वंश शास्त्र की जानकारी है। आदतों और व्यवहार के अंतर को लेखक दो ध्रुवों का भेद मानने लगा। लेखक अपने मित्र के विषय में बताता है कि वह कविता लिखते समय अपने को प्रकट करता है तथा सभी इंद्रियों से काम लेते हुए एक आंतरिक यात्रा करता है, इसलिए लेखक कविता को भारतीय परंपरा का विचित्र परिणाम कहता है।

सांसारिक समझौते न करने की आदत ने मित्र के व्यक्तित्व को असामान्य बना दिया। लेखक उसे सामान्य मानता है जो अपने भीतर के असामान्य के उग्र आदेशों को न मानने की सामर्थ्य रखता हो। उसका मित्र जब भी उसके भीतर के असामान्य को उकसा देता था तब वह उसके सामने स्वयं को हीन समझने लगता था। लेखक की सोचने, समझने और कार्य करने की अपनी शैली थी। वह अपने कार्यों से लोगों को प्रसन्न रखता था, इसके लिए वह अनचाहे समझौते भी कर लेता था। उसने अपना स्वाभिमान त्याग दिया था। लेखक अपनी सहजता से सफल, प्रसिद्ध एवं भद्र कहलाया। यह उसकी व्यावहारिक बुद्धि का परिणाम था। उसका मित्र किसी भी कार्य को इसलिए करता था, क्योंकि उसने यह कार्य ढंग से करना है। इसके लिए वह अपना सब कुछ कुर्बान कर सकता था। वह समझौतावादी नहीं था। उसमें क्रूरता तथा निर्दयता थी। इसलिये वह असफल, नामहीन और आकारहीन रह गया।

लेखक को लगता है कि उसका मित्र एक उल्का-पिंड की तरह है जो सूर्य के पास चक्कर लगाते हुए ब्रह्मांड में भटक गया है। उसका मित्र अपनी जिन्दगी को भूल का एक नक्शा कहता है। वह छोटी-छोटी सफलताएँ चाहता था, पर उसे एक भव्य असफलता मिली। वह राजनीति में टिक नहीं पाया, क्योंकि वह आजीवन सिद्धांतों पर चलता रहा और स्वयं को बदलते सामाजिक मूल्यों के अनुरूप नहीं ढाल सका।

एक बार चाँदनी रात में पेड़ के नीचे लेखक चुपचाप उसकी बातें सुन रहा था। लेखक ने पूछा कि पिछले बीस वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण घटना क्या है तो उसने कहा- संयुक्त परिवारों का विघटन। परिवार का अर्थ अब पति, पत्नी और दो बच्चे हो गया है। अमीर बनने की होड़ में सभी संबंध गौण हो गए हैं तथा पैसा प्रधान हो गया है। भौतिकता का प्रसार हो गया है। लेखक को उसका कथन सही लगा कि जिंदगी और जमाना बदलता जा रहा है। लेखक ने पूछा - 'इन वर्षों में सबसे बड़ी भूल कौन सी हुई है? उसने उत्तर दिया- राजनीति और साहित्य के पास समाज-सुधार का कोई कार्यक्रम न होना। राजनीति को जन-कल्याण से भी कुछ भी लेना-देना नहीं है। राजनीति में लोग स्वार्थ-सिद्धि के लिए आते हैं। इसलिए स्वतंत्रता के बाद गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी समाप्त नहीं हुई है। आजादी के बाद जातिवाद का उदय इसी का दुष्परिणाम है। सर्वत्र अवसरवादी दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। कोई नया नहीं खोजना चाहता। पुराना लौट कर नहीं आ सका और नया पुराने का स्थान नहीं ले सका। मनुष्य की दशा उस बुलबुल जैसी है जो उल्लू बनना चाहती है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति अच्छाई

त्याग कर बुराई की ओर अग्रसर हो रहा है। कथनी और करनी में अंतर आ गया है। घर के बाहर अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने, संघर्ष करने की बातें की जाती हैं परन्तु अपने-पराये का भेद सामने आने पर चुप हो जाते हैं।

धर्म भावना चली गई किन्तु वैज्ञानिक बुद्धि नहीं आई। नए मान, मूल्य, इंसान परिभाषाहीन तथा आकारहीन हो गये। वे धर्म और दर्शन का स्थान नहीं ले सके।

बौद्धिक प्रश्न-

1. लेखक ने अपने मित्र की विश्लेषण क्षमता की समता किस वस्तु से की है?
2. वह अपने मित्र की कौन-सी विशेषताओं से प्रभावित है?
3. लेखक और उसके मित्र के व्यवहार और रुचियों को क्या-क्या अंतर है?
4. सामान्य- असामान्य तथा साधारण-असाधारण के अंतर को लेखक के माध्यम से स्पष्ट करो।
5. लेखक ने कविता को भारतीय परंपरा का विचित्र परिणाम क्यों कहा है?
6. वर्षों बाद मित्र से मिलने पर लेखक को उसका व्यक्तित्व कैसा लगा?
7. लेखक के मित्र ने 'इन वर्षों की सबसे बड़ी भूल' किसे माना है और क्यों?
8. सांसारिक समझौते से लेखक का क्या आशय है?
9. लेखक ने व्यावहारिक बुद्धि किसे माना है?
10. लेखक के मित्र ने यह क्यों कहा कि उसकी पूरी जिंदगी भूल का एक नक्शा है?
11. लेखक ने शैले की 'ओड टु वैस्ट विंड' और 'स्क्वेयर रूट ऑफ माइनस वन' का प्रयोग किस संदर्भ में किया है और क्यों?
12. पिछले बीस वर्षो की सबसे महान घटना कौन-सी है और क्यों?
13. लेखक के अनुसार नए और पुराने के अंतर्द्वंद्व को अपने शब्दों में स्पष्ट करो।
14. 'सौंदर्य में रहस्य न हो तसे वह एक खूबसूरत चौखटा है।' व्यक्ति के व्यक्तित्व के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
17. आशय स्पष्ट कीजिए-
    (क) सांसारिक समझौते से ज्यादा विनाशक कोई चीज नहीं।
    (ख) जो पुराना है वह लौट कर नहीं आ सकता।

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(1) वह अपने विचारों .... पकड़ कर सामने रख देती है।

(2) इस भीषण संघर्ष .... वह असामान्य था।

(3) चारों ओर चाँदनी की .... परिवर्तन की प्रक्रिया को नहीं।

(4) लड़के बाहर राजनीति .... घर के बाहर दी गई

(5) इसलिये पुराने सामंती .... परिवारों की बात कर रहा हूँ।

(6) नए जीवन, नए मान-मूल्य...................................... स्थान न ले सके।

(7) लेकिन मेरी गति .... स्वीकार न कर पाता।

पाठ-8 उसकी माँ

विधा - कहानी

कहानीकार- पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

कहानीकार की मुख्य रचनाएँ-

कहानियाँ	-	पंजाब की महारानी, रेशमी, पोली इमारत, चित्र-विचित्र, कंचन-सी काया, काल-कोठरी
उपन्यास	-	चंद हसीनों के खतूत, बुधुआ की बेटी, दिल्ली का दलाल, मनुष्यानंद

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. भाषा सहज, सरल एवं भावपूर्ण
2. ओजपूर्ण, व्यंग्यपरक एवं उद्बोधनात्मक शैली
3. अलंकृत और व्यावहारिक भाषा प्रयोग

स्मरणीय तथ्य-

इस कहानी में देश की दुरवस्था से चिंतित युवा-पीढ़ी के विद्रोह को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस अवस्था के लिए युवा पीढ़ी शासन तंत्र को दोषी मानती है और उसे उखाड़ फेंकना चाहती है। नयी पीढ़ी विद्रोह के स्वर लिए राजसत्ता के विरोध में खड़ी है, वहीं पूर्ववर्ती बुद्धिजीवी समाज अपनी सुविधा के लिए राजसत्ता के तलवे चाटने को तैयार है। इन दोनों के बीच में है एक माँ जो लाख कोशिशों के बावजूद व्यवस्था की चक्की से अपने बेटे को नहीं बचा पाती। इस कहानी में ममतामयी माँ का सजीव चित्रण हुआ है।

यह कहानी स्वाधीनता-संग्राम से प्रेरित कहानी है। लेखक ने देश को आज़ाद कराने के लिए कुछ युवकों द्वारा दिए गए बलिदान का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। एक दिन दोपहर के समय लेखक आराम करने के बाद कुछ पढ़ने के विचार से पुस्तकालय जाता है तभी शहर का पुलिस सुपरिटेंडेंट उससे मिलने आता है। उसके अचानक आने से लेखक घबरा जाता है। पुलिस सुपरिटेंडेंट उसे लाल की फोटो दिखा कर, लाल के विषय में पूछताछ करता है। लेखक बताता है कि वह उसके मैनेजर

रामनाथ का पुत्र है और रामनाथ की मृत्यु हो चुकी है। लाल कॉलेज में पढ़ता है और अपनी बूढ़ी माँ के साथ एक दो मंजिले मकान में रहता है। उनका खर्च लेखक के पास रखी उसके पिता की जमापूँजी से चलता है। पुलिस सुपरिटेंडेंट लेखक को लाल से सावधान रहने को कह कर चला जाता है।

लेखक लाल की माँ को बताता है कि वह लाल को समझा दे कि लाल क्रांतिकारियों से दूर रहे अन्यथा उसे दंड भोगना पड़ेगा। तभी लाल अपनी माँ को बुलाने आता है तो लेखक उसे समझाने की कोशिश करता है कि वह ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र करना छोड़ दे। लाल उसके साथ तर्क-वितर्क करता है। वह कहता है कि वह देश को पराधीन नहीं देख सकता और देश को स्वतंत्र कराने के लिए कुछ भी कर सकता है।

एक दिन लेखक घर आता है तो अपनी पत्नी को लाल की माँ से बात करते देखता है। वह लाल की माँ से लाल के मित्रों के विषय में पूछता है। वह बताती है कि लाल के सभी मित्र मस्त एवं हँसोड़ तथा जिंदादिल है। वे सभी उसे भारतमाता कहते हैं और खूब बहस करते हैं। लेखक ने पूछा कि क्या वे लड़ने-झगड़ने, गोली, बंदूक की बातें करते हैं तो वह सरलता से कहती है कि उनकी बातों का कोई मतलब थोड़े ही होता है।

एक दिन चार-पाँच दिन बाहर रहने के बाद लेखक घर आता है तो लाल के घर में उसे सन्नाटा-सा दिखाई देता है। उसकी पत्नी उदास मुख से उसे बताती हैं कि लाल की माँ पर भयंकर विपत्ति आ गई है। पुलिस ने उसके घर की तलाशी में पिस्तौलें, कारतूस और कुछ पत्र ढूँढ निकाले थे। उन पर हत्या, षड्यंत्र और सरकारी राज्य उलटने के आरोप लगाए गए और उन पर मुकदमा चलाया गया। सरकार के डर से कोई वकील उनकी पैरवी के लिए नहीं आया। मुकदमा लगभग एक वर्ष तक चला। लाल की माँ ने घर का सामान बेचकर एक-एक वकील को उनकी पैरवी के लिए तैयार किया। वह लाल और उसके साथियों को दोषी नहीं मानती थी। वह समझती थी कि यह पुलिस की चालबाजी है। वह उसे बचाने को निरंतर दौड़धूप करती रही। इस कारण उसका शरीर अत्यंत कमजोर हो गया था, किन्तु उसके सारे प्रयत्न एकदम व्यर्थ हो गए। अदालत ने लाल, बंगड़ और उसके दो साथियों को फाँसी तथा अन्य दस लड़कों को सात वर्ष की कड़ी सज़ा सुनाई।

जब से लाल और उसके साथी पकड़े गए थे, तब से शहर या मुहल्ले के सभी आदमी लाल की माँ से मिलने से डरते थे, क्योंकि वह एक विद्रोही की माँ थी। एक दिन लेखक अपने पुस्तकालय में मेज़िनी की कोई पुस्तक देख रहा था, जिस पर लाल के हस्ताक्षर थे। वह पुलिस सुपरिटेंडेंट की चेतावनी को याद कर रबर से उसे मिटाने ही वाला था कि लाल की माँ एक पत्र लेकर उसके पास आई। वह लाल का पत्र पढ़कर सुनाता है। पत्र में लाल ने स्वयं और अपने साथियों के साथ मृत्यु के बाद माँ से मिलने की बात की थी। लाल की माँ पत्र लेकर चुपचाप चली जाती है, किंतु लेखक बेचैन हो जाता है। वह सो नहीं पाता। उसे लगता है कि लाल की माँ कराह रही है। वह लाल की माँ की खोज-खबर लेने के लिए नौकर को भेजता है। नौकर आकर बताता है कि वह हाथ में पत्र लिए घर के दरवाजे पर पाँव पसारे मृत पड़ी है।

बौद्धिक प्रश्न-

1. लेखक का लाल और उसकी पत्नी से क्या संबंध है?
2. पुलिस सुपरिटेंडेंट लेखक के घर क्यों आया? उसके अचानक आने से लेखक पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
3. पुलिस सुपरिटेंडेंट ने लेखक को लाल से सावधान रहने का सुझाव क्यों दिया?
4. पिता की मृत्यु के उपरान्त लाल और उसकी माँ का खर्च कैसे चलता था?
5. लेखक के समझाने पर लाल ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?
6. इस कहानी में अंग्रेज सरकार को धर्मात्मा, विवेकी और न्यायी सरकार क्यों कहा गया है?
7. क्या लाल का व्यवहार सरकार के प्रति षड्यंत्रकारी था?
8. लाल के साथियों ने ऐसा क्यों कहा- 'धीरे-धीरे जोंक की तरह हमारे देश का धर्म, प्राण और धन चूसती चली जा रही है यह शासन-प्रणाली।'- आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?
9. पुलिस द्वारा लाल के घर की तलाशी में क्या-क्या आपत्तिजनक सामग्री मिली?
10. पुलिस ने लाल पर क्या-क्या आरोप लगाए?
11. कोई भी वकील लाल की पैरवी करने के लिए तैयार क्यों नहीं हुआ?
12. 'विद्रोही की माँ से संबंध रखकर कौन अपनी गरदन मुसीबत में डालता?' इस कथन के आधार पर शासन तंत्र और समाज-व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।
13. लाल और उसके साथियों ने कैसे सिद्ध किया कि जानकी माँ नहीं भारतमाता है? कहानी के आधार पर जानकी का चरित्र-चित्रण कीजिए।
14. लाल के पकड़े जाने पर लेखक ने जानकी से दूरियाँ क्यों बढ़ा ली?
15. लेखक जानकी और लाल के प्रति सहानुभूति तो रखता है, किन्तु वह डरता है? यह डर किस प्रकार का है और क्यों?
16. लाल और उसके साथी आपस में क्या बातें किया करते थे?
17. लाल ने अपनी माँ को पत्र में क्या लिखा?
18. पूरी कहानी में जानकी न तो शासन-तंत्र के समर्थन में है और न विरोध में, किंतु लेखक ने उसे केन्द्र में ही नहीं रखा बल्कि कहानी का शीर्षक बना दिया। क्यों?
19. इस कहानी में दो तरह की मानसिकताओं का संघर्ष है, एक का प्रतिनिधित्व लाल करता है और दूसरे का उसका चाचा। आपकी नज़र में कौन सही है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(1) इस पराधीनता के विवाद .... कहीं छोड़ सकता।

(2) पुलिस वाले केवल संदेह .... घुलाना-मिटाना है।

(3) लोग ज्ञान न पा .... यह शासन-प्रणाली।

(4) तू भी जल्द वहीं .... वहाँ बड़ा आनंद है।

(5) जिस दिन तुम्हें यह .... दूर खींच सकता है।

पाठ-9 भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?

विधा - निबंध (बलिया के ददरी मेले में दिया गया भाषण)

लेखक - भारतेन्दु हरिश्चंद्र

लेखक की मुख्य रचनाएँ-

नाटक	-	वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, श्री चंद्रावली, भारत-दुर्दशा, नील देवी, अंधेर-नगरी
काव्य	-	प्रेम-फुलवारी, प्रेम-माधुरी, प्रेम-मालिका

भाषा -शैलीगत विशेषताएँ-

1. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग
2. बोलचाल के देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग
3. मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग

स्मरणीय तथ्य-

'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' निबंध लेखक द्वारा दिया गया भाषण है, जो उसने बलिया के एक मेले में दिया था। इसमें लेखक ने तत्कालीन भारतवासियों की कमियों की ओर संकेत करते हुए उन्नति के कुछ उपाय सुझाए हैं।

लेखक ने हिंदुस्तानी लोगों को रेल की गाड़ी बताया है। उन्हें इंजन बनना नहीं आता अर्थात् हिंदुस्तानी स्वयं कुछ करना नहीं चाहते। उन्हें उनका बल याद दिलाने की जरूरत होती है। राजे-महाराजे मौज-मस्ती में डूबे रहते हैं और अंग्रेज अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहते। विद्या और नीति फैलाने की जिम्मेदारी जिन लोगों पर है, उन्हें निकम्मेपन ने घेरा हुआ है।

हिंदुस्तानियों के पूर्वजों ने जंगल में रहकर बिना खर्च के तारा-ग्रह आदि वेध करके उनकी गति को लिख दिया था, जबकि विदेशियों ने सोलह लाख खर्च करके दूरबीन बनाई। अंग्रेज, फ्रांसीसी, अमेरिकन तेज गति से तरक्की कर रहे हैं। केवल हिंदुस्तानी सब सामान होते हुए भी आलस्य और संकोच के कारण पिछड़े हुए हैं और कहते हैं कि उन्हें पेट के धंधे से फुर्सत नहीं है।

इंग्लैंड में कोचवान भी समय निकाल कर अखबार पढ़ लेते हैं और तरक्की के नये-नये उपाय खोज लेते हैं। भारत के लोगों में तो निकम्मापन बढ़ता जा रहा है। काम न करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। चारों ओर दरिद्रता ही दरिद्रता है। लोगों को इज्जत बचाना कठिन हो रहा है। देश की जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है, पर धन घटता चला जा रहा है।

लेखक अपने भाषण में कहता है कि हिंदुस्तानियों को अपनी उन्नति के प्रयास करने होंगे। अपनी खराबियों के कारण खोजने होंगे। रास्ते के काँटों को हटाना होगा। सभी प्रकार के चोरों को पकड़ कर कैद करना होगा। लोक निंदा से डरने की आवश्यकता नहीं है। इस कार्य से कुछ लोगों को तकलीफ़ तो होगी किंतु देश की दशा भी तभी सुधरेगी।

लेखक उन्नति के उपाय बताते हुए कहता है कि पहले धर्म की उन्नति करनी होगी। अंग्रेजों की धर्मनीति और राजनीति आपस में मिली हुई है तभी उन्होंने तरक्की की है। लेखक कहता है कि जो लोग आपस में कभी नहीं मिलते वे मेले में एकत्र होकर मिलते हैं। इसलिए गंगा स्नान का भी महत्व है। मास में एक-दो दिन उपवास रखने से शरीर शुद्ध हो जाता है। दीवाली में साल में एक बार घर की सफाई हो जाती है। होली पर वसंत की बिगड़ी हवा जगह-जगह अग्नि जलने से स्वच्छ हो जाती है। वास्तविक धर्म तो ईश्वर का भजन है। जो समाज धर्म है उसे समयानुसार सुधारा और बदला जा सकता है। जो बातें देश और काल के अनुसार अनुकूल और उपकारी हैं, उन्हें अपना लेना चाहिए।

लेखक का मानना है कि लड़कों का विवाह छोटी आयु में नहीं करना चाहिए, पहले उन्हें अपना शरीर पुष्ट बनाना चाहिए और शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए फिर विवाह करना चाहिए। लड़कियों को भी पढ़ाना चाहिए। सभी धर्मों और जातियों के लोग आपस में एक-दूसरे का आदर करें। मुसलमान भाइयों को लेखक सलाह देता है कि वे हिंदुस्तान में रहकर हिंदुओं को नीचा न समझें। उन्हें उनका दिल दु:खाने वाली बातें नहीं करनी चाहिए। कुछ बातें उन्हें हिंदुओं से अलग हट कर प्राप्त हैं जैसे- उनमें जाति नहीं है, विलायत जाने पर रोक नहीं है, फिर भी वे अपनी दशा नहीं सुधारते। उन्हें अपने लड़कों को बुरी पुस्तकें जैसे मीर हसन की 'मसनवी' तथा 'इंदरसभा' पढ़ने से रोकना चाहिए। वे उन्हें फैशन से बचाएँ, अच्छी तालीम दें, रोजगार सिखाएँ और मेहनत करने की आदत डालें।

हिंदुओं को भी मतभेद भुला कर रंग, जाति, वर्ण-भेद छोड़ कर एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए। दियासलाई जैसी छोटी वस्तु और कपड़े विदेश से न मंगा कर अपने देश की वस्तुएँ खरीदें। विदेशी कपड़े पहन कर ऐसा लगता है कि माँग कर पहने हों। केवल मूँछें ही घर की प्रतीत होती हैं। परदेशी वस्तु और भाषा पर भरोसा नहीं करना चाहिए। अपनी भाषा की उन्नति आवश्यक है।

बौद्धिक प्रश्न-

1. लेखक ने भारतवासियों पर क्या व्यंग्य किया है?
2. हाकिमों के चित्रण में लेखक ने क्या कहा है?
3. लेखक के अनुसार किन लोगों को निकम्मेपन ने घेर रखा है?

4. भारत के पिछड़ जाने, तरक्की न करने का लेखक ने क्या कारण बताया है?
5. 'जहाँ रॉबर्ट साहब बहादुर जैसे कलक्टर हों, वहाँ क्यों न ऐसा समाज हो' वाक्य में लेखक ने किस प्रकार के समाज की कल्पना की है?
6. 'जिस प्रकार ट्रेन बिना इंजन के नहीं चल सकती, ठीक उसी प्रकार हिंदुस्तानी लोगों को कोई चलाने वाला हो' से लेखक ने अपने देश की खराबियों के मूल कारण खोजने के लिए क्यों कहा है?
7. लेखक के अनुसार सब उन्नतियों का मूल क्या है और क्यों?
8. लोगों ने धर्म के बारे में क्या खराबी की?
9. लड़के और लड़कियों के बारे में लेखक ने क्या सलाह दी है?
10. देश में सब प्रकार की उन्नति हो, इसके लिए लेखक ने क्या-क्या उपाय बताए हैं?
11. ऐसी कौन-सी बातें है जो समाज विरुद्ध मानी जाती हैं, किंतु धर्मशास्त्रों में उनका विधान है?
12. मुसलमान भाइयों को लेखक ने क्या सलाह दी है?
13. उस समय हिंदुस्तानियों की दशा कैसी थी?
14. लेखक जनता से मत-मतांतर छोड़ कर आपसी प्रेम बढ़ाने का आग्रह क्यों करता है?
15. देश में रुपया और बुद्धि बढ़ाने के लिए क्या उपाय बताये गये हैं?
16. 'अपने देश की भाषा में उन्नति करो' से लेखक का क्या तात्पर्य है? वर्तमान संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
17. आपके विचार से देश की उन्नति किस प्रकार संभव है?

व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-

(1) हमारे हिंदुस्तानी लोग .... अनमोल समय खोवें।

(2) पहले भी जब आर्य .... कतवार फेंकने की गाड़ी बन रहे हैं।

(3) पहले तो मनुष्य जन्म .... फिर कमबख्ती है।

(4) किसी देश में भी सभी .... अमीर समझा जाता है।

(5) जो लोग अपने को देश हितैषी .... देश भी न सुधरेगा।

(6) सास के अनुमोदन से .... परदेस चला जाएगा।

(7) दरिद्र कुटुंबी इस तरह .... दशा हिंदुस्तान की है।

(8) वास्तविक धर्म तो .... शोधे और बदले जा सकते हैं।

अन्तरा भाग-1

काव्य-खण्ड

छात्र निर्देश :

पाठ्य पुस्तक का काव्य खण्ड 20 अंक का है।

सप्रंसग व्याख्या (एक) -	8 अंक
काव्य पर आधारित प्रश्न (दो)-	6 अंक (3+3)
काव्य सौंदर्य आधारित प्रश्न (दो) -	6 अंक (3+3)

क) व्याख्या का उत्तर तीन उपशीर्षकों में देना अनिवार्य है :-

1. प्रसंग, 2. व्याख्या, 3. शिल्प सौन्दर्य

1. **प्रसंग**- इसके अन्तर्गत कवि और कविता का नाम अनिवार्य रूप से दें। पाठ्यपुस्तक का नाम न लिखें। एक पंक्ति में काव्य का पूर्वापर प्रसंग लिखें।
2. **व्याख्या**- काव्य पंक्तियों को समझने के उपरान्त अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करें। कविता की व्याख्या कवि के मत एवं भावानुसार करें, अपना मत न प्रस्तुत करें।
3. **शिल्प सौन्दर्य**- इसमें भाषा, रस, छन्द, अलंकार आदि का निरूपण करें।

ख) काव्य सौन्दर्य - इसे केवल दो उपशीर्षकों में विभक्त करें।

1. **भाव सौन्दर्य**- इसके अन्तर्गत एक या दो पंक्तियों में मात्र भाव स्पष्टीकरण करें।
2. **शिल्प सौन्दर्य**- इसमें कवि की भाषिक विशेषता, विशिष्ट प्रयोग, रस, छन्द, अलंकार आदि का निरूपण, लय, चित्रात्मकता, बिम्ब योजना आदि को स्पष्ट करें।

व्याख्या एवं काव्य सौन्दर्य का अंतर स्पष्ट करने के लिए एक ही काव्यांश को उदाहरण स्वरूप दिया गया है :-

''झहरि - झहरि झीनी .... आँसु ह्वै दृगन में।।''

प्रसंग– प्रस्तुत पद्य 'सपना' से लिया गया है। इसके रचयिता रीतिकालीन कवि देव हैं। इसमें कवि ने श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्षों का चित्रण एक साथ किया है।

व्याख्या– गोपी नींद में स्वप्न देख रही है। आकाश में काले बादल घिरे हुए हैं। वर्षा हो रही है। इस मनभावन वातावरण में कृष्ण उसे अपने साथ झूला झूलने के लिए कह रहे हैं। यह सुनकर वह अत्यधिक प्रसन्न हो जाती है। वह कृष्ण के साथ जाने के लिए उठने ही लगती है कि उसकी नींद टूट जाती है। नींद टूट जाने पर श्री कृष्ण के सान्निध्य का स्वप्न भंग हो जाता है। वह अपने इस स्वप्न भंग से दुखी होती है। जागृत अवस्था में कृष्ण का न होना उसके लिए कष्टदायक है।

वह कहती है कि मेरे जागने से मेरा भाग्य सो गया अर्थात् कृष्ण का साथ छूट गया। नींद टूटने पर उसे ज्ञात होता है कि वहाँ न बादल हैं और न ही कृष्ण। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि वर्षा की बूँदें आँसू बन कर उसकी आँखों में आ गई हैं।

शिल्प सौन्दर्य– कवि ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

संयोग, वियोग श्रृंगार रस है। श्रृंगार के दोनों पक्षों को एक साथ दर्शाया है।

कोमलकांत पदावली का प्रयोग किया है।

चित्रात्मकता, तुकात्मकता है।

गेयता का गुण विद्‌यमान है।

पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण अलंकारों का सहज प्रयोग किया गया है।

अनुप्रास	–	'निगोड़ी नींद', 'झहरि–झीनी'
पुनरूक्ति प्रकाश	–	'झहरि – झहरि', 'घहरि – घहरि'
मुहावरा	–	'फूला न समाना'
उत्प्रेक्षा	–	' झहरि–झहरि झीनी बूँद परति मानो घहरि – घहरि घटा घेरी है गगन में'
मानवीकरण	–	' सोए गए भाग मेरे'

काव्य सौन्दर्य

''झहरि-झहरि झीनी .... दृगन में।''

भाव सौन्दर्य

प्रस्तुत पंक्तियों में श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्ष का चित्रण निद्रा में स्वप्न और स्वप्न-भंग के माध्यम से दर्शाया है। कृष्ण के प्रति गोपी की प्रेम भावना को व्यक्त किया है।

शिल्प सौन्दर्य -

भाषा - ब्रज

रस - श्रृंगार

गुण - माधुर्य, चित्रात्मकता, लय एवं तुकात्मकता।

अलंकार - उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अनुप्रास।

कवि परिचय

कवि परिचय का प्रश्न 5 अंक का है।

इसको तीन उपशीर्षकों में देना अनिवार्य है:-

(1) किस काल के कवि हैं तथा जीवन परिचय

(2) रचनाएँ

(3) काव्यगत विशेषताएँ

पाठ-1 कबीर

कबीर के पद

कवि - कबीर (भक्तिकालीन निर्गुण काव्य धारा के संत कवि)

रचनाएँ - बीजक, साखी, सबद, रमैनी। कबीर की कुछेक रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहब में संकलित हैं।

काव्यगत विशेषताएँ-

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है। जन भाषा की सहजता में गूढ़ दार्शनिक चिंतन की अभिव्यक्ति है।

कबीर के काव्य में तुकात्मकता और लय के कारण गेय तत्व हैं (कबीर के सभी पद गाए जा सकते हैं।)

अपनी बात को स्पष्ट करने हेतु दृष्टांत एवं साक्ष्य का प्रयोग किया है।

कबीर के काव्य में अलंकरण सायास न होकर अनायास है। भावपूर्ण अभिव्यक्ति कबीर के काव्य का, उनकी रचनाओं का आन्तरिक गुण है।

पद-1

''अरे इन दोहुन राह न पाई .... राह ह्वै जाई।।''

मूल भाव - प्रस्तुत पद में कबीर ने धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया है। इन बाह्य क्रिया-कलापों में उलझे रहने के कारण दोनों (हिन्दू और मुसलमान) ईश्वर प्राप्ति की राह से भटक गए हैं।

स्मरणीय तथ्य- हिन्दू और मुसलमान के धार्मिक आडम्बरों का विरोध करते हुए उन पर प्रहार किया है।

बाह्य आडम्बरों के कारण ईश्वर प्राप्ति के मार्ग से भटक जाते हैं। ईश्वर तक पहुँच नहीं पाते, उन्हें अपनी राह नहीं मिलती। दोनों ही अपने धार्मिक कर्म काण्ड को श्रेष्ठ मानकर दूसरे को गलत मानते हैं।

कबीर हिन्दुओं के बारे में बताते हैं कि किस प्रकार वे लोग वर्ण भेद करते हैं तथा निम्न जाति को अपने पानी के बर्तन का स्पर्श तक नहीं करने देते ऐसे वे स्वयं को उच्च वर्ण का सिद्ध करते हैं। दूसरी ओर वे हीन कर्मो में प्रवृत्त हैं।

मुसलमानों की दशा भी समान है। एक ओर तो वे ईश्वर प्राप्ति में संत, फकीर, पीर, औलिया बन जाते हैं अर्थात् सांसारिक मोह माया से परे हैं तो दूसरी ओर सामिष हैं। जीव हत्या करते हैं। अपनी बहन से विवाह कर लेते हैं जो कि हिन्दू धर्मानुसार सर्वथा अनुचित है।

कबीर कहते हैं कि उन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों के आडम्बरों को देखा है और जानते है कि इस प्रकार ईश्वर प्राप्ति संभव नहीं है।

मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर भक्ति से संभव है। इसके लिए बाह्य आडम्बरों की आवश्यकता नहीं है।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है। सहज सामान्य भाषा में ईश्वर प्राप्ति जैसे रहस्यात्मक भाव की अभिव्यक्ति है। शब्द चयन भावपूर्ण एवं भावानुकूल है।

'सब सखियाँ' 'कहै कबीर' में अनुप्रास अलंकार है।

गीति तत्व दृष्टव्य है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या :

''अरे इन दोहुन .... राह ह्वै जाई।।

बौद्धिक प्रश्न :

1. कबीर किस राह की बात कर रहे हैं।
2. कबीर ने किस-किस पर प्रहार किया है?
3. 'हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई' का आशय स्पष्ट करें।
4. कबीर ने किन-किन बाह्य आडम्बरों का उल्लेख किया है?
5. ईश्वर प्राप्ति हेतु कबीर ने क्या सुझाव दिए।

पद-2

''बालम आवो हमारे .... जिव जाय रे।।''

मूल भाव : दाम्पत्य प्रेम के माध्यम से आत्मा-परमात्मा के सम्बन्ध को दर्शाया है।

स्मरणीय तथ्य - कबीर ने स्वयं को परमात्मा की प्रेयसी (साधक) रूप में चित्रित किया है। परमात्मा से मिलन की उत्कट आकांक्षा को शब्दबद्ध किया है।

ईश्वर के हृदय में स्थान प्राप्ति के लिए इच्छुक हैं। ईश्वर मिलन न होने से वे दुखी हैं। इस पद में उनका विरहणी नायिका के रूप में चित्रण है।

'कामिन को है बालम प्यारा, क्यों प्यासे को नीर' - दृष्टांत के माध्यम से मिलन की तीव्र इच्छा व्यक्त की है।

परमात्मा का सान्निध्य न मिलने के कारण कबीर को न तो अन्न अच्छा लगता है और न ही नींद आती है। यह वियोग अवस्था है। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी (उस समय की प्रचलित जन भाषाओं का मिला-जुला रूप) हैं श्रृंगार के वियोग पक्ष का चित्रण है (विप्रलंभ श्रृंगार) तुकात्मकता और लय के कारण गीतितत्व विद्यमान है।

'दुखिया देह', 'कोई कहै', 'जिव जाय' में अनुप्रास अलंकार है।

'कामिन को है बालम प्यारा ज्यों प्यासे को नीर' में दृष्टांत है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

'बालम आवो .... जिव जाय रे।'

काव्य-सौन्दर्य कार्य

अन्न न भावै नींद न आवै, गृह-बन धरै न धीर रे।
कामिन को है बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर रे।

बौद्धिक प्रश्न :

1. कबीर ने परमात्मा को और स्वयं को किस रूप में चित्रित किया है?
2. किस के बिना देह 'दुखिया' है?
3. कबीर को अन्न न भाने, और नींद न आने का कारण क्या है?
4. कबीर की किस अवस्था का चित्रण किया गया है?
5. पर उपकारी से कबीर क्या आशा करता है?
6. इस पद में कौन सा रस है?
7. 'दुखिया देह' 'जिव जाय' में कौन सा अलंकार है?

पाठ-2 सूरदास

कवि - सूरदास (सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्त कवि)

रचनाएँ - सूरसारावली, साहित्य लहरी, सूर सागर।

काव्यगत विशेषताएँ-

सूरदास के पदों की भाषा ब्रज है।

साधारण बोलचाल की ब्रज भाषा का परिष्कृत रूप है।

काव्य में माधुर्य गुण, स्वाभाविकता और सजीवता विद्यमान है।

तुकात्मकता तथा लय के कारण संगीतात्मकता का समावेश है।

पद गेय (गाने योग्य) है।

सूरदास ने मुख्यतः बाल लीला (कृष्ण) एवं राधा-कृष्ण प्रेम, गोपियों के प्रेम का चित्रण किया है।

सूरदास के पदों में अलंकरण सायास न होकर अनायास है।

अनुप्रास, रूपक, श्लेष अलंकार का प्रयोग सहज है।

काव्य सजीव है, भावानुरूप शब्द चयन है।

पद-1

''खेलन में को काको .... करि नंद-दुहैयाँ''

मूल भाव - सूरदास ने कृष्ण की बाल लीला का वर्णन किया है। सूरदास ने बाल सुलभ चेष्टाओं का सूक्ष्म चित्रण किया है।

स्मरणीय तथ्य- ग्वाल-मित्रगण कृष्ण से कहते हैं कि तुम अपनी हार स्वीकार नहीं करते, हम पर अधिकार जताने का प्रयास करते हो, तो तुम्हारे साथ खेलना कौन पसंद करेगा?

खेल में सभी बराबर होते हैं। कोई बड़ा छोटा नहीं होता। खेल में किसी प्रकार की विषमता (जातिगत, अमीरी-गरीबी) के लिए स्थान कोई नहीं होता। कृष्ण हार जाने पर भी अपनी हार स्वीकार नहीं करते।

ग्वालों (मित्रों) का कहना है कि न तो तुम जाति से हमसे ऊँचे हो और न ही हम तुम्हारी शरण में हैं। तुम अधिक गाय होने के तथा सम्पन्न परिवार के होने के कारण हम पर अधिकार जताते हो। यह सुनकर कृष्ण रूठ जाते हैं। मित्र कहते हैं कि खेल में क्रोध का कोई स्थान नहीं है। कृष्ण नंद बाबा की दुहाई देकर अपनी बारी देने को तैयार हो जाते हैं तथा हार स्वीकार कर लेते हैं।

सूरदास की भाषा ब्रज है।

बालमनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण है।

पद में तुकात्मकता तथा लय का समावेश है।

'दुहाई देना' - मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

'को काको', 'हरि हारे', 'दाऊँ दियौ' में अनुप्रास अलंकार है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

''खेलन में को काको गुसैयाँ .... करि नन्द दुहैयाँ

बौद्धिक प्रश्न :

1. प्रस्तुत पद में किस भाव का चित्रण है।
2. खेल में कौन जीता और कौन हारा?
3. कृष्ण क्यों रूठ जाते हैं?
4. श्रीदामा जीतने पर क्या कहते हैं?
5. मित्र, कृष्ण की बात न मानने का क्या तर्क देते हैं?
6. खेल में किस चीज का स्थान नहीं है?
7. कृष्ण किसकी दुहाई देते हैं?
8. कृष्ण अपनी हार क्यों स्वीकार कर लेते हैं?
9. हार स्वीकार करने के उपरान्त कृष्ण क्या करते हैं।
10. प्रस्तुत पद की भाषा कौन-सी है?

पद-2

''मुरली तऊ गुपालहिं .... सीस डुलावति''

कवि - सूरदास

मूल भाव – कवि सूरदास प्रस्तुत पद में कृष्ण के प्रति गोपियों के अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति है। मुरली के प्रति गोपियाँ ईर्ष्या भाव रखती हैं।

स्मरणीय तथ्य– प्रस्तुत में श्रृंगार के वियोग पक्ष का चित्रण है। गोपियों का कहना है कि मुरली के कारण ही उन्हें कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त नहीं होता। मुरली कृष्ण से अनेकानेक कार्य करवातीं है। वह कृष्ण की अधर-सेज पर विश्राम करती है और सुकुमार कृष्ण से अपनी प्रत्येक आज्ञा का पालन करवाती है।

मुरली की आज्ञापालन में कृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा बन जाती है।

गिरिधर (पर्वत उठाने वाले) कृष्ण का सिर भी मुरली के समक्ष झुक जाता है।

गोपियों का मानना है कि कृष्ण मुरली के अधीन हैं।

गोपियाँ यह भी मानती हैं कि मुरली के कारण ही कृष्ण उन पर क्रोधित होते हैं।

समस्त गोपियाँ मुरली (बाँसुरी) तथा कृष्ण को साथ देखकर मुरली के प्रति ईर्ष्या भाव रखती हैं।

उन्हें कृष्ण और मुरली का साथ-साथ होना कष्ट देता है।

सम्पूर्ण पद में माधुर्यगुण युक्त ब्रज भाषा है।

श्रृंगार रस का चित्रण है।

तुकात्मकता और लय के कारण गीति तत्व विद्यमान है।

मुरली का मानवीकरण किया गया है।

'साज-सज्जा', 'कोप करावति' में अनुप्रास अलंकार है।

अधर-सज्जा, कर-पल्लव – में रूपक अलंकार है।

'गिरिधर नार नवावति' में – श्लेष अलंकार है।

गोपियों की मनोदशा का स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

"मुरली तऊ गुपालहिं .... सीस डुलावति"

काव्य सौन्दर्य

"कोमल तन आज्ञा करवावति, कटि टेढ़ौ ह्वै आवति।
अति आधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति।।"

बौद्धिक प्रश्न :

1. मुरली के प्रति गोपियों का क्या भाव है?
2. सखियाँ आपस में क्या बात करती हैं?
3. मुरली कृष्ण से क्या-क्या कार्य कराती हैं?
4. गोपियों को ऐसा क्यों लगता है कि मुरली ही कृष्ण के क्रोध का कारण है?
5. कृष्ण की किस मुद्रा का उल्लेख है?
6. अधर को सेज क्यों कहा गया है?
7. 'कर-पल्लव पलुटावति' का आशय स्पष्ट करें।
8. ''भृकुटी कुटिल, नैन नासा पुट'', में कौन सा भाव व्यक्त हुआ है?
9. पद की भाषा कौन सी है?
10. इस पद में कौन सा रस है?

पाठ-3 कवि देव

हँसी की चोट, सपना, दरबार

कवि - देव (रीतिकालीन कवि)

रचनाएँ - रामविलास, भाव विलास, भवानी विलास, राग रत्नाकर, अष्टयाम, प्रेमदीपिका

काव्यगत विशेषताएँ-

देव प्रेम और प्राकृतिक सौन्दर्य के कवि हैं। माधुर्य गुण युक्त कोमल ब्रज भाषा रागात्मक भावनाओं के लिए सर्वथा उपयुक्त है। देव के काव्य में संवेदनशीलता है। अलंकारों, विशिष्ट प्रयोगों एवं शब्द शक्ति का प्रयोग काव्य में दृष्टव्य है। देव के काव्य में मुहावरेदार भाषा के दर्शन होते हैं।

देव ने प्रकृति का सजीव एवं चित्रात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है। अपनी रचनाओं में कवि देव ने श्रृंगार का उदात्त रूप प्रस्तुत किया है।

पद-1

'हँसी की चोट' -

साँसनि ही सौं .... हरि जूहरि।।

कवि - देव

छंद - सवैया

मूल भाव - प्रस्तुत सवैया गोपियों की विरह दशा का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन है। कृष्ण से मिलने की उत्कट इच्छा की अभिव्यक्ति है।

स्मरणीय तथ्य- कृष्ण के मथुरा जाने के उपरान्त गोपियाँ हँसना भूल गई हैं अर्थात् सदा दुखी और व्याकुल रहती हैं।

कृष्ण के वियोग में गोपियों की विरह दशा का चित्रात्मक वर्णन किया गया है।

विरह की व्याकुलता के कारण शरीर के पाँच तत्वों में से मात्र आकाश तत्व शेष है।

विरह की व्यकुलता के कारण श्वास की गति में वृद्धि होने के कारण (साँस तेज चलना) वायु

तत्व का ह्रास हो गया है।

निरन्तर अश्रु बहने से (रोने से) शरीर से जल तत्व निकल गया है।

शरीर के दुर्बल होने से भूमि तत्व समाप्त हो गया है।

मुख के तेजहीन होने से अग्नि तत्व का क्षीण होना दर्शाया गया है।

मिलन की आशा के कारण केवल आकाश तत्व शेष है।

कृष्ण के जाने पर गोपियों का हृदय उनके साथ चला गया। कृष्ण ने उनके हृदय का हरण कर लिया है।

गोपियाँ अत्यंत व्याकुल हैं तथा कृष्ण को प्रतिपल ढूँढ़ती रहती हैं। उन्हें मिलन की आकांक्षा है।

छन्द सवैया है।

श्रृंगार रस के वियोग पक्ष (विप्रलंभ श्रृंगार) का चित्रण है।

तुकात्मकता और माधुर्य गुण दृष्टव्य है। तन की तनुता, हरै हंसि, हेरि हियो में अनुप्रास अलंकार है।

'मुख फेर लेना' मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

'हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि' में यमक अलंकार है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

''साँसनि ही सौं समीर .... हरि जू हरि''

काव्य सौन्दर्य

''जा दिन तै मुख फेरि हरै हंसि, हेरि हियो जु लिया हरि जू हरि''

बौद्धिक प्रश्न :

1. गोपियों की किस दशा का वर्णन किया गया है?
2. गोपियों की इस दशा का कारण क्या है?
3. उपर्युक्त सवैये में किन पाँच तत्वों का उल्लेख किया गया है।
4. पाँच में से कौन-सा तत्व शेष है और क्यों?
5. प्रस्तुत छन्द कौन-सा है तथा इसमें कौन-सा रस है?
6. गोपियों की दशा का वर्णन किस प्रकार किया गया है?
7. चार तत्व कैसे क्षीण हो रहे हैं?
8. गोपियों का हृदय किसके साथ चला गया?
9. गोपियाँ क्या भूल गई हैं और क्यों?
10. 'हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि' में कौन-सा अलंकार है।

सपना

झहरि-झहरि झीनी .... ह्वै दृगन में

कवि - देव (रीतिकालीन कवि)

छन्द - कवित्त

काव्यगत विशेषताएँ-

मूल भाव - प्रस्तुत सवैये में श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग एवं वियोग) का वर्णन है एक गोपी के कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम को दर्शाया गया है।

स्मरणीय तथ्य-

- वर्षा ऋतु का वर्णन है।
- वर्षा हो रही है, आकाश में काली घटा है।
- सुन्दर वातावरण निद्रामग्न गोपी स्वप्न देख रही है।
- स्वप्न में कृष्ण उससे झूला झूलने का आग्रह कर रहे हैं।
- गोपी यह सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हो जाती है।
- झूला झूलने के लिए उठने लगी थी कि उसकी नींद टूट जाती है।
- कृष्ण के सान्निध्य का स्वप्न भंग हो गया।
- जागृत अवस्था में वह पाती है कि आकाश में न तो बादल हैं और न ही घनश्याम (कृष्ण)
- उसे प्रतीत होता है जगने पर उसका भाग्य सो गया।
- जागृत अवस्था को वह अपना दुर्भाग्य मानती है
- यह उसे कष्टदायी प्रतीत होता है।
- निद्रा का संयोग जागृत अवस्था विरह दशा में परिवर्तित हो जाता है।
- वर्षा की बूँदे अश्रु बनकर उसकी आँखों में उतर गईं।

- प्रस्तुत छन्द कवित्त हैं
- इसमें श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग और वियोग) का चित्रण है।
- कोमलकांत ब्रज भाषा का प्रयोग, तुकात्मकता दृष्टव्य है।
- 'निगोड़ी नींद' में अनुप्रास अलंकार है।
- 'झहरि-झहरि', 'घहरि-घहरि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
  ''सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में – विरोधाभास अलंकार है।
- कवि ने 'फूला न समाना' मुहावरे का प्रयोग किया है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

''झहरि-झहरि झीनी .... है दृगन में'' की सप्रसंग व्याख्या करें।

काव्य सौन्दर्य

''झहरि-झहरि झीनी बूँद है परति मानो
घहरि-घहरि घटा घेरी है गगन में''

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'सपना' में गोपी की किन दो अवस्थाओं का चित्रण है?
2. गोपी क्या स्वप्न देख रही है?
3. 'सपना' में कौन सी ऋतु का वर्णन है?
4. नींद टूटने से भाग सो जाने का क्या आशय है?
5. नींद को निगोड़ी क्यों कहा गया है?
6. स्वप्न टूटने पर गोपी ने क्या अनुभव किया?
7. ''वेई छाई बूँदे मेरे आँसु है दृगन में'' का आशय स्पष्ट करें।
8. उपर्युक्त छन्द कौन सा है तथा इसमें किस रस का चित्रण है?
9. प्रस्तुत छन्द की भाषा के दो गुण लिखें।
10. ''उठि गई सो निगोड़ी नींद
    सोए गए भाग मेरे''

इन पंक्तियों में अलंकार स्पष्ट करें

11. फूला न समाना एक .... है

दरबार

कवि - देव

छन्द - सवैया

मूल भाव - कवि ने दरबारी तथा सामंती वातावरण पर व्यंग्य किया है। कवि ने इसे दर्शाया है कि दरबारी वातावरण में प्रजा बुद्धि से नहीं, अपितु चाटुकारिता से काम लेती है।

स्मरणीय तथ्य-

- देव ने यह दर्शाया है कि दरबारी वातावरण में प्रजा निष्क्रिय और अकर्मण्य हो गई है। वह अंधी, बहरी और गूँगी बनकर केवल दर्शक है। राजा भी वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ (अनजान) बना रहता है।
- प्रजा और राजा दोनों भोगविलास, रागरंग में लीन रहते हैं। सब केवल अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगे रहते हैं। दूसरों के विषय में सोचते ही नहीं है। बुद्धि और विवेक भ्रष्ट हो चुका है।
- लोग (प्रजा) दिन रात भोग विलास की भौतिक सुख-सुविधा की सामग्री एकत्र करने में लगे रहते हैं। भौतिक सुख सुविधाओं के पीछे लोग नट की भांति नाचते हैं। अपनी बुद्धि, विवेक का प्रयोग नहीं करते।
- इस प्रकार के वातावरण में बुद्धि, काव्य एवं कला का कोई मोल नहीं है। यह वातावरण काव्य एवं कला की अनुभूति तथा अभिव्यक्ति के मार्ग में बाधक है, सर्वथा अनुपयुक्त है।
- देव की काव्यभाषा ब्रज है
- 'सवैया' छन्द का प्रयोग किया गया है।
- 'रुचि राच्यो', 'निसि नाच्यो' में अनुप्रास अलंकार है।

अभ्यास कार्य

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'दरबार' की भाषा कौन सी है तथा यह किस छन्द में रचित है?
2. 'दरबार' छन्द में किस प्रकार के वातावरण को दर्शाया गया है?

3. राजा और प्रजा दोनों कैसे हैं?

4. प्रजा किस में लीन है?

5. ऐसा क्यों कहा गया है कि लोगों की मति भ्रष्ट हो गई है?

6. काव्य और कला की पहचान को किस प्रकार अनदेखा किया जाता है?

7. 'सगरी निसि नाच्यो' का आशय स्पष्ट करें।

8. 'दरबार' का मूल भाव लिखें।

पाठ-4 पद्माकर

रीतिकालीन कवि पद्माकर

रचनाएँ - विरुदावली, पद्माभरण, राम रसायन, गंगा लहरी, हिम्मतबहादुर

'कविराज शिरोमणि' की उपाधि से सम्मानित

काव्यगत विशेषताएँ-

कवि पद्माकर रीतिकालीन कवि हैं। उनकी भाषा माधुर्य गुण युक्त ब्रज भाषा है। अपनी अधिकतर रचनाओं में उन्होंने प्रेम और सौन्दर्य का सजीव चित्रण किया है। पद्माकर के ऋतु वर्णन में चित्रात्मकता और अपूर्व बिम्ब योजना के दर्शन होते हैं।

- ❑ अलंकार, विशिष्ट अधिक प्रयोग में उनका काव्य अपूर्व है।
- ❑ भावपूर्ण भाषा और शब्द चयन विषयानुकूल हैं
- ❑ लाक्षणिक शब्द प्रयोग सूक्ष्म अनुभूतियों को सहज ही प्रस्तुत करता हैं।
- ❑ भाषा में प्रवाह तथा गति है।
- ❑ पद्माकर ने अधिकांशतः कवित्त और सवैया छन्द का प्रयोग किया है।

कवित्त-1

''औरै भांति कुंजन .... बन ह्वै गए।।''

कवि - पद्माकर

छन्द - कवित्त

मूल भाव - बसंत ऋतु के आगमन का चित्रण किया है। ऋतुराज के प्राकृतिक सौन्दर्य का तथा नवयुवकों एवं पक्षी-समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रात्मक वर्णन किया है।

स्मरणीय तथ्य-

- ऋतुराज वसंत की मादकता का मनोहारी चित्रण किया है।
- वसंत के आगमन से प्रकृति की शोभा में, वातावरण में वृद्धि होती है।
- समस्त प्रकृति राग, रस और रंग से पूरित हो उठती है।
- मन व शरीर में उत्साह का संचार होता है।
- वसंत ऋतु एक अलग ही प्रकार का चमत्कारपूर्ण प्राकृतिक परिवर्तन और सौन्दर्य लेकर आती है।
- कवित्त की भाषा ब्रज है।
- भाषा में तुकात्मकता और माधुर्य गुण दृष्टव्य है
- वसंत ऋतु का मनभावन चित्रण, अलंकारों एवं शब्दावृत्ति से प्रभावी बन गया है।
- 'औरै' शब्द की आवृत्ति से काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो गया है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

''औरै भांति .... बन ह्वै गए।''

काव्य सौन्दर्य

''औरै भांति .... औरे छवि ह्वै गए।।''

बौद्धिक प्रश्न :

1. किस ऋतु का चित्रण किया गया है?
2. इस ऋतु के आगमन से किस किस पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है?
3. 'ऋतुराज' शब्द का प्रयोग किस के लिए किया गया है और क्यों?
4. 'ऋतुराज' के आगमन से प्रकृति में क्या परिवर्तन होते हैं।
5. 'औरै भांति' की आवृत्ति से काव्य में उत्पन्न चमत्कार को स्पष्ट करें।
6. 'छलिया छबीले छैल औरे छवि ह्वै गए'' में अलंकार स्पष्ट करें।

कवित्त-2

''गोकुल के कुल .... निचोरत बनै नहीं।।''

कवि-पद्माकर

छन्द-कवित्त

मूल भाव - होली के त्योहार के माध्यम से कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम को चित्रित किया है। स्याम रंग (कृष्ण प्रेम) में डूबी गोपी इस रंग को सदा अपने साथ रखना चाहती है।

स्मरणीय तथ्य-

- होली के त्योहार का वर्णन है
- गोपियाँ लोक निंदा की परवाह किए बिना 'स्याम रंग' में कृष्ण के प्रेम के रंग से स्वयं को मुक्त नहीं करना चाहतीं।
- होली के अवसर पर सब त्योहार की मस्ती में मग्न हैं
- लोग (गोपियाँ, ग्वाल-बाल) इतने मग्न हैं कि सभी ने लाज त्याग दी है।
- दूसरे को रंगने और स्वयं को बचाने के लिए सब इधर उधर भाग रहे हैं।
- इस खेल में एक गोपी श्याम रंग में डूब गई।
- सखियों के कहने पर भी उसने अपने कपड़े नहीं निचोड़े।
- वह 'स्याम रंग' अर्थात् कृष्ण प्रेम को अपने से अलग नहीं कर सकती।
- उसका हृदय तो श्याम (कृष्ण) ने हर लिया है।
- कृष्ण प्रेम में डूबी गोपिका का मानना है कि कपड़ों पर से श्याम रंग निचोड़ने पर उससे कृष्ण-प्रेम छूट जाएगा।
- भाषा ब्रज है।
- कोमलकांत पदावली माधुर्य गुण से युक्त है।
- काव्य में प्रवाह और चित्रात्मकता है।
- 'स्याम रंग' में श्लेष अलंकार है।
- 'गोप गाउन', 'परोस पिछवारन', 'चुराई चित्त', में अनुप्रास अलंकार का चमत्कार दृष्टव्य है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

''गोकुल के कुल .... निचोरत बनै नहीं।''

काव्य सौन्दर्य

'हों तो स्याम रंग में चुराई चित चोराचोरी

बोरत तौं बोरयौ पै निचोरत बनै नहीं।

बौद्धिक प्रश्न :

1. कवित्त में किस त्योहार का चित्रण है?
2. इस त्योहार का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. गोपी कौन-से रंग में डूबी है?
4. गोपी क्या नहीं करना चाहती और क्यों?
5. होली के अवसर पर लोग क्या त्याग देते हैं?
6. पद्‌माकर की भाषा कौन सी है?

कवित्त-3

''भौंरन को .... सुहावनो लागत है।''

कवि - पद्‌माकर

छन्द - कवित्त

मूल भाव - प्रस्तुत कवित्त में वर्षा ऋतु के सौन्दर्य एवं इस ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तन का चित्रण किया है।

वर्षा ऋतु के मनभावन रूप का वर्णन कवि ने सुन्दर चित्रात्मक शब्दों में किया है।

स्मरणीय तथ्य-

- वर्षा ऋतु के आगमन से सम्पूर्ण वातावरण भौंरो की गुंजन से गूँज उठता है।
- ऐसा प्रतीत होता है कि कोई मल्हार राग गा रहा हो।
- वर्षा ऋतु में मेघ पानी के साथ साथ प्रेम की वर्षा भी करते हैं।
- हृदय में प्रेम भावना जागृत होती है।

- इस समय नायिका को अपना प्रियतम सर्वाधिक प्रिय प्रतीत होता है।
- नायिका अपने प्रियतम का सान्निध्य चाहती है।
- समस्त वातावरण बादलों की गर्जन तथा मोर के कलरव से पूरित है।
- इस मनमोहक वातावरण में नायिका झूला झूलना चाहती है।
- वर्षा ऋतु का सुन्दर चित्रण है।
- कवित्त की भाषा ब्रज है।
- इसमें माधुर्यगुण एवं लय का समावेश है।
- 'मंजुल मलारन', 'छवि छावनों' में अनुप्रास अलंकार है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

''भौरंन को गुंजन .... सुहावनो लागत है।''

काव्य सौन्दर्य

'कहैं पद्माकर गुमानहूँ तैं मानहुँ

प्रानहूँ तैं प्यारो मनभावनो लागत है।'

बौद्धिक प्रश्न :

1. प्रस्तुत कवित्त में किस ऋतु का वर्णन किया गया है?
2. सावन के आगमन पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का उल्लेख करें।
3. 'प्राणों से प्रिय' का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
4. सावन में मेघ पानी के साथ साथ और क्या बरसाते हैं?
5. कवि ने सावन की किन विशेषताओं का चित्रण किया है?
6. प्रियतम के विषय में क्या कहा गया है?
7. प्रस्तुत पद की भाषा कौन सी और कैसी है?

पाठ-5

कवि - सुमित्रानंदन पंत (मूलतः छायावादी काव्यधारा के कवि)

रचनाएँ - वीणा, ग्रंथि, ग्राम्या, पल्लव, गुंजन, उत्तरा, लोकायतन (महाकाव्य)

पुरस्कार - सवियत लैंड नेहरू, साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञान पीठ

काव्यगत विशेषताएँ-

- पंत जी मूलतः छायावादी काव्यधारा के कवि हैं। प्रकृति प्रेम एवं सौन्दर्य के कवि पंत जी के काव्य में कल्पनाशीलता, प्रवाह, गति एवं भावुकता है।
- भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली है।
- भाव और विषयानुकूल, उर्दू, फारसी, सामान्य आंचलिक भाषा का प्रयोग मिलता है।
- प्रकृति के अनेकानेक रूपों, उसके पल-पल परिवर्तनशील सौन्दर्य का चित्रात्मक वर्णन किया है।
- अनूठी बिम्ब योजना, तुकात्मकता पंत जी के काव्य की विशेषताएँ हैं।
- छायावादी काव्यधारा के कवि पंत जी के काव्य में रस, छन्द, अलंकार, विशिष्ट भाषिक प्रयोग एवं भावना का अद्‌भुत सामंजस्य है।
- गीतात्मक शैली में रचित काव्य, अधिकांशतः श्रृंगार एवं करुण रस प्रधान है।
- उपमा, रूपक, मानवीकरण इत्यादि अलंकारों के संयोजन से काव्य सौन्दर्य में वृद्धि तथा भाषिक चमत्कार को देखा जा सकता है।
- शब्दों का भावानुकूल एवं विषयानुकूल चयन शब्द शिल्पी पंत के काव्य में दृष्टव्य है।

कविता - संध्या के बाद

कवि - सुमित्रानंदन पंत

मूल भाव - प्रस्तुत कविता में ग्रामीण जन जीवन के सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त किया गया है। संध्या समय होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों, ग्राम्य जीवन के दैनिक कार्य व्यापार को वर्णित

किया गया है। कविता के माध्यम से मानवता का संदेश दिया गया है। एक नई सामाजिक व्यवस्था, समता की ओर संकेत किया गया है।

शोषण से, दरिद्रता से मुक्ति की कामना है। गाँव में व्याप्त दु:ख, दैन्य, उत्पीड़न, निराशा का करुण एवं भावपूर्ण चित्र उकेरा है।

स्मरणीय तथ्य- प्रस्तुत कविता पंत जी द्वारा रचित 'ग्राम्या' संकलन से ली गई है।

- 'संध्या के बाद' में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है।
- प्रकृति पर संध्याकालीन लालिमा के प्रभाव को अत्यन्त चित्रात्मक ढंग से दर्शाया है।
- कवि ने संध्या का चित्रण पक्षी रूप में किया है। (सिमटा पंख सांझ की लाली)
- झरनों का शतमुखी स्वरूप, गंगाजल का चितकबरा होना, रेत पर धूप-छांह का खेल आदि प्राकृतिक परिवर्तनों को बिम्बों द्वारा दर्शाया है।
- संध्या के समय, बस्ती मंदिर के घंटों तथा शंख ध्वनि से पूरित हो उठती है।
- संध्या की आभा का सुन्दर वर्णन है।
- दैनिक कार्य व्यापार समाप्त कर घर लौटे थके व्यापारियों और कृषकों का वर्णन है।
- गाड़ियों और गाय के कारण पूरा वातावरण धूल से भर उठता है।
- धीरे-धीरे पूरी बस्ती अंधकार में डूब जाती है।
- गाँव में दरिद्रता, उत्पीड़न और निराशा व्याप्त है।
- व्यक्ति (गाँव वाले) अपने दैन्य भाव को, दु:ख को प्रकट करने में अक्षम हैं। उनका क्रन्दन और रुदन अनभिव्यक्त है, मूक है।
- इस दु:ख नैराश्य को देखकर, अनुभव कर गाँव के बनिए के मन में मानवता जागृत होती है। उसे अपना जीवन असफल और निरर्थक प्रतीत होता है।
- घटते प्रकाश में रात की कालिमा धीरे-धीरे गहरी होती है।
- प्रकृति के समस्त उपकरण अंधकार मग्न हो रहे हैं।
- कुत्तों के भौंकने तथा सियारों के रोने से गाँव में व्याप्त दु:ख, दैन्य और उत्पीड़न मुखरित हो उठता है।
- घरों से उठती धूम्र-रेखा को नीले रेशम की सी जाली कहा है (उपमा)
- सारा वातावरण आलस्यमग्न जान पड़ता है।
- दु:ख, गरीबी, निराशा, पीड़ा ही ग्रामीण जीवन की परिभाषा है।

- कवि दरिद्रता को पाप का कारण मानते हैं।
- गाँव के बनिए के माध्यम से गाँववालों की दैन्य स्थिति, पाप के अंत की कामना की है।
- ग्रामीण जीवन की इस अवस्था का दोषी व्यक्ति विशेष न होकर व्यवस्था है। इसी व्यवस्था में परिवर्तन होना चाहिए।
- जनता को परिश्रम का फल उसके कार्य के अनुपात में मिलना चाहिए।
- सामाजिक समता की ओर संकेत किया गया है।
- किन्तु बनिया अपना धर्म (पैसे कमाना, स्वार्थ सिद्ध करना, ठगना) नहीं त्यागता। उसकी कथनी (सोच) और करनी में अन्तर है। वह अपने विचारों (सामाजिक समता, नई व्यवस्था) को अपने व्यवहार अपने आचरण में नहीं लाता।
- आटा लेने आई बुढ़िया का शोषण करता है। आटा कम तोलता और पैसे पूरे लेता है।
- सारी बस्ती निद्रा, आलस्य और निराशा में डूब जाती है।
- कविता की भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली है।
- विषय तथा भावानुकूल, यत्र-तत्र उर्दू-फारसी, आंचलिक शब्दों एवं सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग दृष्टव्य है।
- रस, छन्द, अलंकार, विशिष्ट भाषिक प्रयोगों की दृष्टि से यह कविता उत्तम है।
- 'संध्या के बाद' प्राकृतिक सौन्दर्य की कविता है।
- ग्राम्य जीवन की करुण कथा का मार्मिक वर्णन दृष्टव्य है।
- प्रकृति के परिवर्तनशील रूप को बिम्बों द्वारा दर्शाया गया है।
- चित्रात्मक वर्णन से प्रकृति सजीव हो उठी है।
- उपमा, अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार दृष्टव्य है।
- दीप शिखा-सा, ज्योति स्तंभ-सा, केंचुल-सा, बगुलों-सा, स्वर्ण चूर्ण-सी, रेशम की-सी हल्की जाली आदि में उपमा अलंकार है।
- कँप कँप, अपनी-अपनी में पुनरुक्तिप्रकाश, घुस घरौंदे, दैन्य दु:ख, मौन मंद आदि में अनुप्रास अंलकार, 'डंडी मारना' - मुहावरे का प्रयोग है।
- सम्पूर्ण कविता में लय के कारण गेयता के दर्शन होते हैं।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

1. 'मन से कढ़ अवसाद श्रांति .... मूक निराशा।'
2. 'व्यवस्था में जग की .... अधिकारी धन का?'
3. 'नील लहरियों में लोड़ित .... बँधे समुज्जवल'

काव्य सौन्दर्य

1. 'सिमटा पंख साँझ .... निर्झर।'
2. 'तट पर बगुलों-सी .... अंतर रोदन!'

बौद्धिक प्रश्न :

1. कविता में किस समय का चित्रण है?
2. गाँव का वातावरण कैसा है?
3. पंत किस प्रकार के कवि हैं?
4. पंत की भाषा पर विचार व्यक्त करें।
5. 'सौ मुखों वाला' किसे और क्यों कहा गया है?
6. सिकता, सलिल तथा समीर को स्नेह सूत्र में बँधा क्यों कहा गया है?
7. वृद्धाओं और बगुलों के साम्य को स्पष्ट करें।
8. कर्म और गुण के समान वितरण, को स्पष्ट करते हुए बताएँ कि किस व्यवस्था की ओर संकेत किया गया है?
9. गाँव के बनिए के मन में कौन सा भाव, कब और क्यों जागृत हुआ?
10. पाप का कारण किसे कहा गया है और क्यों?
11. गाँव का बनिया अपनी वृत्ति नहीं छोड़ पाता। ऐसा किस घटना से पता चलता है।
12. 'ज्योति स्तंभ-सा', 'दीप शिखा-सी', 'रेशम की-सी' जाली में कौन सा अलंकार है।
13. कवि के बुढ़िया के शोषण को दर्शाने हेतु किस मुहावरे का प्रयोग किया है?
14. बस्ती के छोटे से गाँव के अवसाद को किन किन उपकरणों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है?

पाठ-6

कवयित्री - महादेवी वर्मा

कविताएँ - जाग तुझको दूर जाना
सब आंखों के आँसू उजाले

महादेवी जी की प्रसिद्धि विशेषताकवयित्री के रूप में है, परन्तु ये मौलिक गद्यकार भी हैं। महादेवी वर्मा छायावादी काव्य में एक प्रमुख स्तंभ हैं।

रचनाएँ : काव्य संग्रह- नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और दीपशिखा

गद्य रचनाएँ - पथ के साथी, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ आदि।

काव्यगत विशेषताएँ-

इनके काव्य में गीत और संगीत का सामंजस्य है। संगीतात्मकता, लाक्षणिकता, चित्रमयता और रहस्याभास, काल्पनिकता तथा प्रकृति-सौंदर्य उनके गीतों की विशेषता है। महादेवी वर्मा की कविता में बिंबों और प्रतीकों की सुन्दर योजना है। इनके काव्य में तत्सम शब्दों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। प्रकृति का सुन्दर चित्रण हुआ है।

पुरस्कार : 'भारतीय ज्ञानपीठ', 'पद्मभूषण' अलंकरण से सम्मानित।

जाग तुझको दूर जाना

मूल भाव - 'जाग तुझको दूर जाना' कविता के माध्यम से कवयित्री मानव को निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है तथा भीषण कठिनाइयों की चिंता न करते हुए अपने देश के प्रति सदैव कर्तव्यनिष्ठ रहने के लिए प्रेरित करती है।

स्मरणीय तथ्य- इस कविता में कवयित्री ने मानव को आँधी, तूफान, भूकंप की चिंता न करते हुए सांसारिक मोह-माया के बंधनों को त्याग कर समस्त सुखों, भोग-विलासों को छोड़कर, कष्टों को भूलकर कठिनाइयों का सामना करते हुए निरन्तर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

''मोम के बंधन'' कथन से कवयित्री का आशय है कि ये बंधन मोम के समान कोमल है।

मनुष्य को ये मानवीय रिश्ते और आपसी संबंध नहीं रोक सकते अर्थात् आजादी की लड़ाई में तुम्हें अपनों से मुँह मोड़ना होगा।

'तितलियों के पर' का प्रयोग सुंदर युवतियों तथा ऐश्वर्यपूर्ण जिंदगी की सुख-सुविधाओं के संदर्भ में किया गया है।

कवयित्री मानव का सांसारिक मोह-माया, सुख-सुविधाओं, भोग विलास, नाते-रिश्ते आदि के बंधनों से मुक्त होकर निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने के लिए जागृति का संदेश दे रही है।

कविता में 'अमरता सुत' संबोधन मानव के लिए आया है क्योंकि उसे अमर रहकर संसार के दु:खों को समाप्त करना है। इसलिए कवयित्री उसे मृत्यु को हृदय में नहीं बसाने के लिए कहती हैं तथा अमरता का पुत्र बनकर समस्त कठिनाइयों से जूझते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

इस कविता में संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। बिम्बों प्रतीकों की सुंदर योजना की गई है।

प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

'जीवन-सुधा' में रूपक अलंकार, 'सो गई आंधी में' मानवीकरण अलंकार है।

अभ्यास कार्य

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता में कवयित्री किसको सम्बोधित कर रही है?
2. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता में कवयित्री मानव को किन विपरीत परिस्थितियों से आगे बढ़ने के लिए उत्साहित कर रही है?
3. 'मोम के बंधन' और तितलियों के पर' का प्रयोग कवयित्री ने किस संदर्भ में किया है और क्यों?
4. कविता में 'अमरता-सुत' का संबोधन किसके लिए और क्यों आया है?
5. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए
6. 'नाश पथ पर अपने चिह्न छोड़ना' किसको संबोधित है?
7. 'तू न अपनी छांह को अपने लिए कारा बनाना' का क्या आशय है?

व्याख्या कार्य

'बाँध लेंगे क्या तुझे .... उर में बसाना?'

' कह न ठंडी सांस में .... कलियाँ बिछाना!'

काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए

'विश्व का क्रंदन .... अपने लिए कारा बनाना।'

कविता – 'सब आँखों के आँसू उजले'

मूल भाव – 'सब आंखों के आँसू उजले' में प्रकृति के उस स्वरूप की चर्चा हुई है जो सत्य है, यथार्थ है और जो लक्ष्य तक पहुँचने में मनुष्य की मदद करता है। जीवन की सच्चाई को प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

स्मरणीय तथ्य–

कवयित्री ने 'आँसू' के लिए 'उजले' विशेषण का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि वे मन की सत्य भावनाओं के प्रतीक हैं। दु:ख और सुख मिलने पर स्वयं ही मनुष्य की आँखों से छलछला आते हैं।

सपनों को सच बनाने के लिए मनुष्य को जीवन में आने वाली कठिनाइयों, सुख-दु:खों का साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। दीपक की भांति जलने और फूल की तरह खिलना चाहिए।

'नीलम मरकत' से कवयित्री का आशय जीवन की कठोर सच्चाइयों से है जिनका साहसपूर्वक सामना करने से ही मनुष्य के जीवन रूपी मोती का निर्माण होता है। हीरा और पन्ना सच्चाइयों की चमक को जोड़कर जीवन रूपी मोती का निर्माण करता है।

कवयित्री ने जीवन के सत्यों को प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। कवयित्री ने प्रकृति के उपादानों के माध्यम से स्वप्न बुने हैं और इन स्वप्नों में सत्य को उद्घाटित किया है। फूलों में मकरंद भरना, सूर्य के प्रकाश से संसार को आलोकित करना, झरने का बहना, दीपक का जलकर सृष्टि को उजाला प्रदान करना तथा फूलों की सुगंध बिखेर कर संसार को सुगंध से भर देना प्रकृति के स्वप्न है जिन में सत्य निहित होता है।

झरने में अमृत की धारा बहती है और पानी से मोती निकलता है। इसी प्रकार व्यक्ति के हृदय से, आँखों से जो आँसू निकलते हैं वे मोती के समान पवित्र और चमकदार होते हैं।

कविता में वर्णनात्मक शैली है, छायावादी प्रभाव स्पष्ट है।

तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग है।

पुनरूक्तिप्रकाश, उपमा, विरोधाभास अलंकारों का प्रयोग है।

भाषा सरल, सहज और बोधगम्य है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) 'आलोक लुटाता वह .... कब फूल जला'

(ख) 'नभ तारक-सा .... हीरक पिघला?'

काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए

'संसृति के प्रति पग में मेरी .... एकाकी प्राण चला'

बौद्धिक प्रश्न :

1. महादेवी वर्मा ने 'आँसू के लिए उजले' विशेषण का प्रयोग किस संदर्भ में किया है और क्यों?
2. सपनों को सत्यरूप में ढालने के लिए कवयित्री ने किन यथार्थपूर्ण स्थितियों का सामना करने को कहा है?
3. प्रकृति किस प्रकार मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है?
4. 'सपने-सपने में सत्य ढला' पंक्ति के आधार पर कविता की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।
5. निर्झर क्षुर-धारा और मोती को महादेवी ने किस तरह आँसू से जोड़ा है?
6. 'सब आँखों के आँसू उजले' कविता के अन्त में कवयित्री क्या कामना करता है?
7. कवयित्री ने किसके माध्यम से जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है?

पाठ-7

कवि - नरेंद्र शर्मा

कविता - नींद उचट जाती है

रचनाएँ - काव्य संग्रह- प्रभात फेरी, प्रवासी के गीत, पलाशवन, मिट्टी और फूल, हंसमाला, रक्तचंदन आदि हैं।

खंडकाव्य - द्रौपदी

काव्यगत विशेषताएँ-

इनका आगमन छायावादी कवि के रूप में हुआ और धीरे-धीरे प्रगतिशील रचनाओं की ओर मुड़ गए। नरेंद्र शर्मा मूलत: गीतकार हैं। प्रगतिवादी चेतना से प्रभावित होने के कारण राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे। इनकी भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। संगीतात्मकता और स्पष्टता उनके गीतों की विशेषता है। कविता में तत्सम, तद्भव, देशज तथा अरबी, फारसी सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग सहजता के साथ हुआ है। गीतिका, हरिगीतिका प्रिय छंद रहे। जनमानस की भाषा का प्रयोग किया है। प्रिय अलंकार-उपमा, रूपक, अन्योक्ति, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण।

मूल भाव - एक ऐसी लम्बी रात का वर्णन किया है जिसमें कवि को डरावने सपने आते हैं तथा रात समाप्त होने का नाम नहीं ले रही। कवि को प्रकाश की कोई किरण भी नहीं दिखाई दे रही है। यह अँधेरा दो स्तरों पर है-व्यक्ति के स्तर पर स्वप्न और निराशा का है, समाज के स्तर पर विकास, चेतना और जागृति के न होने का अँधेरा है। कवि जागरण के द्वारा इन दोनों अँधेरों को दूर करने और प्रकाश लाने की बात करता है। सामाजिक अव्यवस्था, कुरीतियों के कारण कवि के अंतर्मन में बेचैनी है। इनके काव्य में वैयक्तिकता तथा निराशा का स्वर है।

स्मरणीय तथ्य-

1. कवि ने भीतर के डरावने सपनों से अधिक भयानक, समाज में व्याप्त कुव्यवस्था एवम् कुरीतियों को माना है। संसार में खुशहाली कब होगी यही सोचकर कवि का मन बेचैन है।
2. सांसारिक दु:खों के कारण कवि सो नहीं पाते। कवि को आशा है कि सुबह का प्रकाश न केवल कवि के दु:ख को बल्कि सांसारिक दु:खों को भी समाप्त कर देगा।

3. समाज में चेतना ओर जागृति न पाकर, व्यवस्था परिवर्तन में असमर्थ अर्थात् परिवर्तन न कर सकने से व्याकुल होकर कवि चेतन से जड़ होने की बात कहता है।

4. कवि संसारिक समस्याओं, दु:खों से सदा चिंतित रहता है। कवि को लगता है। इन समस्याओं के साथ कोई आशा रूपी प्रकाश की ज्योति चक्कर लगा रही है, जिससे संसार में अंधकार नष्ट हो सके तथा लोग सुखी हो सकें।

5. कवि का मानना है कि रात भर करवटें बदलने के कारण जब नींद खराब हो जाती है, वे आँखे खोलना चाहते हैं। आँखे खोलने पर सांसारिक दु:ख उनकी आँखों के सामने चक्कर काटने लगते हैं। इसलिए कवि कहते हैं मेरे अंतर्नयनों के आगे से शिला न तम की हट पाती है।

6. बाहर के डरावने अंधेरे को देखकर कवि की आँखें दु:खने लगती हैं। गहरे और सुनसान अँधेरे में कुत्ते के भौंकने की और गीदड़ की डरावनी की आवाज़ से रात अधिक भयानक लगती है। सुख के क्षण दूर होते चले जाने के कारण इन्हीं सुखी क्षणों की ओर अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

7. कवि का 'जागृति' से अभिप्राय सामाजिक चेतना, 'अनिद्रा' से व्यवस्था परिवर्तन और भव-निशा अंधेरी से-निराशा, भय एवं आशंका है।

8. सामाजिक व्यवस्था के कारण कवि के अंतर्मन में बेचैनी है। कविता में तत्सम एवम् तद्भव शब्दों का मिश्रण है।

9. गेय एवं लयात्मकता है

10. भाषा सरल, सुबोध एवम् प्रवाहमयी है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जब-तब नींद उचट जाती है .... आने की आहट आती है।

(ख) करवट नहीं बदलता है तम .... आस रात भटकाती है।

(ग) जागृति नहीं अनिद्रा तेरी .... शिला न तम की हट पाती है

बौद्धिक प्रश्न :

1. कविता के आधार पर बताइए की कवि की दृष्टि में बाहर का अँधेरा भीतरी दु:स्वप्नों से अधिक भयावह क्यों है?

2. बाहर के अँधेरे को देखकर कवि की क्या दशा होती है?

3. नींद उचट जाने पर कवि की मनोदशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

4. कवि को रात-भर कौन-सी आशा भटकाती है?

5. कवि चेतन से फिर जड़ होने की बात क्यों कहता है?

6. अंधकार भरी धरती पर ज्योति चकफेरी क्यों देती है?

7. 'अंतर्नयनों के आगे से शिला न तम की हट पाती है। 'तम की शिला' से कवि का क्या तात्पर्य है?

8. जागृति, अनिद्रा और भव-निशा अंधेरी से कवि का सामाजिक संदर्भों में क्या अभिप्राय है?

9. अन्दर का भय कवि के नयनों को सुनहली भोर का अनुभव क्यों नहीं होने दे रहा है?

10. सन्नाटा कब गहरा हो जाता है?

11. फिर सोने और गहरी निद्रा में खोने की बात क्यों कही गई है?

पाठ-8 बादल को घिरते देखा है

कवि	-	नागार्जुन (छायावादोत्तर के प्रगतिशील कवि)
रचनाएँ	-	काव्य संग्रह - युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पँखों वाली, तालाब की मछलियाँ, हज़ार-हज़ार बाहों वाली, तुमने कहा था आदि।
उपन्यास	-	बलचनमा, रतिनाथ की चाची, कुंभीपाक, उग्रतारा आदि।

काव्यगत विशेषताएँ-

इनका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। नागार्जुन मूलतः जन-भावनाओं के कवि है। फक्कड़पन और घुमक्कड़ी उनके जीवन की प्रमुख विशेषता है। राजनीतिक, सामाजिक वातावरण उनकी कविता का मूल स्वर है। इनकी कविताओं में धारदार व्यंग्य मिलता है। छंदबद्ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताएँ रची। बाद की उनकी भाषा अधिक संस्कृतनिष्ठ है। पूर्ववर्ती काव्य में भाषा का बहुत सरल एवं सहज रूप मिलता है।

मूल भाव - 'बादल को घिरते देखा है' में प्रकृति के साथ-साथ जन-जीवन का सुन्दर चित्रण हुआ है। कैलाश पर्वत पर जाकर कवि ने सारे घटनाक्रम को अपनी आँखों से देखा है। कविता में उन्होंने बादल के कोमल और कठोर दोनों रूपों का वर्णन किया है। जिसमें हिमालय की बर्फीली घाटियों, झीलों, झरनों तथा देवदार के जंगलों के साथ-साथ किन्नर-किन्नरियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

स्मरणीय तथ्य-

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में कवि ने स्वयं कैलाश पर्वत पर जाकर इन सभी प्राकृतिक दृश्यों को अपनी आँखों से देखा है। हिमालय पर्वत स्थित मानसरोवर झीलों में तैरते हंसो का वर्णन, जो उमस से बचने लिए हिमालय की ओर चले जाते हैं।
2. सफ़ेद चोटियों का वर्णन किया है। स्वच्छ, निर्मल, बर्फ़ की सफेद चादर से ढकी चोटियों पर बादल को घिरते देखा है।
3. चकवा-चकवी को रातभर अलग रहने के कारण दुःखी और सुबह होते ही पुनर्मिलन के कारण मानसरोवर में विचरण करते एक-दूसरे के साथ छेड़छाड़ और प्यार भरी क्रीड़ाएँ करते हुए देखा है। कवि ने विरह-वेदना, प्रेम का वर्णन किया है।

4. गहरी और दुर्गम बर्फ़ीली घाटी में अनेक प्रकार के फूलों की सुगंध है परन्तु मृग जिसके पास स्वयं कस्तूरी की सुगंध होती है, वह इस नशीली सुगंध के पीछे बेचैन होकर अपने ऊपर चिढ़ रहा है।

5. कैलाश पर्वत पर शीतऋतु में घनघोर बरसते बादलों को देखा है। बादलों को बरसते देखकर कालिदास को याद करते हैं। कालिदास 'मेघदूत' में वर्षा का पानी तेज वेग से आकाश में घूमने लगता है लेकिन कवि को कालिदास का 'मेघदूत' कहीं भी दिखाई नहीं देता। कवि उसे कल्पना समझकर छोड़ने की बात करते हैं।

6. 'बादल को घिरते देखा है' बार-बार दोहराए जाने का कारण है कि कवि ने इस कविता में जितने भी दृश्य चित्र बनाए है उन सब में बादल को घिरते दिखाया गया है। हिमालय की ऊँची सफ़ेद चोटियों पर मानसरोवर और अन्य झीलों में पावस, शीत, ग्रीष्म और बसंत ऋतु, किन्नर जाति के वर्णन में बादल घिर आते हैं।

7. कविता में वर्णनात्मक, चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

8. तत्सम और तद्भव शब्दावली है।

9. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, भाषा सहज, सरल, सुन्दर एवं प्रसंगानुकूल है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

(क) छोटे-छोटे मोती जैसे .... कमलों पर गिरते देखा है।

(ख) दुर्गम बर्फ़ानी घाटी में .... अपने पर चिढ़ते देखा है।

(ग) ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या .... गरज गरज भिड़ते देखा है।

आशय स्पष्ट कीजिए

अलख नाभि से उठने वाले ....

मैंने तो भीषण जाड़ों में ....

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में बादलों के सौंदर्य चित्रण के अतिरिक्त अन्य किन दृश्यों का चित्रण किया गया है?

2. प्रणय-कलह से कवि का क्या तात्पर्य है?

3. कस्तूरी मृग के अपने पर ही चिढ़ने के क्या कारण है?
4. बादलों का वर्णन करते हुए कालिदास की याद क्यों आती है? कालिदास के मेघदूत का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. कविता में वर्णित प्रकृति चित्रण एवं जन जीवन को अपने शब्दों में लिखिए।
6. कवि ने 'महामेघ को झंझानिल से गरज-गरज भिड़ते देखा है' क्यों कहा है?
7. कवि ने पावस और शरदकाल में बादलों के जिन विशेष रूपों का वर्णन किया है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
8. 'बादल को घिरते देखा है'- पंक्ति को बार-बार दोहराए जाने से कविता में क्या सौन्दर्य आया है? अपने शब्दों में लिखिए।
9. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के आधार पर नागार्जुन की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

पाठ-9 हस्तक्षेप

कवि	-	श्रीकांत वर्मा (नयी कविता)
रचनाएँ	-	काव्य संग्रह- भटका मेघ, दिनारंभ, मायादर्पण, जलसा घर, मगध।
		कहानी संग्रह- झाड़ी संवाद
		उपन्यास- दूसरी बार
		आलोचना- जिरह, यात्रावृत्तांत-अपोलो का रथ

काव्यगत विशेषताएँ-

कवि का साहित्यिक जीवन एक पत्रकार के रूप में शुरू हुआ। तुलसी पुरस्कार, आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी पुरस्कार और शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया। इनकी कविता में एक आक्रोश है जो व्यक्तिगत न होकर जन-आक्रोश है। वही कविता की ताकत भी है। यही नहीं उन्होंने कविता को एक जीवंत भाषा दी जिसका मूल स्रोत आम जनता की बोली में है।

श्रीकांत वर्मा की भाषा जनमानस की है। भाषा में सरल और तद्भव शब्दों की भरमार है। कम शब्दों में अधिक संकेत देना उनकी प्रथम प्रवृत्ति है। चित्रात्कमता, संवादात्मकता और नाटकीयता उनकी भाषा की अन्य विशेषताएँ हैं। भाषा शैली सरल, सहज एवं प्रभावशाली है। कविताओं में शासक वर्ग की तानाशाही और अत्याचारों का वर्णन है।

मूल भाव - कवि ने हस्तक्षेप कविता में आम व्यक्ति को गलत निर्णयों के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित किया है। कवि आम जनता का आह्वान करते हुए कहते हैं कि सत्तासीन लोगों द्वारा लिये गलत निर्णयों के विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिए। कवि ने जनतंत्र में स्थापित गलत परम्पराओं पर व्यंग्य किया है।

स्मरणीय तथ्य-

1. 'हस्तक्षेप' कविता में सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध को दिखाया गया है। व्यवस्था को जनतांत्रिक बनाने के लिए हस्तक्षेप की जरूरत होती है वरना व्यवस्था निरंकुश हो जाएगी।

2. जनतांत्रिक व्यवस्था में तानाशाही और गलत निर्णयों के कारण आम आदमी दु:खी एवं पीड़ित है। नेताओं द्वारा आम आदमी को गुमराह किया जाता है कि वह उनकी सत्ता के विरोध में एक शब्द भी न कहें, गलत निर्णयों को भी स्वीकार करें। सत्ताधारी ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीते हैं। इस व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए कवि कहते हैं कि मगध को बनाए रखना है, तो मगध में शांति रहनी ही चाहिए।

3. मुर्दा व्यक्ति से तात्पर्य शोषित व्यक्ति जिसका सब कुछ लुट चुका है। उसके पास अब खोने के लिए कुछ नहीं है। ऐसे व्यक्ति का कोई क्या बिगाड़ सकेगा। वह डर भय से बहुत दूर जा चुका है। जीवित व्यक्ति तंत्र में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं कर पाता क्योंकि उसे अपनी मृत्यु तथा सुख सुविधाएँ छिन जाने का भय रहता है।

4. मुर्दा अव्यवस्था में हस्तक्षेप करता है। यह प्रश्न आम आदमी से कहता है कि जब मैं इस अव्यवस्था के खिलाफ खड़ा हो सकता हूँ तो तुम क्यों नहीं? मुर्दा जन-जागृति का भी कार्य करता है।

5. शासन व्यवस्था में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करने से शांति व्यवस्था बनी रह सकती है।

6. मगध के लोगों में इस बात का डर है कि टोकने का रिवाज न बन जाए। टोकने वालों की संख्या में वृद्धि होने से शासन तंत्र को नुकसान हो जाएगा। चीख पुकार करने वाले को राष्ट्रद्रोही समझ कर दण्डित किया जाता है।

7. लाक्षणिक प्रयोगों का स्पष्टीकरण

   (क) 'कोई छींकता तक नहीं' - कोई भी व्यक्ति अत्याचार से पीड़ित होने के बावजूद अपने दु:ख को प्रकट नहीं कर सकता।

   (ख) 'कोई चीखता तक नहीं' - निरंकुश शासक वर्ग के विरुद्ध कोई भी व्यक्ति आवाज़ नहीं उठा सकता।

   (ग) 'कोई टोकता तक नहीं' - व्यवस्था की कमियों का विरोध करने के लिए मगध का कोई भी मनुष्य हस्तक्षेप करने का साहस नहीं जुटा पाता।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

(क) मगध को बनाए रखना है, तो .... मगध है, तो शांति है।

(ख) तुम बच नहीं सकते .... मनुष्य क्यों मरता है।

(ग) कोई चीखता तक नहीं .... क्या कहेंगे लोग?

निम्नलिखित लाक्षणिक प्रयोगों को स्पष्ट कीजिए-

(क) कोई छींकता तक नहीं

(ख) कोई चीखता तक नहीं

(ग) कोई टोकता तक नहीं।

बौद्धिक प्रश्न :

1. मगध के माध्यम से 'हस्तक्षेप' कविता किस व्यवस्था की ओर इशारा कर रही है?
2. 'मगध को बनाए रखना है, तो मगध में शांति रहनी ही चाहिए' भाव स्पष्ट कीजिए।
3. मुर्दा शब्द का प्रयोग किस के लिए हुआ है?
4. मुर्दे का हस्तक्षेप क्या प्रश्न खड़ा करता है?
5. मगध निवासी हस्तक्षेप से क्यों कतराते हैं?
6. मगध के लोगों में किस बात का डर है?
7. मगध की निरंकुश शासन व्यवस्था में कोई चीख-पुकार क्यों नहीं कर सकता?
8. 'मगध अब कहने को मगध है, रहने को नहीं' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
9. 'हस्तक्षेप' कविता सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध की कविता है' स्पष्ट कीजिए।

पाठ-10 घर में वापसी

कवि - सुदामा पांडेय 'धूमिल' (प्रगतिवादी-प्रयोगवादी)

रचनाएँ - काव्य संग्रह- संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे तथा सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र आदि।

इनकी अनेक रचनाएँ समकालीन पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी है जिनका संकलन कार्य अभी नहीं हो पाया है। इनकी अनेक रचनाएँ अभी तक अप्रकाशित है। मरणोपरांत इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

काव्यगत विशेषताएँ-

प्रगतिवादी-प्रयोगवादी कवि धूमिल ग्रामीण वातावरण के कवि हैं। इनके काव्य में समसामयिक जीवन की झलक, व्यंग्य, ग्रामीण संस्कारों से युक्त, नारी जाति के प्रति कोमल भाव हैं। इन्होंने अपने काव्य में मुहावरे, लोकोक्तियों और सूक्तियों का सुन्दर प्रयोग किया है। संवादात्मक शैली का प्रयोग करके भाषा में जान फूँक दी है। लाक्षणिकता एवं प्रतीकात्मकता, मुक्त छन्दों का प्रयोग किया है। भाषा सहज, सरल एवं भावपूर्ण है।

मूल भाव - 'घर में वापसी' कविता धूमिल जी की गरीबी से लड़ रहे परिवार की करुण, कथा है। इसमें कवि ने स्पष्ट किया है कि गरीबी एक अभिशाप है। यह सारे रिश्ते-नातों के बीच एक दीवार खड़ी कर देती है। एक ही परिवार में रहने वाले लोग आपस में अजनबी बन जाते हैं। एक साथ रहते हुए भी अपना दु:ख प्रकट नहीं करते। रिश्ते होते हुए भी खुलते नहीं। कितना अच्छा होता यदि ये रिश्ते मधुर बन जाते।

स्मरणीय तथ्य-

1. कविता में एक ऐसे घर की कामना है जहाँ गरीबी दीवार की तरह बाधक न हो। माँ-पिता, बेटी, पत्नी के बीच स्नेहपूर्ण संबंध हो ताकि जीवन-संघर्ष में घर का सुख प्राप्त हो सकें।
2. कवि मानता है कि वास्तव में वे स्वजन हैं, करीब हैं पर वे बहुत गरीब हैं अभावग्रस्त हैं। गरीबी के कारण पारिवारिक बिखराव आ गया है। जिस कारण अपने दु:ख-सुख को एक दूसरे के सामने कह नहीं पाते। गरीबी के कारण संबंध होकर भी नहीं है।
3. कवि परिवार के सदस्यों को सदस्य न मानकर पाँच जोड़ी आँखें इसलिए मानता है क्योंकि गरीबी

के कारण वे पाँचों आपस में खुलकर बातें नहीं करते। उनमें ममता, प्यार और अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है। एक-दूसरे को देखते तो हैं लेकिन प्रेम भाव की कमी होती है।

5. 'पत्नी की आँखें, आँखें नहीं हाथ हैं, जो मुझे थामे हुए हैं' से कवि का अभिप्राय है कि उसकी पत्नी मुसीबत के समय उसे बहुत सहारा देती है। हमेशा उत्साहित करती है। कुछ न होने पर भी निराश नहीं होने देती। कवि अपनी पत्नी से प्रेरित होकर गरीबी से लड़ रहा है।

6. रिश्तों के न खुलने का कारण है निर्धनता। परिवार के सदस्यों में निर्धनता के कारण मानसिक तनाव है। वे खुलकर बातें नहीं कर पाते। गरीबी रिश्तों की मधुरता को समाप्त कर देती है। गरीबी के तनाव के कारण सभी के मुँह अलग-अलग दिशाओं में हैं।

7. कवि ऐसे घर की इच्छा करता है जिसमें गरीबी और अभाव के कारण बिखराव न हो। पारिवारिक संबंधों में टूटन न हो और न ही दिखावा हो। घर के सभी सदस्य प्रेम-भावना से रहते हुए दु:ख दर्द को एक-दूसरे के सामने प्रकट कर सकें।

    (क) कवि ने माँ की आँखों को तीर्थयात्रा की बस के दो पंचर पहिए कहा है। 'पड़ाव' शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक है, यह मृत्यु का प्रतीक है। 'दो पंचर पहिए' प्रतीकार्थ है ज्योतिहीन दो आँखें। 'पंचर पहिए' में अनुप्रास अलंकार है।

    (ख) कवि ने पिता की आँखों को लोहसाँय की ठंडी सलाखें बताया है। प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया है। यौवनावस्था में पिता तेजस्वी और रौबदार रहे होंगे पर बुढ़ापे और गरीबी ने उनके तेज़ को उनसे छीन लिया है। भाषा सहज, सरल, भावपूर्ण है। लाक्षणिकता एवं प्रतीकात्मता विद्यमान है। मुक्त छंद हैं।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

'वैसे हम स्वजन हैं, क्योंकि हम पेशेवर गरीब हैं'

'रिश्ते हैं, लेकिन खुलते नहीं हैं.................. यह मेरा घर है।'

निम्नलिखित का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) माँ की आँखें पड़ाव से पहले ही तीर्थयात्रा की बस में दो पंचर पहिए हैं।

(ख) पिता की आँखे लोहसांय की ठंडी सलाखें हैं।

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'घर में वापसी' कविता का मूल भाव क्या है?
2. कवि किस प्रकार के घर में वापसी की इच्छा करता है?
3. घर एक परिवार है, परिवार में पाँच सदस्य हैं किन्तु कवि पाँच सदस्य नहीं उन्हें पाँच जोड़ी आँखें मानता है, क्यों?
4. परिवार के सदस्य घर में रहते हुए भी करीब नहीं हैं। क्यों?
5. कवि के सामने ऐसी कौन सी विवशता है जो पारिवारिक रिश्तों की मधुरता को समाप्त कर देती है?
6. 'पत्नी की आँखे आँखे नहीं हाथ हैं जो मुझे थामे हुए हैं।' से कवि का क्या अभिप्राय है।
7. कवि ने 'भुन्ना-सी ताला' किसे कहा है? उसे तोड़ने का क्या उपाय बताया है?
8. पारिवारिक रिश्तों के न खुलने का क्या कारण है?

पूरक पुस्तक - अंतराल भाग-1

पाठ्यक्रम में पूरक पुस्तक को इसलिए समाहित किया जाता है ताकि विद्यार्थी की भाषिक तथा साहित्यिक रुचियों का विकास हो सके।

कक्षा 11 में हिन्दी ऐच्छिक के अंतर्गत पूरक पुस्तक के रूप में 'अंतराल' हमारे समक्ष आती है। इस पुस्तक को साहित्य की तीन विधाओं से अलंकृत किया गया है- एकांकी, आत्मकथा एवं जीवनी। पूरक पुस्तक अंतराल से विषयवस्तु एवं विविध विधाओं पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

पुस्तक प्रारंभ करने से पूर्व हमें एकांकी, आत्मकथा एवं जीवनी के अर्थ को समझना होगा।

एकांकी- एकांकी नाटक में केवल एक अंक होता है। इस एक अंक को कई दृश्यों में विभाजित किया जा सकता है। एकांकी नाटक में जीवन की कोई एक घटना, एक परिस्थिति, एक समस्या या कोई एक प्रसंग प्रस्तुत किया जाता है। नाटक की अपेक्षा एकांकी में पात्रों की संख्या कम होती है। इसमें घटनाओं या पूर्वापर प्रसंगों की विविधता इतनी नहीं होती जितनी नाटक में।

आत्मकथा- आत्मकथा स्वयं लेखक द्वारा अपने जीवन का सम्बद्ध वर्णन है। लेखक उत्तम पुरुष का प्रयोग करते हुए अपनी जीवनी लिखता है तो वही आत्मकथा बन जाती है। आत्मकथा जीवनी का ही रूप है।

जीवनी- जीवनी में लेखक किसी व्यक्ति का जीवन-चरित्र प्रस्तुत करता है। इसमें प्रायः उस व्यक्ति की जन्म से लेकर मृत्यु तक की सभी घटनाएँ होती हैं। इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन रहता है। इसका विषय भी काल्पनिक न होकर यथार्थ हुआ करता है।

पाठ - अंडे के छिलके

विधा - एकांकी

एकांकीकार - मोहन राकेश

एकांकी का उद्देश्य

1. आधुनिक समाज की दिखावे वाली संस्कृति और समाज की विकृति को प्रस्तुत करना।
2. परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व को उभारना।
3. विद्यार्थियों को संदेश देना कि वह अपने जीवन में यथार्थ को महत्व दें बनावटीपन को नहीं।
4. परिवार में एकता एवं आत्मीयता बनाए रखने के लिए सदस्यों द्वारा एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना आवश्यक है।

मुख्य बिन्दु

एकांकी का कथानक, संयुक्त परिवार पर आधारित है। परिवार में अम्माँ, माधव, राधा, वीना, गोपाल और श्याम कुल छह विभिन्न रुचियों के पात्र हैं। सभी पात्र एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए अपने शौक छिपकर पूरा करते हैं। वीना, गोपाल, राधा और श्याम अम्माँ से छिपकर अण्डे खाते हैं, चंद्रकांता संतति पढ़ते हैं और गोपाल सिगरेट पीता है। राधा के कमरे में अचानक अम्माँ के आने पर अण्डे के हलुवे को पुलटिस बताना, उपन्यास को छिपकर पढ़ना, अण्डे के छिलकों को मोजों में छिपाना जैसी घटनाओं से हास्य और व्यंग्य की स्थितियाँ बनती हैं। इससे ऐसा लगता है कि अम्माँ पुरानी विचारधारा की हैं।

एकांकी के अंत में पता चलता है कि अम्माँ सभी सदस्यों के बारे में सब कुछ जानती हैं लेकिन जिस प्रकार बच्चे उनकी भावनाओं का सम्मान करने के लिए अपन शौक छिपकर पूरा करते हैं उसी प्रकार अम्मा सब कुछ जानते हुए भी अनजान बनकर घर में आत्मीयता एकता और शांत वातावरण बनाए रखना चाहती हैं इसलिए सब कुछ जानकार भी अनजान बनी रहती है।

बोधात्मक प्रश्न :

1. 'अण्डे के छिलके' साहित्य की कौन-सी विधा है?
2. श्याम को भाई-भाभी के कमरे में पराएपन का अहसास क्यों होता है?
3. गोपाल अंडे के छिलके कहाँ छिपाकर रखता है?
4. राधा चंद्रकांता संतति जैसी पुस्तकें छिपकर क्यों पढ़ती है?
5. राधा ने चंद्रकांता संतति को शूरवीरता की कहानी क्यों कहा है?
6. 'हीटर' 'बिजली का चूल्हा' के संदर्भ में अम्माँ जी के क्या विचार थे?
7. अम्माँ के अचानक आ जाने पर 'अण्डे के हलवे' के संदर्भ में क्या बहाना बनाया गया?
8. घर के सदस्यों को यह जानकारी किसने दी कि अम्माँ सबके शौकों के बारे में जानती हैं?
9. एकांकी के प्रारंभ में घर के सदस्यों के माध्यम से अम्माँ की कैसी छवि उभरती है?
10. क्या आपके विचार से अम्माँ जी के सम्मान के लिए घर के सदस्यों का छिपकर अपने शौक पूरे करना उचित था?
11. धूम्रपान के दुष्परिणाम लिखिए।
12. श्याम और वीना के बीच किस बात पर समझौता हुआ?
13. गोपाल के अपनी भाभी राधा के प्रति क्या विचार थे?
14. 'अंडे के छिलके' एकांकी से क्या प्रेरणा मिलती है?
15. वीना और राधा के चरित्र की तीन-तीन विशेषताएँ बताइये।
16. एकांकी के माध्यम से भारतीय संयुक्त परिवार की कैसी झांकी प्रस्तुत की गई है?
17. 'अंडे के छिलके' एकांकी लिखने के पीछे एकांकीकार का क्या उद्देश्य हो सकता है?

पाठ - हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी

विधा-आत्मकथा

प्रेरणा- यदि विद्यार्थी जीवन में प्रतिभा विकास का सही अवसर और दिशा मिल जाए तो विद्यार्थी का जीवन धन्य हो जाता है। अत: अभिभावक एवं शिक्षक दोनों को अपने बच्चे की शैक्षिक योग्यता से इतर प्रतिभा को पहचान कर उसके विकास में सहयोग देकर उसके उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

मुख्य बिन्दु

'हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी' का पहला अंश 'बड़ौदा का बोर्डिंग स्कूल' उनके विद्यालयी जीवन से जुड़ा है जहाँ उनकी रचनात्मक प्रतिभा के अंकुर फूटे। उनकी प्रतिभा सबके सामने आई।

दूसरा अंश 'रानीपुर बाजार' है जहाँ हुसैन से अपेक्षा की जा रही थी कि वह अपने पारिवारिक व्यवसाय को स्वीकार करें। किंतु वहाँ भी हुसैन के अंदर का कलाकार उनसे चित्रकारी कराता रहा। अंतत: हुसैन के पिताजी ने अपने बेटे के हुनर को पहचाना और उनकी रोशन ख्याली ने हुसैन को एक महान चित्रकार बना दिया।

दादाजी की मृत्यु के बाद हुसैन के गुमसुम रहने के कारण उसे बड़ौदा बोर्डिंग स्कूल भेज दिया गया। मकबूल को बोर्डिंग स्कूल में छ: मित्र मिल जाते हैं- अत्तार, अरशद, हामिद, कंवर हुसैन अब्बास जी अहमद, अब्बास अली फ़िदा। विद्यालय में ब्लैक बोर्ड पर बनी चिड़िया को हुबहू अपनी स्लेट पर बनाना तथा दो अक्टूबर को गाँधी जयन्ती के अवसर पर गाँधी जी का पोट्रेट ब्लैक बोर्ड पर बनाकर अपनी जन्मजात कला का परिचय दिया।

रानीपुर में दुकान में बैठकर आने-जाने वालों के चित्र बनाना, फिल्म 'सिंहगढ़' का पोस्टर देखकर ऑयल पेंटिंग बनाने का विचार आना। अपनी किताबें बेचकर ऑयल कलर खरीदना तथा अपनी पहली पेंटिंग बनाना, पेंटिंग देखकर पिता का पुत्र को गले लगाना, इंदौर में बेन्द्रे साहब से मुलाकात होना तथा ऑन स्पॉट पेंटिंग प्रारंभ करना, लेखक के पिता का सारी मान्यताओं को नज़रअंदाज कर अपने बेटे को जिंदगी में रंग भरने की इज़ाजत देना।

बोधात्मक प्रश्न :

1. लेखक के पाँचों मित्रों का अलग-अलग व्यक्तित्व या फिर भी वह घनिष्ठ मित्र क्यों थे?
2. मकबूल को बोर्डिंग स्कूल में क्यों दाखिल कराया गया?
3. 'लेखक जन्मजात कलाकार है'- आत्मकथा में सबसे पहले कहाँ उद्घाटित होता है?
4. दुकान के भीतर बैठकर मकबूल के भीतर का कलाकार किन क्रियाकलापों द्वारा उजागर होता है?
5. 1933 में बेन्द्रे द्वारा कैनवस पर बनाई गई पेंटिंग का क्या नाम था? इस पेंटिंग को किसने सम्मानित किया?
6. आपके विचार से पाठ में मकबूल के पिता के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभर कर सामने आई हैं?
7. वर्तमान समय में कला के प्रति लोगों के नज़रिये में क्या फ़र्क आया है?
8. हुसैन के मन में किस फिल्म के पोस्टर को देखकर ऑयल पेंटिंग बनाने का विचार आया?
9. प्रचार-प्रसार के पुराने तरीकों और नवीन तरीकों में आपको कौन सा तरीका पसंद है और क्यों?
10. मकबूल और बेन्द्रे का आपसी परिचय किस प्रकार और कहाँ हुआ?
11. महाराज सियाजीराव गायकवाड़ के विषय में आप क्या जानते हैं?

जीवनी

पाठ - आवारा मसीहा (दिशाहारा)

लेखक - विष्णु प्रभाकर

'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित महान कथाकार शरत्चन्द्र की जीवनी है। पाठ्यपुस्तक में संकलित अध्याय शरत्चन्द्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' के प्रथम पर्व 'दिशाहारा' पर आधारित है, जिसमें लेखक ने शरत्चन्द्र के बचपन से किशोरावस्था तक का वर्णन किया है। 'आवारा मसीहा' के लिए प्रभाकर जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

शरत्चन्द्र के जीवन की दिशा, उसका लक्ष्य, उसका उद्देश्य कुछ भी तय और योजनाबद्ध नहीं है इसलिए उसे दिशाहारा कहा गया है। इस रचना के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि व्यक्ति जीवन के हर मोड़ पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करे, यह आवश्यक नहीं, किंतु किसी विशेष क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन से पूरे व्यक्तित्व का आकलन हो सकता है। प्रतिभा के विकास को हर समय उचित अवसर मिले आवश्यक नहीं लेकिन जब भी मिले उसका उपयोग करना चाहिए।

मुख्य बिन्दु

1. शरत् के पिता यायावर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे कभी भी एक जगह बँधकर नहीं रहे। उन्होंने कई नौकरियाँ की तथा छोड़ी। वे कहानी, नाटक, उपन्यास इत्यादि रचनाएँ लिखना तो प्रारंभ करते किंतु उनका शिल्पी मन किसी दासता को स्वीकार नहीं कर पाता इसलिए रचनाएँ पूर्ण नहीं हो पाती थी। जब पारिवारिक भरण-पोषण असंभव हो गया तब शरत् की माता सपरिवार अपने पिता के घर आ गई।

2. भागलपुर विद्यालय में 'सीता-वनवास', 'चारु पाठ', 'सद्भाव-सद्गुरु' तथा प्रकांड व्याकरण इत्यादि पढ़ाया जाता था। प्रतिदिन पंडितजी के सामने परीक्षा देनी पड़ती थी और विफल होने पर दण्ड भोगना पड़ता था तब लेखक को ऐसा लगता था कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनुष्य को दु:ख पहुँचाना ही है।

3. नाना के घर में शरत् का लालन-पालन नाना के घर में अनुशासित नियमों में होने लगा। घर में बाल-सुलभ शरारतों पर भी कठोर दंड दिया जाता था, फेल होने पर पीठ पर चाबुक पड़ते

थे। नाना के विचार से बच्चों को केवल पढ़ने का अधिकार है, प्यार और आदर से उनका जीवन नष्ट हो जाता है। वहाँ सृजनात्मकता के कार्य भी लुक-छिपकर करने पड़ते थे। क्योंकि नियम भंग होने पर दंड दिया जाता था।

4. शरत् को घर में निषिद्ध कार्यों को करने में विशेष आनंद आता था क्योंकि निषिद्ध कार्यों को करने में उन्हें स्वतन्त्रता का तथा जीवन में ताज़गी का अनुभव होता था। शरत् को पशु-पक्षी पालना और उपवन लगाना अतिप्रिय था।

5. शरत् और उनके पिता मोतीलाल दोनों के स्वभाव में काफी समानताएँ थी। दोनों साहित्य प्रेमी, सौन्दर्य बोधी, प्रकृति प्रेमी, संवेदनशील, कल्पनाशील और यायावर (घुमक्कड़) प्रवृत्ति के थे।

6. कभी-कभी शरत् किसी को कुछ बताए बिना गायब हो जाता, बहुत ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता और फिर स्वयं प्रकट हो जाता। पूछे जाने पर वह बताता कि वह तपोवन गया था। वस्तुत: तपोवन लताओं से घिरा, गंगा नदी के तट पर एक स्थान था जहाँ शरत् सौन्दर्य उपासना करते थे।

7. अघोरनाथ अधिकारी के साथ गंगाघाट जाते हुए शरत् ने जब अपने अंधे पति की मृत्यु पर एक गरीब स्त्री के रुदन का करुण स्वर सुना तो शरत् ने कहा कि दु:खी लोग अमीर आदमियों की तरह दिखावे के लिए जोर-जोर से नहीं रोते उनका रुदन तो प्राणों तक को भेद जाता है। यह सचमुच का रोना है। छोटे से बालक के मुख से रुदन की ऐसी सूक्ष्म व्याख्या सुनकर अघोरनाथ के एक मित्र ने भविष्यवाणी की थी कि जो बालक अभी से रुदन के विभिन्न रूपों को पहचानता है वह भविष्य में अपना नाम ऊँचा करेगा। अघोरनाथ के मित्र की यह भविष्यवाणी सच साबित हुई।

8. शरत् के स्कूल में एक छोटा-सा पुस्तकालय था। शरत् ने पुस्तकालय का सारा साहित्य पढ़ डाला था। व्यक्तियों के मन के भाव जानने में शरत् को महारत हासिल थी पर नाना के घर में उसकी प्रतिभा को पहचानने वाला कोई न था। शरत् छोटे नाना की पत्नी कुसुमकामिनी को अपना गुरु मानते रहे।

9. नाना के परिवार की आर्थिक हालत खराब होने पर शरत् के परिवार को देवानंदपुर लौटकर आना पड़ा।

10. मित्र की बहन धीरू कालांतर में 'देवदास' की पारो, 'श्रीकांत' की राजलक्ष्मी, 'बड़ी दीदी' की माधवी के रूप में उभरी।

11. शरत् को कहानी लिखने की प्रेरणा अपने पिता की अलमारी में रखी 'हरिदास की गुप्त बातें' और 'भवानी पाठ' जैसी पुस्तकों से मिली। इसी अलमारी में उन्हें पिता द्वारा लिखी अधूरी रचनाएँ भी मिलीं जिन्होंने शरत् के लेखन का मार्ग प्रशस्त किया। शरत् ने अपनी रचनाओं में अपने जीवन की कई घटनाओं एवं पात्रों को सजीव किया है।

12. शरत् में कहानी गढ़कर सुनाने की जन्मजात प्रतिभा थी। वह पंद्रह वर्ष की आयु में इस कला

में पारंगत होकर गाँव में विख्यात हो चुका था। गाँव के जमींदार गोपालदत्त मुंशी के पुत्र अतुलचंद्र ने उसे कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया। अतुलचंद्र शरत् को थियेटर दिखाने कलकत्ता ले जाता और शरत् से उसकी कहानी लिखने को कहता। शरत् ऐसी कहानी लिखता कि अतुल चकित रह जाता। अतुल के लिए कहानियाँ लिखते-लिखते शरत् ने मौलिक कहानियाँ लिखना प्रारंभ कर दिया।

13. शरत् का कुछ समय 'डेहरी आन सोन' नामक स्थान पर बीता। शरत् ने 'गृहदाह' उपन्यास में इस स्थान को अमर कर दिया। 'श्रीकांत' उपन्यास का नायक श्रीकांत स्वयं शरत् है। 'काशीनाथ' कहानी का नायक उनका गुरुपुत्र था जो शरत् का घनिष्ठ मित्र था। लंबी यात्रा के दौरान परिचय में आयी विधवा स्त्री को लेखक ने 'चरित्रहीन' उपन्यास में जीवंत किया है। 'विलासी' कहानी के सभी पात्र कहीं न कहीं लेखक से जुड़े हैं। 'शुभदा' में हारुन बाबू के रूप में उन्होंने अपने पिता मोतीलाल की छवि को उकेरा है। 'श्रीकांत' और 'विलासी' रचनाओं में सांपों को वश में करने की घटना शरत् का अपना अनुभव है। तपोवन की घटना ने शरत् को सौन्दर्य का उपासक बना दिया।

14. देवानंद गाँव में शरत्चंद्र का संघर्ष और कल्पना से परिचय हुआ। यही बातें उनकी साधना की नींव थी इसलिए शरत्चंद्र कभी भी देवानंद गांव के ऋण से मुक्त नहीं हो सके।

बोधात्मक प्रश्न :

1. शरत् के माता-पिता का क्या नाम था?
2. बालक शरत् को ऐसा क्यों लगा कि साहित्य का उद्देश्य मात्र दुःख पहुँचाना है?
3. नाना के घर में बाल सुलभ कार्य जैसे पतंग उड़ाना, लट्टू घुमाना, गुल्ली-डंडा इत्यादि निषिद्ध थे, फिर भी शरत् उन्हें करता था। क्यों?
4. शरत् के मुख्य शौक क्या थे?
5. बच्चों के प्रति शरत् के नाना की क्या मान्यता थी?
6. शरत् के नाना के घर में नियम तोड़ने पर क्या दंड दिया जाता था, क्या आप इसे उचित मानते हैं?
7. पाठ में वर्णित बालसुलभ शरारतों का वर्णन कीजिए।
8. शरत् और उनके पिता के स्वभाव में क्या समानताएँ थीं?
9. शरत् की रचनाओं में उनके वास्तविक जीवन की कौन-सी घटनाएँ और पात्र जीवित हो उठे हैं?
10. अघोरनाथ कौन थे? अघोरनाथ के मित्र ने शरत् के विषय में क्या भविष्यवाणी की? आपके विचार से क्या वह सच हुई?
11. सिद्ध कीजिए कि शरत् चन्द्र एक संवेदनशील, प्रकृतिप्रेमी, परोपकारी एवं दृढ़निश्चयी व्यक्ति थे।

अभिव्यक्ति और माध्यम

पाठ - जनसंचार माध्यम और लेखन

स्मरणीय तथ्य

1. **संचार का अर्थ**- संचार शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है- चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना। जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान होता है तो उसे संचार कहा जाता है।

2. संचारशास्त्री विल्बर श्रैम के अनुसार- संचार अनुभवों की साझेदारी है।

3. संचार का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। जब तक मनुष्य जीवित है तब तक वह संचार करता है। प्रकृति में सभी जीव संचार करते हैं पर मनुष्य में संचार करने की क्षमता ओर कौशल सबसे उत्तम है। संचार माध्यमों के विकास के कारण ही भौगोलिक दूरियाँ कम हो रही हैं। सांस्कृतिक एवं मानसिक रूप से हम एक दूसरे के करीब आ रहे हैं। आज दुनिया एक गाँव में बदल गई है।

4. **संचार के विभिन्न तत्व**- संचार प्रक्रिया की शुरुआत स्रोत से होती है। जो व्यक्ति अपने संदेश या सूचना को अन्यों तक पहुँचाना चाहता है वह स्रोत कहलाता है।

   एन्कोडिंग- संचारकर्त्ता एवं प्राप्तकर्त्ता दोनों को कूटभाषा का ज्ञान होना आवश्यक है।

   संदेश- सफल संचार के लिए संदेश का स्पष्ट और सीधा होना आवश्यक है तभी प्राप्तकर्ता के लिए उसे समझना आसाना होगा।

   माध्यम (चैनल)- संदेश को किसी माध्यम के द्वारा ही प्राप्तकर्ता तक पहुँचाते हैं।

   प्राप्तकर्ता (रिसीवर)- प्राप्तकर्ता डीकोडिंग के माध्यम से प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने का प्रयास करता है।

   फ़ीडबैक- फ़ीडबैक के द्वारा पता चलता है कि संचार सफल हुआ या नहीं

5. सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों के ज़रिये सफलतापूर्वक एक जगह से दूसरी जगह पहुँचना ही संचार है और इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए जिन तरीकों का प्रयोग किया जाता है वह संचार माध्यम है।

6. संचार एक जटिल प्रक्रिया है। इसके कई प्रकार हैं। जब हम मुख से कुछ बोलकर संचार करते हैं उसे **मौखिक संचार** कहते हैं। कई बार खुशी, दु:ख, प्रेम इत्यादि के संचार के लिए वाणी और संकेत दोनों के बिना भी संचार हो जाता है इसे **अमौखिक संचार** कहते हैं।

7. जब दो व्यक्ति आपस में आमने-सामने संचार करते हैं तो इसे **अंतरवैयक्तिक संचार** कहते हैं जबकि जब हम स्वयं ही प्राप्तकर्ता और संचारक हो यानी स्वयं से ही विचार-विमर्श कर रहा हो उसे **अंत:वैयक्तिक संचार** कहा जाता है।

8. जब एक समूह आपस में विचार-विमर्श या चर्चा कर रहा हो तो इसे **समूह संचार** कहा जाता है।

9. जब हम व्यक्तियों के एक समूह के साथ आमने-सामने बैठकर नहीं अपितु किसी तकनीक या यांत्रिक माध्यम के ज़रिए बात करते हैं तो इसे **जनसंचार** कहा जाता है। यह माध्यम अखबार, रेडियो, टी.वी., सिनेमा या इंटरनेट कुछ भी हो सकता है।

10. जनसंचार माध्यमों में कार्य करने वाले द्वारपाल ही यह निश्चित करते हैं कि सार्वजनिक हित में वे पत्रकारिता के सिद्धान्तों, मूल्यों के अनुसार ही सूचना को प्रकाशित या प्रसारित करने की इज़ाजत दें।

11. द्वारपाल से अभिप्राय संपादक मण्डल से है।

12. **संचार के कार्य-** संचार का प्रयोग हम माँगने के लिए, सूचना प्राप्त करने के लिए, सामाजिक संपर्क के लिए, नियंत्रण के लिए, आत्म-अभिव्यक्ति के लिए, समस्याओं के निराकरण के लिए करते हैं।

13. **जन संचार के कार्य-** सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना, एजेंडा तय करना (मुद्दे को चर्चा का विषय बनाना) निगरानी करना, लोकतंत्र में विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मंच उपलब्ध कराना।

14. भारत में आज जनसंचार के आधुनिक माध्यम जिस रूप में मौजूद हैं, उनकी प्रेरणा भले ही पश्चिमी जनसंचार माध्यम रहे हों लेकिन हमारे देश में जनसंचार माध्यमों का इतिहास कम पुराना नहीं है। देवर्षि नारद को भारत का पहला समाचार वाचक माना जाता है। महाभारत काल में धृतराष्ट्र और गंधारी को युद्ध की झलक दिखाने और उसका विवरण सुनाने के लिए जिस तरह संजय की परिकल्पना की गई है, वह एक अत्यंत समृद्ध संचार व्यवस्था की ओर इशारा करती है। शिलालेख, गुफाचित्र, कथा वाचन इत्यादि भारतीय जनसंचार व्यवस्था की ओर इशारा करते हैं।

15. जनसंचार के आधुनिक प्रचलित माध्यम- समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और इंटरनेट आदि है।

16. **समाचारपत्र-पत्रिकाएँ-** आज भले ही प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट, किसी भी माध्यम से खबरों के संचार को पत्रकारिता कहा जाता हो, लेकिन प्रारंभ में केवल प्रिंट माध्यमों के

ज़रिये ख़बरों के आदान-प्रदान को ही पत्रकारिता कहा जाता था। बाहर से खबरें लाने का काम संवाददाता करते हैं तथा उन्हें व्यवस्थित ढंग से संपादित कर छापने का काम संपादक का होता है।

दुनिया में अखबारी पत्रकारिता को आए 400 साल हो गए हैं, भारत में इसका प्रारंभ सन् 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गज़ट' से हुआ जो कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र 'उदंड मार्तंड' भी सन् 1826 में कलकत्ता से ही निकला जिसका संपादन पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने किया था। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कई पत्रिकाएँ निकालकर भाषा के विकास में योगदान दिया।

17. **आजादी से पहले के प्रमुख पत्रकारों** में गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, प्रतापनारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी और बालमुकुंद गुप्त प्रमुख हैं। प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ- 'केसरी', 'हिन्दुस्तान', 'सरस्वती', 'हंस', 'कर्मवीर', 'आज', 'प्रताप', 'प्रदीप' और 'विशाल भारत' आदि हैं।

18. **आज़ादी के बाद प्रमुख पत्रकारों** में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, राजेन्द्र माथुर, प्रभात जोशी आदि हैं। **समाचार पत्र**- 'नवभारत टाइम्स', 'जनसत्ता', 'नई दुनिया', 'अमर उजाला', 'दैनिक जागरण' आदि। **पत्रिकाएँ** - 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'दिनमान', 'रविवार', 'इंडिया टुडे', 'आउटलुक' और कादंबिनी इत्यादि।

19. **रेडियो**- सन् 1895 में जब इटली के इलैक्ट्रिकल इंजीनियर जी. मार्कोनी ने वायरलेस के माध्यम से ध्वनियों और संकेतों को एक जगह से दूसरी जगह भेजने में कामयाबी हासिल की, तब रेडियों जैसा माध्यम अस्तित्व में आया। प्रारंभिक रेडियो स्टेशन 1892 में अमेरिका शहर पिट्सबर्ग, न्यूयार्क और शिकागो में खुले। 1921 में मुंबई में 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने डाक-तार विभाग के सहयोग से संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया। 1936 में विधिवत् ऑल इण्डिया रेडियो की स्थापना हुई। आजादी के समय तक देश में कुल नौ रेडियो स्टेशन खुल चुके थे। आज आकाशवाणी देश की 24 भाषाओं और 146 बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। 1993 में एफ.एम. (फ्रिक्वेंसी मॉड्यूलेशन) की शुरुआत हुई। आज देश में 350 से अधिक निजी रेडियो स्टेशनों का जाल बिछ गया है।

20. **टेलीविजन**- सन् 1927 में बेल टेलीफ़ोन लेबोरैट्रीज ने न्यूयार्क और वाशिंगटन के बीच प्रायोगिक टेलीविजन कार्यक्रम का प्रसारण किया। 1936 में बी.बी.सी. ने अपनी टेलीविजन सेवा प्रारंभ कर दी। भारत में टेलीविज़न की शुरूआत 15 सितंबर 1959 को हुई जिसका उद्देश्य शिक्षा और सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करना था। इसके अंतर्गत 2 टी.वी. सैट लगाए गए जिन्हें 200 लोगों ने देखा। 1965 में स्वतंत्रता दिवस से भारत में विधिवत टी.वी. सेवा प्रारंभ हुई। आज पूरे भारत वर्ष में 200 से अधिक चैनल प्रसारित हो रहे हैं।

21. **सिनेमा**- जनसंचार का यह माध्यम अप्रत्यक्ष रूप से सूचना, ज्ञान और संदेश देने का कार्य करता है। सिनेमा के आविष्कार का श्रेय थॉमस अल्वा एडिसन को जाता है। 1894 में 'द अराइवल

ऑफ ट्रेन' के नाम से फ्रांस में पहली फ़िल्म बनी। भारत में पहली फ़िल्म दादा साहब फ़ाल्के ने बनाई। यह फ़िल्म 1913 में 'राजा हरिश्चंद्र' नाम से बनी। यह मूक फ़िल्म थी। 1931 में पहली बोली फ़िल्म 'आलम आरा' बनी। जनसंचार के माध्यम के रूप में सिनेमा के कई आयाम हैं। यह मनोरंजन के साथ समाज को बदलने का, नई सोच विकसित करने का और अत्याधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से लोगों को सपनों की दुनिया में ले जाने का माध्यम है। इस समय भारत विश्व का सबसे बड़ा फ़िल्म निर्माता देश है जहाँ हिन्दी के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषा और बोली में भी फिल्में बनती हैं।

22. **इंटरनेट**- इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया लेकिन लोकप्रिय माध्यम है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद हैं। यह एक अन्तर्क्रियात्मक माध्यम है जिसमें प्रयोगकर्त्ता मूक दर्शक नहीं है वह चर्चा, बातचीत का एक हिस्सा होता है। इंटरनेट ने संचार की नई संभावनाएँ जगा दी है। हमें विश्वग्राम का सदस्य बना दिया है। इतना होने पर भी अश्लील पन्नों एवं आपराधिक गतिविधियों से संबंध होने के कारण इसके दुरुपयोग की भी घटनाएँ सामने आने लगी है।

23. **जनसंचार माध्यमों का प्रभाव**- हमारी जीवन शैली पर संचार माध्यमों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। शादी-ब्याह, टिकट बुक कराने, बिल जमा करने में इंटरनेट का ही प्रयोग हो रहा है। जनसंचार माध्यमों ने हमारी क्षमताओं को और अधिक समर्थ, हमारे सामाजिक जीवन को और अधिक सक्रिय बनाया है। आज राष्ट्रीय स्तर पर हमारी राजनीति और अर्थनीति तक जनसंचार माध्यमों से प्रभावित हो रही है। जनसंचार माध्यमों के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं अगर सावधानी से इस्तेमाल न किया जाए तो लोगों पर उनका बुरा प्रभाव भी पड़ता है। सिनेमा और टी.वी. वास्तविक जीवन से दूर काल्पनिक नकली दुनिया में पहुँचा देते हैं। सिनेमा हिंसा, अश्लीलता और असामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करता है। अखबार और टेलीविजन चैनलों में कुछ खास मुद्दों को उछाला जाता है। सार्वजनिक हित से ज्यादा व्यावसायिक हित चैनलों के लिए प्रमुख हो गया है। विज्ञापनदाताओं के हितों को प्राथमिकता दी जाती है। उपभोक्तावाद के विकास और फैलाव में जनसंचार माध्यमों की बहुत बड़ी भूमिका है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जनसंचार माध्यमों ने जहाँ एक ओर लोगों को सचेत और जागरूक बनाया है वहीं उसके नकारात्मक प्रभावों से इंकार नहीं किया जा सकता। इसलिए एक जागरूक पाठक, दर्शक और श्रोता होने के नाते हमें अपनी आँखें, कान और दिमाग हमेशा खुले रखने चाहिए।

बौद्धिक प्रश्न-

लघूत्तरीय प्रश्न

1. संचार क्या है?
2. मौखिक एवं अमौखिक संचार में क्या अंतर है?
3. अंत: व्यैक्तिक संचार से आप क्या समझते हैं?

4. संचार शब्द की उत्पत्ति किस धातु से हुई है तथा उसका क्या अर्थ है?
5. विल्बर श्रैम के अनुसार संचार क्या है?
6. संचार माध्यमों से आप क्या समझते हैं?
7. फ़ीडबैक क्या है?
8. जनसंचार क्या है
9. जनसंचार के आधुनिक माध्यम कौन-कौन से हैं?
10. संचार माध्यमों कें संदर्भ में द्वारपाल से क्या अभिप्राय है?
11. संपादित सामग्री को प्रकाशित या प्रसारित करने की अनुमति कौन देता है?
12. जनसंचार के किन्हीं दो कार्यों को बताइए।
13. भारत का पहला समाचारवाचक किसे माना जाता है?
14. अखबारी पत्रकारिता को अस्तित्व में आए कितने वर्ष हो गए हैं?
15. भारत में पत्रकारिता की शुरुआत कब और किससे हुई?
16. हिंदी के पहले साप्ताहिक पत्र एवं उसके संपादक का नाम लिखित।
17. आज़ादी से पूर्व के किन्हीं दो पत्रकारों एवं दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
18. स्वतंत्रता के बाद के किन्हीं दो पत्रकारों एवं दो समाचार पत्रों के नाम लिखिए।
19. रेडियों का अविष्कार किसने किया?
20. 'ऑल इंडिया रेडियो' की स्थापना कब हुई?
21. भारत में टेलीविजन सेवा की शुरूआत कब हुई?
22. सिनेमा का आविष्कार किसने किया?
23. भारत में पहली फिल्म बनाने का श्रेय किसे जाता है?
24. भारत में पहली फिल्म कब बनी और इसका क्या नाम था?
25. पहली बोलती फिल्म कब बनी और इसका क्या नाम था?
26. इंटरनेट की कोई एक विशेषता लिखिए।
27. जनसंचार माध्यम का एक लाभ एवं एक दुष्परिणाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. संचार की परिभाषा देते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।
2. संचार की प्रक्रिया में शामिल विभिन्न तत्वों की व्याख्या कीजिए।
3. संचार कितने प्रकार का होता है? अन्त: वैयक्तिक एवं अन्तरवैयक्तिक संचार में अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. जनसंचार से आप क्या समझते हैं? जनसंचार के प्रमुख कार्यों का उल्लेख कीजिए।
5. जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी के रूप में समाचार पत्र और पत्रिकाओं की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
6. जनसंचार के आधुनिक लोकप्रिय माध्यम के रूप में इंटरनेट पर टिप्पणी लिखिए।
7. ''टेलीविज़न के दृश्य उसकी विश्वसनीयता को कई गुना बढ़ा देते हैं।'' स्पष्ट कीजिए।
8. जनसंचार माध्यमों की विशेषताओं और कमियों को स्पष्ट कीजिए।
9. टी.वी. चैनल अपनी व्यावसायिक सफलता के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाते हैं? स्पष्ट कीजिए।
10. इंटरनेट पत्रकारिता ने दुनिया को किस प्रकार समेट लिया है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

पत्रकारिता के विविध आयाम

स्मरणीय तथ्य

1. अपने आसपास की चीज़ो, घटनाओं और लोगों के बारे में ताज़ा जानकारी रखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। उसमें जिज्ञासा का भाव बहुत प्रबल होता है। यही जिज्ञासा पत्रकारिता का मूल तत्व है। पत्रकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ।

2. **पत्रकारिता क्या है?** यह एक तरह से दैनिक इतिहास लेखन है। पत्रकारिता अंग्रेजी जर्नालिज़्म का हिंदी अनुवाद है। 'जर्नल' शब्द का प्रयोग प्राय: पत्रिका के लिए होता है। सामान्यत: पत्रकारिता शिक्षा, मनोरंजन और सूचना का मेल है। मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार– ''पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा जाने वाला साहित्य है।''

3. **समाचार**– हर घटना समाचार नहीं होती है। समाचार के रूप में उन्हीं घटनाओं, सूचनाओं और मुद्दों को चुना जाता है, जिन्हें जानने में अधिक से अधिक लोगों की रुचि होती है। समाचार किसी भी ऐसी ताज़ी घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।

4. **समाचार के आवश्यक तत्व**– किसी घटना विचार और समस्या के समाचार बनने की संभावना तब बढ़ जाती है जब उसमें निम्नलिखित तत्वों का समावेश हो।

   घटना में नवीनता हो। लोग उन घटनाओं के बारे में ज्यादा जानना चाहते हैं जो उनके करीब होती है अर्थात निकटता हो। जिस घटना से जितने अधिक लोग प्रभावित होंगे उसके समाचार बनने की उतनी संभावना बढ़ जाती है। समाचार बनने के लिए विषय में जनरुचि आवश्यक है, टकराव और संघर्ष भी समाचार बनाने में सहायक होता है, महत्वपूर्ण लोगों से जुड़ी होने पर भी कोई घटना समाचार बन जाती है। उपयोगी जानकारियाँ भी समाचार की भूमिका निभाती हैं, अनोखापन लिए हुए घटनाएँ भी समाचार पत्र में विशेष स्थान पाती हैं (जैसे– विचित्र बच्चा पैदा होना), समाचारीय घटना का महत्व इससे भी तय होता है कि खास समाचार का पाठक वर्ग कौन है? नीतिगत ढाँचा तथा संपादन ही तय करता है कि कौन सी खबर चुनी जाए तथा उसकी प्रस्तुति किस प्रकार हो।

5. **संपादन के सिद्धांत**– पत्रकारिता कुछ सिद्धांतों पर चलती है। पत्रकारिता की साख बनाए रखने के लिए इन सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक हो जाता है यथा–

(क) **निष्पक्षता**- किसी भी समाचारपत्र को बिना किसी का पक्ष लिए सच्चाई को सामने लाने का प्रयास करना चाहिए।

(ख) **तथ्यों की शुद्धता**- तथ्यों को तोड़-मरोड़कर नहीं प्रस्तुत किया जाना चाहिए। तथ्यों को संपूर्ण घटना का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।

(ग) **वस्तुपरकता**- एक पत्रकार समाचार के लिए तथ्यों का आकलन अपनी धारणा और विचार के आधार पर न करे, उसका वास्तविक रूप प्रस्तुत करे।

(घ) **संतुलन**- जब किसी घटना में अनेक पक्ष शामिल हों और उनमें आपस में टकराव हो तो समाचारपत्र को किसी एक पक्ष की ओर न झुककर प्रत्येक पक्ष की बात को समाचार में लाकर संतुलन बनाना चाहिए।

(ङ) **स्रोत**- समाचार की साख बनाए रखने के लिए इसमें शामिल सूचनाओं के स्रोत (कहाँ से मिली) का उल्लेख करना चाहिए।

6. **पत्रकारिता के अन्य आयाम**- समाचार पत्र में समाचार के अलावा पाठकों के लिए अन्य आयाम भी होते हैं। इनके बिना कोई समाचार पत्र स्वयं को पूर्ण नहीं मान सकता। ये आयाम हैं-

(1) **संपादकीय**- यह समाचारपत्र की अपनी राय होती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ भी विशेष मुद्दों पर अपने विचार लेख के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

(2) **फ़ोटो पत्रकारिता**- जो बात हजार शब्द स्पष्ट नहीं कर पाते उसे एक फोटो स्पष्ट कर देती है। फोटो का असर व्यापक और सीधा होता है।

(3) **कार्टून कोना**- कार्टून के माध्यम से की गई धारदार टिप्पणियाँ सीधे पाठक के मन को छूती हैं।

(4) **रेखांकन और कार्टोग्राफ**- इनके प्रयोग से शब्दों के बिना ही संख्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया जाता है। ग्राफ के प्रयोग से पूरी बात एक नज़र में सामने आ जाती है।

7. **पत्रकारिता के प्रकार**-

(1) **खोजपरक पत्रकारिता**- इसके अंतर्गत गहरी छानबीन करके ऐसे तथ्यों को खोजकर जनता के सामने लाने का प्रयास किया जाता है जिन्हें छिपाने या दबाने का प्रयास किया जा रहा हो।

(2) **विशेषीकृत पत्रकारिता**- संसदीय, न्यायालय, आर्थिक, खेल, विज्ञान, अपराध और मनोरंजन जगत के समाचार लिखने के लिए विषय से संबंधित विशेषज्ञता होना आवश्यक है।

(3) **वॉचडॉग पत्रकारिता**- जब मीडिया सरकार के कामकाज पर निगाह रखकर होने वाली गड़बड़ी का पर्दाफ़ाश कर जनता के समक्ष लाती है तो उसे परंपरागत रूप से वॉचडॉग

पत्रकारिता कहा जाता है।

(4) **एडवोकेसी पत्रकारिता**– जब समाचार संगठन किसी विचारधारा के पक्ष में जनमत हासिल करने के लिए अभियान चलाता है तो उसे एडवोकेसी या पक्षधर पत्रकारिता कहते हैं।

(5) **वैकल्पिक पत्रकारिता**– जो मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करता है उसे वैकल्पिक पत्रकारिता कहते हैं।

8. एक अच्छे पत्रकार को सफल होने के लिए पत्रकारिता के मूल्यों को ध्यान में रखना पड़ता है। इन्हीं मूल्यों को पत्रकार की बैसाखियाँ कहा जाता है जो इस प्रकार हैं–

(1) सच्चाई (2) संतुलन (3) निष्पक्षता 4) स्पष्टता

9. **पत्रकारिता का महत्व**–

(1) देश-विदेश की गतिविधियों की जानकारी देती हैं।

(2) जनसामान्य को उसके कर्त्तव्य और अधिकारों की जानकारी देती है।

(3) रोज़गार के अवसर तलाशने में सहायक है।

(4) राष्ट्रीय चेतना का सशक्त आधार है।

(5) युगीन समस्याओं से जनता को जोड़ती है।

(6) मानव कल्याण की प्रेरणा देती है।

10. समाचारपत्र के प्रकाशन के लिए पूरा एक संगठन होता है जिसमें संपादक, संयुक्त संपादक, सहायक संपादक, विशेष संपादक, मुख्य संपादक, उप संपादक, संवाददाता और प्रूफ़ रीडर शामिल होते हैं।

11. **समाचार माध्यमों का मौजूदा रुझान**– साक्षरता एवं क्रय शक्ति बढ़ने के कारण भारत में अन्य क्षेत्रों के साथ मीडिया के बाज़ार का भी विस्तार हो रहा है। जरूरतों को पूरा करने के लिए रेडियो, टी.वी., इंटरनेट, पत्रिकाओं का भी विस्तार हो रहा है। व्यापारीकरण होने के कारण उसका मुख्य लक्ष्य पैसा कमाना हो गया है। यही कारण है कि समाचार के नाम पर मनोरंजन बेचने के रुझान के कारण वास्तविक सूचनाओं का अभाव होता जा रहा है। मीडिया के कारण 'गुमराह उपभोक्ताओं' की संख्या बढ़ती जा रही है। चैनलों में सूचना से अधिक मनोरंजन का बोलबाला है। व्यापारीकरण के कारण समाचार चैनल ज्योतिष, हस्तरेखा इत्यादि का प्रदर्शन कर रहे हैं, सनसनीखेज (पीत पत्रकारिता) और पेज थ्री पत्रकारिता छाई हुई है। आज समाचार मीडिया की साख गिरती जा रही है, आवश्यकता है कि हम इसे बिकाऊ संगठन बनने से रोकें तथा उसे सामाजिक गतिविधियों का दर्पण बनाएँ।

बौद्धिक प्रश्न-

लघूत्तरीय प्रश्न

1. पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?
2. पत्रकारिता के मूल में कौन सा भाव होता है?
3. समाचार क्या है?
4. समाचार के मुख्य तत्व कौन-कौन से हैं?
5. समाचार के संदर्भ में डेडलाइन से क्या तात्पर्य है?
6. संपादन के प्रमुख सिद्धान्त कौन-कौन से हैं?
7. वस्तुपरकता एवं तथ्यपरकता में क्या अंतर है?
8. पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना क्यों आवश्यक है?
9. पत्रकारिता कितने प्रकार की होती है? उनके नाम लिखिए।
10. पीत पत्रकारिता क्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. पत्रकारिता का अर्थ स्पष्ट करते हुए पत्रकारिता के विविध आयामों को स्पष्ट कीजिए।
2. समाचार की परिभाषा देते हुए बताइए कि किन तत्वों के शामिल होने से किसी घटना या सूचना के समाचार बनने की संभावना बढ़ जाती है?
3. संपादन के प्रमुख सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।
4. पत्रकारिता के मूल्य प्रभावित न हो इसके लिए पत्रकार को किन बैसाखियों का सहारा लेना पड़ता है?
5. टिप्पणी लिखिए- संपादकीय, फोटो पत्रकारिता, कार्टून कोना।
6. पत्रकारिता के विभिन्न प्रकारों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
7. समाचार माध्यमों में मौजूदा रुझान पर एक लेख लिखिए।

डायरी लिखने की कला

स्मरणीय तथ्य

1. डायरी क्या है?- डायरी एक नोटबुक होती है, जिसके पृष्ठों पर वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिनों की तिथियाँ क्रम से लिखी होती हैं। डायरी को दैनिकी, दैनंदिनी, रोजनामचा, रोजनिशि, वासरी, वासरिया भी कहते हैं।

2. पिछली सदी की सर्वाधिक पढ़ी गई पुस्तकों में से एक है 'एनीफ्रैंक की डायरी' जो उसने 1942-44 के दरम्यान नाजी अत्याचार के बीच एम्स्टर्डम में छुपकर रहते हुए लिखी थी।

3. हिंदी में कई बड़े रचनाकारों की डायरियाँ जैसे- मोहन राकेश की डायरी, रमेशचंद्र शाह की डायरी आदि भी किताब की शक्ल में छप चुकी है।

4. रामवृक्ष बेनीपुरी की 'पैरों में पंख बाँधकर', राहुल सांकृत्यायन की 'रूस यात्रा की डायरी', डॉ. रघुवंश की 'हरी घाटी', गजानन माधव मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी' इत्यादि डायरी ही है।

5. डायरी-लेखन नितांत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और उससे संबंधित समस्त प्रतिक्रियाओं का लेखा-जोखा है। जिस बात को हम दुनिया में किसी और व्यक्ति के सामने नहीं कह सकते उन्हें डायरी में लिखते हैं।

6. डायरी-लेखन में हम खुद को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं तथा अपने अंदर अनजाने में जमा हो रहे भार से मुक्त होते हैं। इससे हमें अपने गुणों और अवगुणों का ज्ञान होता है जो हमारी कमियों को दूर करने में सहायक होता है।

7. डायरी-लेखन में हमें अपने अंतरंग के साथ साक्षात्कार करने का अवसर प्रदान करता है। डायरी के माध्यम से हम अपने अतीत को स्मरण कर सकते हैं।

8. डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज है जिसमें हम अपने जीवन के कुछ विशेष क्षणों में घटित अनुभवों, विचारों, घटनाओं, मुलाकातों आदि का विवरण लिखते हैं।

9. डायरी लिखते समय कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है- (1)बाहरी दबावों से मुक्त होकर डायरी लिखनी चाहिए। (2) स्वयं तय करें किन घटनाओं, मुलाकातों को आप लिखना चाहते हैं। (3) जिन बातों को आप भविष्य में याद करना चाहते हैं, उन्हें अवश्य लिखें (4) डायरी

निजी वस्तु है इसलिए यह मानकर चलें के उसे केवल आप पढ़ सकते हैं। (5) डायरी में आप अपनी भाषा में स्वाभाविक शैली में लिखें। परिष्कृत भाषा और मानक शैली की चिंता न करें। (6) डायरी समकालीन इतिहास होता है जिसमें लेखक के भावों और विचारों से तत्कालीन समाज की छवि को देखा जा सकता है। (7) डायरी-लेखन सोने से पूर्व दिनभर की गतिविधियों को याद करके करना चाहिए। (8) डायरी की भाषा-शैली समस्त बंधनों से मुक्त होती है।

10. 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' बीसवीं सदी की सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में से एक मानी गई है, जिसे ऐनी फ्रैंक ने लिखा। ऐनी एक यहूदी लड़की थी। जब जर्मनी में यहूदियों पर अत्याचार होने लगा तो वह सपरिवार एम्स्टर्डम चली गई। वहां पर भी अत्याचार का शिकार होने पर वह अपने परिवार के साथ एक दफ्तर में छिपकर रहने लगी, दो साल बाद उन्हें नाजियों ने पकड़कर यातना कैंप भेज दिया। ऐनी को उसके तेरहवें जन्मदिन पर एक डायरी मिली, जिसमें उसने जून 1942 से अगस्त 1944 तक घटनाओं का वर्णन किया था। 1945 में उसकी मृत्यु हो गई। ऐनी की डायरी को उसके पिता ने प्रकाशित करवाया था। मूल डायरी डच भाषा में लिखी गई थी।

बौद्धिक प्रश्न-

लघूत्तरीय प्रश्न

1. डायरी-लेखन क्या है?
2. डायरी हमारा किससे साक्षात्कार करती है?
3. किन्हीं दो प्रसिद्ध डायरियों एवं उनके लेखकों के नाम लिखिए।
4. 'रूस में पच्चीस मास' किसकी रचना है?
5. डायरी-लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?
6. डायरी किस समय लिखनी चाहिए?
7. ऐनी फ्रैंक का जन्म कहाँ हुआ था?
8. ऐनी फ्रैंक की डायरी किस नाम से प्रकाशित हुई?
9. ऐनी की डायरी में कब से कब तक वर्णन किया गया है?
10. ऐनी फ्रैंक की मूल डायरी किस भाषा में लिखी गई है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. डायरी-लेखन क्या है? डायरी-लेखन की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

2. 'डायरी-लेखन अपने अंतरंग से साक्षात्कार कराती है।' स्पष्ट कीजिए।

3. डायरी को एक व्यक्तिगत दस्तावेज क्यों कहा जाता है?

4. डायरी लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

5. डायरी-लेखन की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

6. बीसवीं सदी में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली डायरी (पुस्तक) कौन सी है? इसकी रचना लेखिका ने किन परिस्थितियों में की।

कथा-पटकथा

स्मरणीय तथ्य

1. पटकथा शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'पट' और 'कथा' पट का अर्थ है-परदा और कथा का अर्थ है-कहानी। ऐसी कहानी जो छोटे या बड़े परदे किसी पर भी दिखाई जाए 'पटकथा' कहलाती है।

2. सिनेमा, टेलीविजन दोनों ही माध्यमों के लिए बनने वाली फिल्म या धारावाहिकों का मूल आधार पटकथा ही होती है।

3. 'पटकथा' तैयार करने के लिए सबसे पहले कथा का चयन किया जाता है। यह कथा हमारी जिंदगी, कोई घटना, इतिहास अथवा किसी सच्चे किस्से या साहित्य की किसी अन्य विधा पर आधारित हो सकती है।

4. शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास देवदास पर कई बार फिल्म बन चुकी है। मुंशी प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती तथा मन्नू भंडारी आदि की रचनाओं पर फिल्में एवं टी.वी. धारावाहिक बन चुके हैं।

5. पटकथा की संरचना नाटक की संरचना से बहुत मिलती है। नाटक की तरह ही यहाँ पात्र-चरित्र होते हैं, नायक-प्रतिनायक होते हैं, अलग-अलग घटनास्थल, दृश्य होते हैं, द्वंद्व-टकराहट और फिर समाधान होते हैं।

6. नाटक और फिल्म की पटकथा में कुछ मूलभूत अंतर होते हैं। नाटक के दृश्य लंबे होते हैं पटकथा के छोटे। नाटक के घटनास्थल सीमित होते हैं, पटकथा के असीमित। नाटक एक सजीव कला माध्यम है जबकि सिनेमा में पूर्व रिकॉर्ड की गई छवियाँ एवं दृश्य होते हैं। नाटक में कथा का विकास एक रेखीय होता है, फिल्म में विकास कई प्रकार से होता है।

7. फ्लैश बैक वह तकनीक है जिसमें अतीत में घटी किसी घटना को दिखाया जाता है। फ़्लैश फॉरवर्ड में भविष्य में होने वाली किसी घटना को पहले दिखा देते हैं। फ़्लैश बैक और फ़्लैश फॉरवर्ड दोनों ही युक्तियों का प्रयोग करने के बाद हमें वर्तमान में आना जरूरी है।

8. पटकथा की मूल इकाई दृश्य होती है। कार्य और व्यापार के बदलने पर दृश्य भी बदल जाते हैं।

9. वर्तमान समय में पटकथा लेखन में कंप्यूटर का प्रयोग होने लगा है। कम्प्यूटर पर ऐसे सॉफ्टवेयर आ गए हैं जिनमें पटकथा-लेखन का प्रारूप बना बनाया होता है। सॉफ्टवेयर पटकथा में सुधार लाने के सुझाव भी प्रस्तुत करते हैं, इन्हें मानना या न मानना लेखक की इच्छा पर निर्भर होता है।

बौद्धिक प्रश्न-

लघूत्तरीय प्रश्न

1. 'पटकथा' शब्द किन दो शब्दों से मिलकर बना है?
2. पटकथा का स्रोत क्या है?
3. 'फ़्लैश बैक' तकनीक क्या है?
4. 'पटकथा लेखन-एक परिचय' पुस्तक के लेखक कौन है?
5. किन्हीं दो लेखकों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए जिन पर फिल्म बनी है?
6. किसी एक लेखक एवं उसकी रचना का नाम लिखिए जिस पर टी.वी. धारावाहिक बना हो।
7. नाटक और पटकथा के दृश्यों में क्या अंतर है?
8. पटकथा की मूल इकाई क्या है?
9. पटकथा लेखन में कम्प्यूटर का एक लाभ बताइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'पटकथा' से आप क्या समझते हैं? पटकथा के स्रोत क्या हैं?
2. पटकथा की संरचना किस प्रकार होती है?
3. नाटक एवं फिल्म की पटकथा में मूलभूत अंतर क्या हैं?
4. फ़्लैशबैक एवं फ़्लैश फ़ॉरवर्ड तकनीक का अंतर उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. पटकथा लेखन में कम्प्यूटर की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया

स्मरणीय तथ्य

1. सरकारी पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं।
2. प्राय: ये पत्र एक कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय से दूसरे कार्यालय, विभाग या मंत्रालय को भेजे जाते हैं।
3. सरकारी कार्यालयों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इन पत्रों को कई श्रेणियों में बाँटा गया है। हर श्रेणी के पत्र के लिए एक विशेष स्वरूप निर्धारित कर दिया गया है।
4. **मुख्य टिप्पण (नोटिंग)**- किसी भी विचाराधीन पत्र अथवा प्रकरण को निपटाने के लिए उस पर जो राय, मत, आदेश या निर्देश दिया जाता है उसे टिप्पणी कहते हैं टिप्पणी लिखने की प्रक्रिया को हम टिप्पण (नोटिंग) कहते हैं।
5. टिप्पण का उद्‌देश्य मामलों को नियमानुसार निपटाना है।
6. आरंभिक टिप्पण में सहायक विचाराधीन मामले का संक्षिप्त ब्यौरा देते हुए उसका विवेचन करता है।
7. टिप्पणी अपने आप में पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। टिप्पणी संक्षिप्त, विषय-संगत, तर्कसंगत और क्रमबद्ध होनी चाहिए।
8. टिप्पणी सदैव अन्य पुरुष में लिखी जाती है।
9. **आनुषंगिक टिप्पण**- सहायक टिप्पण को संबंधित अधिकारी को भेजा जाता है। अगर संबंधित अधिकारी उस टिप्पणी से सहमत होता है तो टिप्पण के नीचे केवल हस्ताक्षर कर देता है अथवा 'मैं उपर्युक्त टिप्पणी से सहमत हूँ' लिखता है। टिप्पणी पर संबंधित अधिकारी का मत आनुषंगिक टिप्पणी कहलाता है। यदि अधिकारी असहमत है तो वह टिप्पणी को काटने, बदलने या हटाने का कार्य नहीं करता अपितु केवल अपने असहमति व्यक्त करता है।
10. **स्मरण पत्र**- इसे अनुस्मारक (रिमाइंडर) भी कहा जाता है। जब किसी पत्र, ज्ञापन इत्यादि का उत्तर समय पर प्राप्त न हो तो याद दिलाने के लिए अनुस्मारक भेजा जाता है। इसे स्मरण पत्र भी कहते हैं। इसका प्रारूप तो औपचारिक पत्र की तरह होता है पर आकार छोटा होता है। यदि एक से अधिक अनुस्मारक भेजे जाते हैं तो उन्हें अनुस्मारक 1, 2, 3 इत्यादि लिखें।

11. **अर्धसरकारी पत्र**– यह पत्र तब लिखे जाते हैं जब लिखने वाला अधिकारी संबंधित अधिकारी को व्यक्तिगत स्तर पर जानता है तथा किसी विशेष विषय पर संबंधित अधिकारी का ध्यान व्यक्तिगत तौर पर आकर्षित करना चाहता हो या परामर्श लेना चाहता हो। इसके लेखन के लिए लेटर पैड का प्रयोग होता है। सबसे ऊपर बाईं ओर प्रेषक का नाम, पता और पदनाम होता है। पत्र का प्रारंभ श्री/श्रीमान/प्रिय इत्यादि से हो सकता है। पत्र के अंत में 'भवदीय' के स्थान पर 'आपका' शब्द प्रयोग किया जाता है तत्पश्चात् संबोधित अधिकारी का नाम, पदनाम और पूरा पता दिया जाता है।

12. **प्रेस विज्ञप्ति (प्रेस रिलीज़)**– कोई व्यक्ति या संस्थान किसी विषय या बैठक में जो निर्णय लेता है, उसे प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सर्वसामान्य तक पहुँचाया जाता है।

13. **परिपत्र (सर्कुलर)**– सरकारी या निजी संस्थान में जो निर्णय लिए जाते हैं उन्हें लागू करने के लिए अधीनस्थ कार्यालयों को परिपत्र जारी किया जाता है जिसमें निर्णय को कार्यान्वित करने के निर्देश भी होते हैं।

14. **कार्यसूची**– विभिन्न संस्थाओं और कार्यालयों में विभिन्न विषयों में विचार-विमर्श कर निर्णय में पहुँचने के लिए कई समितियों का गठन किया जाता है। इन समितियों में अध्यक्ष, सचिव के अतिरिक्त अन्य सदस्य भी होते हैं। जब किसी विषय पर विचार-विमर्श करना हो अथवा निर्णय लेना हो समिति के सब सदस्य एक निश्चित समय में पूर्व निश्चित स्थान पर बैठक का आयोजन करते हैं। बैठक प्रारंभ होने से पहले विचारणीय मुद्दों की एक क्रमवार सूची बनाई जाती है जिसे कार्यसूची (ऐजेंडा) कहते हैं।

15. कार्यसूची का निर्माण इसलिए किया जाता है ताकि केवल उन विषयों पर चर्चा की जाए जो विचारणीय हैं। इससे समय की तो बचत होती ही है साथ में विषय से भटकाने की स्थिति नहीं आती।

16. बैठक का संचालन सचिव करता है।

17. **कार्यवृत्त**– कार्यसूची में दिए गए मुद्दों को सचिव बैठक में प्रस्तुत करता है। समिति के अध्यक्ष की उपस्थिति में सभी सदस्य विचारणीय मुद्दों पर अपने-अपने विचार व्यक्त करते हैं तथा विचार विमर्श के पश्चात् निर्णय लेते हैं। प्रत्येक मुद्दे पर किया गया विचार विमर्श एवं निर्णय ही कार्यवृत्त है।

18. **कार्यवृत्त एवं कार्यसूची में अंतर**– किसी विषय के संदर्भ में आयोजित बैठक से पूर्व विचारणीय बिन्दुओं की जो सूची बनाई जाती है उसे कार्यसूची कहते हैं जबकि कार्यवृत्त प्रत्येक बिन्दु पर किया गया विचार विमर्श एवं लिया गया निर्णय है।

    उदाहरणार्थ– दिनांक 17 मई, 2005 को अखिल भारतीय साहित्य एवं सांस्कृतिक बोर्ड की बैठक हुई। इस बैठक से पूर्व विचारणीय मुद्दों की एक सूची बनाई गई यही कार्य सूची है यथा–

अखिल भारतीय सांस्कृतिक बोर्ड समिति की बैठक

दिनांक - 17 मई, 2011

बैठक का समय - 2 बजे अपराह्न

स्थल - कार्यालय सभागार

कार्यसूची-

1. चौवनवीं बैठक के कार्यवृत्त की संपुष्टि।
2. पिछली बैठकों में लिए किए गए निर्णयों के अनुपालन की समीक्षा।
3. लेखकों, कलाकारों और विशेषज्ञों को दिए जाने वाले पारिश्रमिक की समीक्षा।
4. संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ाए जाने संबंधी प्रतिवेदन पर चर्चा।
5. मोबाइल फोन पर होने वाले मासिक व्यय पर लागई गई सीमा की समीक्षा।
6. अध्यक्ष की अनुमति से किसी भी अन्य विषय पर विमर्श।

बैठक के दौरान सभी सदस्यों ने कार्यसूची में निर्धारित विषयों पर चर्चा की और हर पक्ष को अच्छी तरह जांच परखकर बैठक की समाप्ति के पश्चात् यह कार्यवृत्त तैयार किया।

दिनांक 17 मई, 2005 को आयोजित अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति बोर्ड की पचपनवीं बैठक का कार्यवृत्त

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति बोर्डकी पचपनवीं बैठक बोर्ड मुख्यालय के समिति कक्ष में दिनांक 17 मई, 2005 को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता बोर्ड के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र देसाई ने की। बैठक में भाग लेने वाले माननीय सदस्यों की सूची इस प्रकार है-

1. विंसेंट अब्राहम मुख्य कार्यकारी
2. श्रीमती देविका घोषाल, सदस्य (वित्त)
3. श्री राजकुमार मीना, सदस्य (कार्मिक)
4. श्री अक्षय पटनायक, सदस्य (योजना एवं विकास)
5. श्री मणिकांत मंडल, महानिदेशक, अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान
6. श्रीमती राधिका बरुआ, सदस्य
7. श्री सुदीप हेम्ब्रम, सदस्य
8. श्री आर, कृष्णास्वामी, सदस्य

कार्यवाही के प्रारंभ में अध्यक्ष ने अपनी दक्षिण अफ्रीका यात्रा की चर्चा करते हुए वहाँ की संस्कृति पर भूमंडलीकरण के प्रभावों का जिक्र किया। उन्होंने यह भी बताया कि दक्षिण अफ्रीका के अनुभवों से हम क्या सबक ले सकते हैं।

उपर्युक्त सामान्य चर्चा के बाद बैठक की कार्यसूची में वर्णित विषयों पर विमर्श हुआ जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1. चौवनवीं बैठक के कार्यवृत्त की संपुष्टि।

   बोर्ड ने चौवनवीं बैठक के कार्यवृत्त की संपुष्टि कर दी। इसमें लिए गए निर्णयों के अनुपालन पर एक प्रतिवेदन अगली बैठक में प्रस्तुत किया जाएगा।

2. पिछली बैठकों में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की समीक्षा।

   बोर्ड ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन संबंधी प्रतिवेदन की विस्तार से समीक्षा की। जहाँ उन्होंने यह संतोष व्यक्त किया कि अधिकांश निर्णयों का पूर्ण रूप से अनुपालन हो चुका है वहीं उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जिन निर्णयों का अनुपालन शेष है उन्हें अगली बैठक से पहले कार्यान्वित कर दिया जाना चाहिए।

3. लेखकों, कलाकारों और विशेषज्ञों दिए जाने वाले पारिश्रमिक की समीक्षा।

   बोर्ड ने लेखकों, कलाकारों और विशेषज्ञों दिए जाने वाले पारिश्रमिक पर विस्तृत चर्चा की। ऐसा महसूस किया गया कि लेखकों, कलाकारों और विशेषज्ञों को दिया जाने वाला मौजूदा पारिश्रमिक पाँच वर्ष पूर्व निर्धारित किया गया था, जो समय और परिस्थितियों के आलोक में अपनी प्रासंगिकता खो चुका है। अत: पारिश्रमिक की दरों में वृद्धि अत्यावश्यक है ताकि अच्छे लेखक, कलाकार और विशेषज्ञ, संस्थान से जुड़े रहें और उनका सर्वश्रेष्ठ योगदान संस्थान को प्राप्त हो। इस संबंध में बोर्ड ने संस्थान द्वारा प्रस्तावित नयी दरों पर दृष्टि डाली और उन्हें संतोषजनक पाते हुए अपनी स्वीकृति दे दी। बोर्ड ने यह भी टिप्पणी की कि ये दरें अविलंब लागू की जानी चाहिए।

4. संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ाए जाने संबंधी प्रतिवेदन पर चर्चा।

   बोर्ड ने संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ाए जाने संबंधी राधानंदन समिति की सिफारिशें पर भी चर्चा की। बोर्ड ने महसूस किया कि इन सिफारिशों का अध्ययन और भी गहनता से किया जाना चाहिए। इसके लिए बोर्ड ने श्रीमती देविका घोषाल, सदस्य (वित्त) की अध्यक्षता में एक तीन सदस्यीय समिति का गठन किया। समिति के अन्य सदस्य श्री सुदीप हेम्ब्रम और श्री आर. कृष्णास्वामी होंगे। समिति अपनी रिपोर्ट दो माह के अंदर देगी।

5. मोबाइल फोन पर होने वाले व्यय पर लगाई गई सीमा की समीक्षा। समिति ने इस मुद्दे पर विचार करते हुए संबंधित प्रस्ताव को अपनी स्वीकृति प्रदान

कर दी। बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि बोर्ड की अगली बैठक 14 और 15 जुलाई, 2011 को बंगलौर में होगी।

हस्ताक्षर | हस्ताक्षर
( ) | ( )
अध्यक्ष | सचिव

अभ्यास कार्य

1. विद्यालय के सांस्कृतिक सचिव के रूप में सांस्कृतिक समिति की होने वाली बैठक (5 अगस्त 2011) के लिए कार्यसूची बनाइए।
2. नवीन शैक्षिक सत्र प्रारंभ होने से पूर्व की बैठक हेतु कार्यसूची बनाइए।
3. आपके विद्यालय में होने वाले वार्षिकोत्सव के संदर्भ में एक बैठक होनी निश्चित हुई है। बैठक से पूर्व विचारणीय बिन्दुओं की एक सूची बनाइए।
4. 8 अगस्त 2011 को आपके विद्यालय में 'वनमहोत्सव' मनाया गया। इसका कार्यवृत्त प्रस्तुत कीजिए।
5. वार्षिकोत्सव के संदर्भ में 5 जून 2011 को एक बैठक संपन्न हुई थी। बैठक में जिन विषयों पर चर्चा हुई और जो निर्णय लिए गए उनका कार्यवृत्त बनाइए।
6. विद्यालय में जिला स्तर की खेलकूद संबंधी गतिविधियाँ होनी है। इसके उचित संचालन के लिए बैठक से पूर्व कार्यसूची एवं बैठक के उपरांत कार्यवृत्त बनाइए।

बौद्धिक प्रश्न-

1. कार्यसूची से आप क्या समझते है?
2. कार्यसूची बनाने के क्या लाभ है?
3. कार्यसूची एवं कार्यवृत्त में अंतर बताइए।
4. कार्यवृत्त से आप क्या समझते हैं?
5. कार्यवृत्त तैयार होने के पश्चात् उसमें किस-किस के हस्ताक्षर अनिवार्य होते हैं?

प्रतिवेदन

स्मरणीय तथ्य

1. 'प्रतिवेदन' शब्द 'प्रति' उपसर्ग और 'विद्' धातु के योग से बना है। इसका अर्थ है सम्यक् अर्थात् पूरी जानकारी। इस प्रकार 'प्रतिवेदन' से अभिप्राय अनुभव से युक्त विभिन्न तथ्यों का विस्तृत लेखा-जोखा है।

2. प्राय: रिपोर्ट एवं प्रतिवेदन को समान अर्थ में ले लिया जाता है किंतु 'प्रतिवेदन' शब्द का अर्थ, स्वरूप और विषय वस्तु रिपोर्ट से काफी भिन्न है जैसे- पुलिस को घटना की रिपोर्ट दी जाती है, डाक्टर मरीज की रिपोर्ट पढ़ता है, संवाददाता समाचार के लिए रिपोर्ट लिखता है। यहाँ पर रिपोर्ट का अर्थ सामान्य विवरण से है जबकि 'प्रतिवेदन' किसी घटना, कार्ययोजना इत्यादि का अनुभव और तथ्यों से परिपूर्ण विवरण है जो लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कार्य विशेष की जानकारी तो दी ही जाती है, साथ ही विभिन्न आंकड़ों आदि के माध्यम से निष्कर्ष, सुझाव और संस्तुतियाँ भी दी जाती हैं।

3. प्रतिवेदन दो प्रकार के होते हैं। जब सरकार या किसी संस्था अथवा किसी विशिष्ट अधिकारी के आदेशानुसार किसी कार्य विशेष के बारे में प्रतिवेदन तैयार लिया जाता है उसे औपचारिक प्रतिवेदन कहते हैं। इसका वस्तुनिष्ठ और तथ्यात्मक होना अनिवार्य है। अनौपचारिक प्रतिवेदन किसी व्यक्ति विशेष का अपना अध्ययन एवं निष्कर्ष है। समाचारपत्रों में इस प्रकार के प्रतिवेदन प्रकाशित होते रहते हैं। इसमें अकेला व्यक्ति ही उत्तरदायी होता है।

4. प्रतिवेदन-लेखन के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। (1) रूपरेखा पहले बनानी चाहिए। (2) तथ्यों का संकलन (3) विवेकपूर्ण, निष्पक्ष अध्ययन (4) विचारों की प्रामाणिकता (5) विषय केन्द्रित अध्ययन (6) सही निर्णय (7) अनावश्यक विस्तार से बचें।

बौद्धिक प्रश्न-

1. प्रतिवेदन से आप क्या समझते हैं?
2. प्रतिवेदन एवं रिपोर्ट में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. प्रतिवेदन के संदर्भ में निष्कर्ष से क्या अभिप्राय है।
4. एक अच्छा प्रतिवेदन प्रस्तुत करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।
5. प्रतिवेदन कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए

उदाहरण-

प्रतिवेदन का प्रारूप

प्रश्न- विद्यालय के शैक्षिक विकास और उन्नति को ध्यान में रखते हुए प्रधानाचार्य ने एक समिति का गठन किया। जाँच एवं अध्ययन के पश्चात् समिति की ओर से प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– विद्यालय के शैक्षिक विकास और उन्नति के लिए 1 अगस्त 2011 को विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रामसिंह जी ने एक समिति का गठन किया था। जिसमें निम्नलिखित सदस्य थे–

1. श्रीमती दीपा पाण्डे, शिक्षविद् एवं सचिव
2. श्रीमती कांता, वरिष्ठ शिक्षिका हिंदी (सदस्य)
3. श्री अरुण कुमार, शारीरिक शिक्षक (सदस्य)
4. कु. उमा, वरिष्ठ अध्यापिका विज्ञान (सदस्य)
5. श्री संतोष कुमार, वरिष्ठ अध्यापक गणित (सदस्य)

समिति ने इस दिशा में अध्ययन किया कि वर्तमान में विद्यालय का विकास एवं उन्नति उस गति से नहीं हो रही है जैसी अपेक्षित थी। अध्ययन के अनुसार निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य करके स्थिति को सुधारा जा सकता है:–

1. विद्यालय में मूलभूत सुविधाएँ यथा– पीने का पानी, स्वच्छ शौचालय इत्यादि की उचित व्यवस्था की जाए।
2. विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा का प्रावधान है परंतु शिक्षकों की कमी ने उसे अवरूद्ध कर दिया है। अतः शीघ्रातिशीघ्र कम्प्यूटर शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।
3. विद्यालय के पुस्तकालय एवं शारीरिक शिक्षा कक्ष में विद्यार्थियों के अनुरूप पुस्तकें एवं खेलसामग्री उपलब्ध कराई जाए तथा बच्चों को उनका समुचित उपयोग कराया जाए।
4. छात्रों के विकास के लिए अभिभावकों से सतत् संपर्क रखा जाए।
5. शैक्षिक स्तर पर विकास के लिए छात्रों की प्रगति का तुलनात्मक अध्ययन कर सुधार करें।
6. नैतिक शिक्षा के वर्द्धन के लिए प्रार्थनासभा एवं सदन–व्यवस्था के माध्यम से बच्चों को प्रेरित किया जाए।
7. प्रत्येक तीन माह के पश्चात् उपर्युक्त सुझावों की प्रगति की समीक्षा की जाए।

दिनांक– 1 अगस्त, 2011

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
(सचिव)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

स्ववृत्त लेखन

स्मरणीय तथ्य

1. 'स्ववृत्त' से अभिप्राय अपने विवरण से है।
2. नौकरी के संदर्भ में स्ववृत्त की तुलना एक उम्मीदवार के दूत या प्रतिनिधि से की जाती है। अभिप्राय यह है कि स्ववृत्त का स्वरूप उसे प्रभावशाली बनाता है।
3. एक अच्छा स्ववृत्त नियुक्तिकर्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी और सकारात्मक धारणा उत्पन्न करता है।
4. नौकरी में सफलता के लिए योग्यता और व्यक्ति के साथ-साथ स्ववृत्त निर्माण की कला में निपुणता भी आवश्यक है।
5. स्ववृत्त में किसी विशेष प्रयोजन को ध्यान में रखकर सिलसिलेवार ढंग से सूचनाएँ संकलित की जाती हैं।
6. स्ववृत्त में दो पक्ष होते हैं। पहला पक्ष वह व्यक्ति है जिसको केंद्र में रखकर सूचनाएँ संकलित की जाती हैं दूसरा पक्ष नियोक्ता का है।
7. स्ववृत्त में ईमानदारी होनी चाहिए। किसी भी प्रकार के झूठे दावे या अतिश्योक्ति से बचना चाहिए।
8. अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पहलुओं पर जोर देना चाहिए।
9. स्ववृत्त में आलंकारिक भाषा का नहीं अपितु सरल, सीधी, सटीक और साफ भाषा एवं साफ लेखन का प्रयोग करना चाहिए।
10. स्ववृत्त का आकार अति संक्षिप्त अथवा जरूरत से ज्यादा लंबा नहीं होना चाहिए।
11. स्ववृत्त में सूचनाओं को अनुशासित क्रम में लिखना चाहिए यथा व्यक्ति-परिचय, शैक्षिक योग्यता, अनुभव, प्रशिक्षण, उपलब्धियाँ, कार्येत्तर गतिविधियाँ इत्यादि।
12. परिचय में नाम, जन्मतिथि, उम्र, पत्र-व्यवहार का पता, टेलीफोन नंबर, ई-मेल इत्यादि लिखे जाते हैं।
13. शैक्षिक योग्यता में विद्यालय का नाम, बोर्ड या विश्वविद्यालय का नाम, परीक्षा का वर्ष, प्राप्तांक, प्रतिशत है तथा श्रेणी का उल्लेख करना आवश्यक है।
14. कार्येत्तर गतिविधियों का उल्लेख अन्य उम्मीदवारों से अलग पहचान दिलाने में समर्थ होता है।
15. स्ववृत्त में विज्ञापन में वर्णित योग्यताओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए थोड़ा-बहुत परिवर्तन किया जा सकता है।

बोधात्मक प्रश्न-

1. स्ववृत्त से आप क्या समझते हैं?
2. उम्मीदवार के चयन में स्ववृत्त किस प्रकार सहायक होता है?
3. एक अच्छे स्ववृत्त में क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं?
4. स्ववृत्त में अन्य योग्यताओं के अतिरिक्त कार्येत्तर गतिविधियों की चर्चा करना क्यों आवश्यक है?
5. स्ववृत्त निर्माण की कला में निपुण होना क्यों आवश्यक है?

नोट- स्ववृत्त का प्रारूप 'पत्र-लेखन' शीर्षक के अंतर्गत आवेदन पत्र में देखें।

अपठित-बोध

अपठित का अर्थ है जो पहले न पढ़ा गया हो। अपठित बोध के अन्तर्गत विद्यार्थी को अपठित काव्यांश एवं गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखने होते हैं। इनका उत्तर लिखते समय निम्नलिखित मूलभूत बातों का ध्यान रखना चाहिए-

अपठित गद्यांश-

1. दिया गया गद्यांश अपठित होता है इसलिए इसके भाव को समझने के लिए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ना आवश्यक है।
2. तत्पश्चात् पूछे गए प्रश्नों के भाव को भी समझना अति आवश्यक है।
3. प्रश्नों के उत्तर अवतरण से ही हों तथा उनमें अतिरिक्त बातों की व्याख्या न हो इसलिए संभावित उत्तरों को अवतरण में ही रेखांकित कर लें।
4. रेखांकित संभावित उत्तरों को अपने शब्दों में अत्यंत सरल भाषा में लिखिए।
5. प्रश्नों के उत्तर सीधे और सटीक हों।
6. दो अंक वाले प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 से 25 शब्दों में लिखें।
7. एक अंक वाले उत्तर संक्षिप्त और सटीक हों।
8. जिस मूल बिंदु/बात का गद्यांश में वर्णन हो वही शीर्षक है।
9. शीर्षक संक्षिप्त (1-3 शब्द) एवं आकर्षक होना चाहिए।
10. उचित स्थानों पर विराम चिह्नों का प्रयोग अवश्य करें।

उदाहरणार्थ-

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

मनुष्य का जीवन अमूल्य है। जो संसार में विशिष्ट स्थान रखता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। प्रकृति के समस्त कार्य नियत समय पर होते हैं। समय की गति बड़ी तीव्र होती है। जो उससे पिछड़ जाता है, वह सदैव पछताता रहता है। अत: आवश्यकता है समय के सदुपयोग की। समय वह धन है जिसका सदुपयोग न करने से वह व्यर्थ चला जाता है। हमें समय का महत्व तब ज्ञात होता है जब दो मिनट विलंब के कारण गाड़ी छूट जाती है। जीवन में वही व्यक्ति सफल हो पाते हैं जो समय का पालन करते हैं।

हमारे देश में समय का दुरुपयोग बहुत होता है। बेकार की बातों में व्यर्थ समय गंवाया जाता है। मनोरंजन के नाम पर भी बहुत समय गंवाया है। बहुत से व्यक्ति समय गंवाने में ही आनंद का अनुभव करते हैं। यह प्रवृत्ति हानिकारक है। समय को खोकर कोई व्यक्ति खुश नहीं रह सकता। जूलियस

सीजर सभा में पाँच मिनट देर से पहुँचा और अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। अपनी सेना के कुछ मिनट देर से पहुँचने के कारण नेपोलियन को नेल्सन से पराजित होना पड़ा। समय किसी की बाट नहीं जोहता।

(क) समय की क्या विशेषता है? (2)

(ख) समय कैसा धन है? (2)

(ग) समय के महत्व को न समझने के कारण किस-किस को क्या-क्या हानि उठानी पड़ी? (2)

(घ) 'अमूल्य' तथा 'आवश्यकता' शब्दों के क्रमशः उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग कीजिए। (1)

(ङ) गद्यांश में से ऐसे शब्दों को छांटिए जिनका अर्थ क्रमशः निश्चित और आदत हो। (1)

(च) गद्यांश में प्रयुक्त किसी एक मुहावरे को छाँटिए। (1)

(छ) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। (1)

उत्तर-

(क) समय किसी प्रतीक्षा नहीं करता, समय की गति बड़ी तीव्र होती है। जो समय के साथ नहीं चलता वह पछताता है।

(ख) समय ऐसा धन है जिसका सदुपयोग न किए जाने पर वह व्यर्थ हो जाता है। इसका महत्व हमें तब पता चलता है जब थोड़े से विलंब के कारण हमारे महत्वपूर्ण कार्य छूट जाते हैं।

(ग) समय का महत्व न समझने के कारण जूलियस सीजर को अपनी जिंदगी से हाथ धोना पड़ा तथा नेपोलियन को नेल्सन से हारना पड़ा।

(घ) 'अमूल्य' शब्द में 'अ' उपसर्ग है तथा 'आवश्यकता' शब्द में 'ता' प्रत्यय है।

(ङ) नियत, प्रवृत्ति

(च) प्राणों से हाथ धोना।

(छ) शीर्षक - 'समय का महत्व'

विशेष-

1. उपर्युक्त अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में दिए गए हैं।
2. शब्द सीमा अंकों के अनुरूप है।
3. शीर्षक आकर्षक, संक्षिप्त एवं प्रभावशाली है।

अभ्यास कार्य-

(1)

मानव जीवन में परतंत्रता सबसे बड़े दुःख है और स्वतंत्रता सबसे बड़ा सुख है। स्वावलंबी मनुष्य कभी परतंत्र नहीं होता, वह सदैव स्वतंत्र रहता है। दासता की श्रृंखलाओं से मुक्त आत्मनिर्भर मनुष्य कभी दूसरों का मुँह देखने वाला नहीं बनता। वह कठिन से कठिन कार्य को स्वयं करने की क्षमता रखता है। परमुखापेक्षी व्यक्ति न स्वयं उन्नति कर सकता है न अपने देश और समाज का कल्याण का सकता है। स्वावलंबन वह दैवी गुण है जिससे मनुष्य और पशु में भेद मालूम पड़ता है। पशु का जीवन, उसका रहन-सहन, उसका भोजन सभी कुछ उसके स्वामी पर आधारित रहता है, परंतु मनुष्य जीवन स्वावंलबनपूर्ण जीवन है, वह पराश्रित नहीं रहता। अपने सुखमय जीवनयापन के लिए वह स्वयं सामग्री जुटाता है, अथक प्रयास करता है। बात-बात में वह दूसरों का सहारा नहीं ढूँढ़ता, वह दूसरों का अनुगमन नहीं करता, अपितु दूसरे ही उसके आदर्शों पर चलकर अपना जीवन सफल बनाते हैं। जिस देश के नागरिक स्वावलंबी होते हैं, उस देश में कभी भुखमरी, बेरोज़गारी और निर्धनता नहीं होती, वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जाता है। कौन जानता था कि जापान में इतना भयानक नरसंहार और आर्थिक क्षति होने के बाद भी वह कुछ ही वर्षों में फिर हरा-भरा हो जाएगा और फलने-फूलने लगेगा, परंतु वहाँ की स्वावलंबी जनता ने यह सिद्ध कर दिया कि सफलता और समृद्धि परिश्रमी और स्वावलंबी व्यक्ति के चरण चूमा करती है। एक जापानी तत्त्व ज्ञानी का कथन है कि ''हमारी दस करोड़ उँगलियाँ सारे काम करती हैं, इन ही उँगलियों के बल से संभव है, हम जगत को जीत लें।'' स्वावलंबन के अमूल्य महत्त्व को स्वीकार करते हुए उसके समक्ष कुबेर के कोष को भी विद्वान तुच्छ बना देते हैं।

स्वावलंबन से मनुष्य की उन्नति होती है और जीवन की सफलताएँ उस वीर का ही वरण करती हैं, जो स्वयं पृथ्वी खोदकर, पानी निकालकर अपनी तृष्णा शांत करने की क्षमता रखता है। कायर, भीरू, निरुद्योगी, अनुत्साही, अकर्मण्य और आलसी व्यक्ति स्वयं अपने हाथ-पैर न हिलाकर दैव और ईश्वर को, भाग्य और विधाता को जीवन भर दोष दिया करते हैं और रोना-झींकना ही उनका स्वभाव बन जाता है। पग-पग पर उन्हें भयानक विपत्तियों का सामना करना पड़ता है, असफलताएँ और अभाव उनके जीवन को जर्जर बना देते हैं। इस प्रकार उनका जीवन भार बन जाता है। उस भार को वहन करने की क्षमता उन अकर्मण्य और अनुद्योगी व्यक्तियों के अशक्त कंधों में नहीं होती।

प्रश्न-

(क) आत्मनिर्भर व्यक्ति किस प्रकार का होता है? वह अपने जीवन को सुखी कैसे बनाता है? (2)

(ख) स्वालंबन का श्रेष्ठ उदाहरण कहाँ और किस रूप में मिलता है? (2)

(ग) किस प्रकार के व्यक्ति भाग्य और विधाता को दोष देते हैं तथा उनका स्वभाव कैसा बन जाता है? (2)

(घ) क्रमशः उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए- दासता, पराश्रित (1)

(ङ) अवतरण से 'प्यास' तथा 'डरपोक' शब्दों के समानार्थी शब्द छाँटिए (1)

(च) विशेषण बनाइए- उन्नति, मानव (1)

(छ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। (1)

(2)

भारतीय धर्मनीति के प्रणेता नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक थे। उनकी यह धारणा थी कि नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन किए बिना किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी नहीं हो सकतीं। उन्होंने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के निर्माण के लिए वेद की एक ऋचा के आधार पर कहा कि उत्कृष्ट जीवन-प्रणाली मनुष्य की विवेक-बुद्धि से तभी निर्मित होनी संभव है, जब 'सब लोगों के संकल्प, निश्चय, अभिप्राय समान हों, सबके हृदय में समानता की भव्य भावना जागृत हो और सब लोग पारस्परिक सहयोग से मनोनुकूल सभी कार्य करें। चरित्र-निर्माण की जो दिशा नीतिकारों ने निर्धारित की, वह आज भी अपने मूल रूप में मानव के लिए कल्याणकारी है। प्रायः यह देखा जाता है कि चरित्र और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा वाणी, बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण होती है। जो व्यक्ति इन तीनों पर नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है; उसका चरित्र ऊँचा होता है। सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही सम्भव है। जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है, वह समाज सभ्य होता है और वही उन्नत कहा जाता है।

चरित्र मानव-समुदाय की अमूल्य निधि है। इसके अभाव में व्यक्ति पशुवत् व्यवहार करने लगता है। आहार, निद्रा, भय आदि की वृति सभी जीवों में विद्यमान रहती है, यह आचार अर्थात् चरित्र की ही विशेषता है जो मनुष्य को पशु से अलग कर, उससे ऊँचा उठा मनुष्यत्व प्रदान करती है। सामाजिक अनुशासन बनाए रखने के लिए भी चरित्र-निर्माण की आवश्यकता है। सामाजिक अनुशासन की भावना व्यक्ति में तभी जागृत होती है जब वह मानव-प्राणियों में ही नहीं, वरन् सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा का दर्शन करता है।

(क) हमारे धर्मनीतिकार नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष जागरूक क्यों थे? (2)

(ख) विवेक बुद्धि क्या है? यह कब निर्मित होती है? (2)

(ग) सामाजिक अनुशासन से क्या तात्पर्य है? यह भावना व्यक्ति में कब जागृत होती है? (2)

(घ) 'उत्कृष्ट' और 'प्रगति' शब्दों के विलोम लिखिए। (1)

(ङ) 'आर्थिक' और 'मनुष्यत्व' शब्दों में प्रत्यय बताइए। (1)

(च) 'चरित्र' और 'निर्माण' शब्दों से विशेषण बनाइए। (1)

(छ) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

(3)

जीवन की सरसता इस बात पर अवलम्बित है कि सहजता, और स्वाभाविकता को अपनाये रखा जाये। विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर यथासम्भव मिलता रहे। उन्हें इस ढंग से पोषण मिलता रहे जिससे उनकी क्षमता सत्प्रयोजनों में नियोजित हो सके। मन:शास्त्री मानवीय विकास प्रक्रिया से उपर्युक्त सत्य को असाधारण महत्व देते हुए कहने लगे हैं कि मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन की बढ़ती समस्याओं का एक सबसे प्रमुख कारण है– उसका 'रिजर्व नेचर'। मानवीय स्वभाव में यह विकृति तेजी से बढ़ रही है। यही कारण है कि संसार में मनोरोगियों का बाहुल्य होता जा रहा है तथा कितने ही प्रकार के नये रोग पनप रहे हैं।

नदियों के पानी को बाँधकर रोक दिया जाए तो वह महाविप्लव खड़ा करेगा। रास्ता न पाने से फूट-फूट कर निकलेगा तथा अपने समीपवर्ती क्षेत्रों को ले डूबेगा। भावनाओं को दबा दिया जाये तो वे मानवीय व्यक्तित्व में एक अदृश्य कुहराम खड़ा करेंगे, जो नेत्रों को दिखाई तो नहीं पड़ता पर मानसिक असंतुलन के रूप में उसकी प्रतिक्रियाएँ सामने आती हैं। अपना आपा खण्डित होता प्रतीत होता है। दिशा दे देने पर नदियों के पानी से विभिन्न कार्य किए जाते हैं। बिजली उत्पादन से लेकर सिंचाई आदि का प्रयोजन पूरा होता है। भावों एवं विचारों को दिशा दी जा सके तो उनसे अनेक प्रकार के रचनात्मक काम हो सकते हैं। कला, साहित्य, कविता, विज्ञान के अविष्कार इन्हीं के गर्भ में पकते तथा प्रकट होते हैं।

भावनाओं एवं विचारों में में से कुछ ऐसे होते हैं जिनकी अभिव्यक्ति हानिकारक है पर उन्हें दबाव से तनाव की स्थिति आती है इससे बचाव का तरीका यह है कि भावनाओं को दूसरे रूप में अभिव्यक्त होने दिया जाए।

प्रश्न

(क) मन:शास्त्री मनुष्य की व्यक्तिगत समस्याओं का कारण किसे मानते हैं? (2)

(ख) जीवन की सरसता का क्या आधार है? (2)

(ग) भावनाओं को दबाने का क्या परिणाम होता है तथा भावों और विचारों को दिशा कैसे दी जा सकती है? (2)

(घ) 'साधारण' एवं 'संतुलन' शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। (1)

(ङ) 'अभिव्यक्ति' एवं 'स्वाभाविकता' शब्दों में क्रमश: उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग कीजिए। (1)

(च) अवतरण से 'आधारित' एवं 'शक्ति' शब्दों के समानार्थी शब्द छाँटिए। (1)

(छ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

अपठित काव्यांश बोध

1. काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके अर्थ अर्थात् कवि क्या कहना चाहता है उस भाव को समझें।
2. याद रखें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर काव्यांश की पंक्तियों को हुबहू उतार कर न दें अपितु उन पंक्तियों का सरल अर्थ समझकर अपनी भाषा (सरल, बोलचाल की) में दें।
3. उत्तर सरल और संक्षिप्त हों।
4. अगर किसी पंक्ति का आशय या भावार्थ लिखने के लिए आ जाए तो भाव संक्षेप में स्पष्ट करें, अपने विचार न लिखें, मौलिकता बनाए रखें।
5. उपमा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, यमक, श्लेष, पुनरूक्ति प्रकाश इत्यादि अलंकारों का पूर्व अभ्यास होना अति आवश्यक है।

उदाहरण–

प्रश्न– निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में,
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डरकर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से, श्रमजल से।
ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा–
करते निरुद्यमी प्राणी,
धोते वीर कु-अंक भाल के
बहा ध्रुवों से पानी।
भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का,
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।

(क) प्रकृति मनुष्य के आगे कब झुकती है? (1)

(ख) भाग्य-लेख कैसे लोग पढ़ते हैं? (1)

(ग) भाग्यवाद को 'पाप का आवरण' और 'शोषण का शस्त्र' क्यों कहा गया है? (1)

(घ) इस काव्यांश से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? (1)

(ङ) 'प्रकृति नहीं डर कर झुकती है' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए। (1)

उत्तर-

(क) जब व्यक्ति उद्‌यम और परिश्रम करता है तब प्रकृति उसके सामने झुकती है।

(ख) जो लोग भाग्य के भरोसे रहते हैं और परिश्रम नहीं करते, वही भाग्य के लेख को पढ़ते हैं।

(ग) भाग्यवाद की ओट में ही पाप को बढ़ावा मिलता है तथा इसका सहारा लेकर लोग गरीबों का शोषण करते हैं इसलिए भाग्यवाद को 'पाप का आवरण' ओर 'शोषण का शस्त्र' कहा गया है।

(घ) सफलता भाग्य के भरोसे रहकर नहीं अपितु परिश्रम करने से मिलती है।

(ङ) मानवीकरण अलंकार

नोट-

1. उपयुक्त उत्तरों में काव्य पंक्तियों को उत्तर के रूप में हूबहू न उतार कर उनका भाव समझकर, सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है।
2. अलंकारों के पूर्वाभ्यास के कारण ही अलंकार की पहचान संभव हुई।
3. उत्तर संक्षिप्त एवं मौलिक हैं।

अभ्यास कार्य

(1)

मत काटो तुम ये पेड़
हैं ये लज्जावसन
इस माँ वसुन्धरा के।
इस संहार के बाद
अशोक की तरह
सचमुच तुम बहुत पछताओगे
बोलो फिर किसकी गोद में
सिर छिपाओगे?
शीतल छाया
फिर कहाँ से पाओगे?

कहाँ से पाओगे फिर फल?
कहाँ से मिलेगा
शस्य-श्यामला को
सींचने वाला जल?
रेगिस्तानों में
तब्दील हो जाएँगे खेत
बरसेंगे कहाँ से
उमड़-घुमड़कर बादल?
थके हुए मुसाफिर
पाएँगी कहाँ से
श्रमहारी छाया?

प्रश्न-

(क) कवि अशोक की तरह पछताने की बात क्यों करता है? (1)

(ख) कवि ने 'लज्जावसन' किसे कहा है? ये 'लज्जावसन' किसके हैं? (1)

(ग) पेड़ों के कटने से क्या कुप्रभाव पड़ेगा? (1)

(घ) 'रेगिस्तानों में तब्दील हो जाएँगे खेत' से कवि का क्या आशय है? (1)

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक लिखिए। (1)

(2)

जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक न एक सभी को, सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवन-भर आतप वह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।
रवि जग में शोभा सरसाता, सोम सुधा बरसाता।
सब हैं लगे कर्म में, कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता।
है उद्देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अंत कर्ममय तन का।

प्रश्न-

(क) इस संसार में सचर और अचर क्या कर रहे हैं तथा उन्हें क्या धुल है? (1)

(ख) सूर्य, चन्द्र और पत्ता किस प्रकार कर्मरत हैं? (1)

(ग) तिनका किस प्रकार अपने जीवन को सार्थक करता है? (1)

(घ) काव्यांश में निहित उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। (1)

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटिए। (1)

(3)

निर्झर की बूँदे ही गुमसुम, चट्टानों में कितनी मचलीं
पत्थर तोड़ कूदतीं झर-झर, झर-झर-झर निर्भय निकलीं।
अब आगे क्या? किसी गर्त में पड़ सकती थीं।
बन न सकीं तो गड्ढे में ही सड़ सकती थीं।
नहीं रुकेंगी, नहीं झुकेंगी, आगे बढ़ती सबसे कहतीं-
''गति है तो जीवन है'' कहकर मार्ग बनाती, बहती रहतीं,
लात मारकर पत्थर जैसी बाधा को जिसने ललकारा।
वही आज इठलाती फिरती गंगा-यमुना जैसी धारा।
आँधी तूफानों में निश्चय अपना सीना तान के निकलें।।

प्रश्न-

(क) जीवन में गति न हो तो क्या परिणाम हो सकता है? (1)

(ख) जीवन के संदर्भ में ''आँधी-तूफान'' का क्या अर्थ है? (1)

(ग) गंगा-यमुना की जलधारा के इठलाने का क्या कारण है? (1)

(घ) निर्झर की बूँदों से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? (1)

(ङ) 'झर-झर' में कौन सा अलंकार है? (1)

पत्र लेखन

पत्र का प्रारूप-

1. सर्वप्रथम पत्र के बाईं तरफ 'सेवा में' लिखा जाता (वर्तमान समय में धीरे-धीरे 'सेवा में' का प्रचलन कम होता जा रहा है।)
2. तत्पश्चात् 'विषय' शीर्षक के अन्तर्गत संक्षेप में पत्र का प्रयोजन लिखा जाता है।
3. 'महोदय' संबोधन के पश्चात सरल, स्पष्ट भाषा में अपनी बात कही जाती है।
4. पत्र के समापन में पत्र के बाईं तरफ भवदीय लिखा जाता है, जिसके नीचे पत्र लिखने वाले के हस्ताक्षर होते हैं। हस्ताक्षर के ठीक नीचे कोष्ठक में पत्र लिखने वाले का नाम लिखा जाता है। नाम के नीचे पता एवं दिनांक अंकित करें।

स्मरणीय तथ्य-

1. 'सेवा में' के पश्चात् अल्पविराम (,) का प्रयोग न करें।
2. 'विषय' शीर्षक के अन्तर्गत विषय का निरूपण करने के पश्चात् 'के लिए पत्र' का प्रयोग न करें।

   उदाहरण- अगर बिजली की समस्या के लिए पत्र लिख रहे हैं तो विषय होगा- 'बिजली की समस्या के संदर्भ में' न कि 'बिजली की समस्या के लिए पत्र।'
3. एक पत्र एक ही उद्‌देश्य या एक संदर्भ में लिखा जाना चाहिए।
4. भाषा सरल और शिष्ट हो, बनावटीपन न हो।
5. कम शब्दों में अधिक बात कहने की क्षमता हो।
6. यदि किसी दैनिक समाचारपत्र के संपादक को पत्र लिखना हो तो छात्र किसी भी समाचारपत्र के नाम का प्रयोग कर सकते हैं जैसे- अमर-उजाला, जनसत्ता, नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण आदि। छात्र, सेवा में संपादक, दैनिक समाचारपत्र का प्रयोग बिल्कुल न करें।
7. संपादक, स्वास्थ्य अधिकारी, डाकपाल, पुलिस अधीक्षक, कार्यपालक अभियंता इत्यादि को पत्र लिखते समय प्रथम एक दो पंक्तियों में अपना परिचय दें, तत्पश्चात् अगले अनुच्छेद में विषय का निरूपण तथा अंतिम अनुच्छेद में विषय से संबंधित समस्या का निराकरण करने का आग्रह करें।
8. संपादक से समस्या का निराकरण करने का आग्रह न करके जनहित में पत्र प्रकाशित करने का आग्रह करें।
9. अपने नाम की जगह 'क ख ग' तथा पते के स्थान पर 'परीक्षा भवन' लिखने का अभ्यास करें अथवा प्रश्नपत्र में दिए गए नाम और पते का प्रयोग करें।
10. दिनांक लिखते समय महीने का नाम शब्दों में लिखें जैसे 10.04.2011 न लिखकर 10 अप्रैल, 2011 लिखें।

11. रोज़गारपरक आवेदन पत्र लिखते समय संबंधित विज्ञापन का उल्लेख अवश्य करें तथा स्ववृत्त अवश्य संलग्न करें।

12. पद के साथ श्री/श्रीमती न लगाएं (जैसे- श्री स्वास्थ्य अधिकारी, श्रीमती प्रधानाचार्या)

उदाहरण- (1)

अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों का वर्णन करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सेवा में
संपादक
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-110001

विषय- ''बिजली संकट के संदर्भ में''

महोदय

मैं मध्य दिल्ली के दरियागंज क्षेत्र का निवासी हूँ। मध्य दिल्ली में विद्युत की कमी एक गंभीर समस्या है। इससे सारा क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित है। पिछले कुछ महीनों में बिजली की आपूर्ति माँग के अनुरूप नहीं रही। गर्मियों में क्या स्थिति रही होगी, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। आजकल दिन में छह:-सात घंटे का 'कट' लगता है। उसके बाद भी जो बिजली आती है, उसका वोल्टेज बहुत कम होता है। बिजली की आँख-मिचौनी से सभी परेशान हैं। विद्यार्थी तो विशेष रूप से परेशान हैं।

बाजारों में दुकानदारों ने बिजली के अभाव में बड़े-बड़े जनरेटर सेट्स लगा दिए हैं जो अत्यधिक प्रदूषण फैलाते हैं। उनके पास से गुजरना कठिन होता है। रात्रि के समय गलियों में प्रकाश की व्यवस्था ठीक ने न होने के कारण दुर्घटनाओं की आशंका रहती है। इसके अलावा, चोरी की घटनाएँ भी बढ़ रही हैं।

आज राष्ट्र को आजाद हुए पचास वर्ष से ज्यादा हो चुके हैं। दिल्ली देश की राजधानी है, परंतु फिर भी यहाँ बिजली की कमी है। सरकार बिजली उत्पादन बढ़ाने की घोषणा करती है, परंतु नतीजा वही रहता है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप जनहित में मेरा यह पत्र अवश्य प्रकाशित करेंगे।

भवदीय
क, ख ग
परीक्षा भवन
नई दिल्ली-110002
दिनांक- 7 अगस्त, 2011

उदाहरण- (2)

अपने क्षेत्र की अनियमित डाक वितरण समस्या के संदर्भ में डाकपाल को एक पत्र लिखिए।

सेवा में
डाकपाल
मुख्य डाकघर, गोल मार्केट
नई दिल्ली-110001

विषय- ''अनयिमित डाक वितरण के संदर्भ में''

महोदय

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान इस क्षेत्र में डाक-वितरण में हो रही अनियमितताओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। गत दो माह से हमारे गोल मार्केट क्षेत्र में डाक-वितरण सुचारू रूप से नहीं हो रहा है। इस क्षेत्र में कार्यरत डाकिया अपने कर्तव्य का पालन ठीक ढंग से नहीं कर रहा है। वह कई-कई दिन की डाक एक साथ वितरित कर रहा है। कभी-कभी अत्यन्त आवश्यक पत्र मिल ही नहीं पाते। किसी व्यक्ति का पत्र किसी दूसरे व्यक्ति के घर में डाल देता है। कभी वह गली में खेलते हुए बच्चों के हाथ में पत्र दे जाता है या फिर खुले बरामदे में फेंक जाता है। प्राय: इस क्षेत्र के प्रत्येक घर पर लैटर-बाक्स लगे हुए हैं, फिर भी वह पत्रों को बाहर फेंक जाता है और पत्र पानी आदि में पड़कर खराब हो जाते हैं।

आजकल पत्रों का अत्यधिक महत्व है। समय पर पत्र न मिलने से कई बार अनर्थ हो जाता है। किसी की साक्षात्कार की तिथि निकल जाती है तो किसी का विवाह में सम्मिलित होने का अवसर निकल जाता है, जिससे संबंधियों में परस्पर मन मुटाव हो जाता है। प्रत्येक त्योहार पर डाकिया कुछ इनाम देने के लिए बाध्य करता है। ऐसा न करने पर पत्र इधर-उधर डाल जाता है। सभी क्षेत्रवासी इस समस्या से परेशान हैं।

अत: आपसे निवेदन है कि संबंधित डाकिए को यथोचित निर्देश देकर, इस क्षेत्र में डाक वितरण को सुचारू बनाने का कष्ट करें।

भवदीय
क, ख ग
परीक्षा भवन
नई दिल्ली-110002
दिनांक- 7 अप्रैल, 2011

उदाहरण- (3)

'इंडिया केमिकल्स लिमिटेड' 36, न्यूलिंक रोड, मुंबई में रिक्त मार्केटिंग एक्ज़्क्यूटिव के पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

सेवा में
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
मानव संसाधन विभाग
इंडिया केमिकल्स लिमिटेड
36, न्यू लिंक रोड
अंधेरी, मुंबई-400053

विषय- ''मार्केटिंग एक्ज़्क्यूटिव पद के लिए आवेदन''

महोदय

आज दिनांक 16 अप्रैल, 2006 को दिल्ली से प्रकाशित नवभारत टाइम्स के प्रात: संस्करण में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपकी कंपनी को मार्केटिंग एक्जक्यूटिव की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मेरा स्ववृत्त इस आवेदन के साथ संलग्न है।

स्ववृत्त

नाम	:	नरेंद्र कुमार
पिता	:	सुरेश कुमार
माँ का नाम	:	शबनम
जन्म तिथि	:	18 नवम्बर, 1982
वर्तमान पता	:	डी 72, पाकेट चार, मयूर विहार (फ़ेज एक), दिल्ली-110092
स्थायी पता	:	वही
टेलीफोन नं.	:	011-22718296
मोबाइल नं.	:	9868234859
ई-मेल	:	85narendra@yahoo.com

शैक्षणिक योग्यताएं

क्र. सं.	**परीक्षा/डिग्री/ डिप्लोमा**	**वर्ष**	**विद्यालय/बोर्ड/ महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय**	**विषय**	**श्रेणी**	**प्रतिशत**
1.	दसवीं कक्षा	1997	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेजी, हिंदी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	93%

2.	बारहवीं	1999	वही सीबीएसई	अंग्रेजी, भौतिकी, रसायन विज्ञान जीव विज्ञान, गणित	प्रथम	95%
3.	बी.एस.सी (आनर्स)	2002	हिंदू कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	कम्प्यूटर साइंस	प्रथम	84%
4.	एम.बी.ए.	2004	आदर्श इन्स्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट		प्रथम	85%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- कम्प्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफिस तथा इंटरनेट)।
- फ्रांसीसी भाषा का कार्य योग्य ज्ञान।

उपलब्धियां

- अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (वर्ष 2001) में प्रथम पुरस्कार
- राजीव गांधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता (2002) में प्रथम पुरस्कार
- विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कप्तान

कार्येतर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- उद्योग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अखबारों का नियमित पाठन
- देश भ्रमण का शौक
- इंटरनेट सर्फ़िंग
- फुटबाल और क्रिकेट में अभिरुचि

निवेदक/आवेदक
क, ख ग
परीक्षा भवन
नई दिल्ली-110001
दिनांक- 5 मई, 2011

अभ्यास कार्य

1. बढ़ती महँगाई पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए एवं सुझाव भी दीजिए।
2. आपके क्षेत्र में आभूषण झपटमारी की घटनाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इसकी शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए।
3. आपके घर का पानी का मीटर बंद हो गया है। शिकायत करने पर भी अभी तक ठीक नहीं हुआ है। इस संदर्भ में 'दिल्ली जल बोर्ड' के संबंधित अधिकारी को एक पत्र लिखिए।
4. बस कंडक्टर (सह-चालक) के साहसिक कार्य के कारण कई यात्रियों की जान बची। इस संदर्भ में उसे पुरस्कृत करने का अनुरोध करते हुए दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।
5. सार्वजनिक सूचना-पट्टों पर लिखी अशुद्ध हिन्दी की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
6. 'सर्वोदय बाल विद्यालय राउज ऐवन्यू' में शारीरिक शिक्षक का एक पद रिक्त है। विज्ञापन के अनुसार अपनी योग्यता का विवरण प्रस्तुत करते हुए शिक्षा-निदेशक को आवेदन पत्र प्रस्तुत कीजिए।

निबंध-लेखन

छात्र निबंध लेखन की गंभीरता को समझें क्योंकि अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का यह सशक्त माध्यम है। निबंध लेखन में निबंध लिखने वाले का व्यक्तित्व झलकता है। एक अच्छा निबंध लिखने के लिए निम्नलिखित स्मरणीय बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

स्मरणीय बिंदु-

1. निबंध लेखन के लिए प्रश्नपत्र में विकल्प होते हैं। दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखना होता है इसलिए ऐसे विषय को चुने जिस विषय में आप अपने विचार भली प्रकार से व्यक्त कर सकें।
2. तत्पश्चात् अपने विचारों को भूमिका, विषयवस्तु एवं उपसंहार के अन्तर्गत बाँटें।
3. भूमिका आकर्षक एवं रोचक होनी चाहिए। अगर विषय से संबंधित कोई काव्यपंक्ति, सूक्ति या घटना याद हो तो निबंध का प्रारंभ उसी से करें। तत्पश्चात् विषय का अर्थ स्पष्ट करें।
4. विषयवस्तु के अंतर्गत विषय का विस्तार होता है। याद रखना आवश्यक है कि विषय का विस्तार अनुच्छेदों में हो तथा एक अनुच्छेद में एक ही भाव या विचार का प्रस्तुतिकरण हो।
5. अनुच्छेदों में क्रम संख्या न लिखें और न ही उपशीर्षक लिखें।
6. अगर विषय के विस्तार में किसी समस्या के कारणों का उल्लेख हो तो समाधान भी दें। विषयानुसार लाभ-हानि, महत्व-दुष्प्रभाव का भी वर्णन हो।
7. विषय के अनुरूप प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करें।
8. अनुच्छेद इस प्रकार लिखें कि विचारों में क्रमबद्धता बनी रहे।
9. उपसंहार के अंतर्गत अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करें। निष्कर्ष इतना प्रभावशाली लिखा हुआ होना चाहिए कि वह पढ़ने वाले पर अपनी छाप छोड़ सके।

अभ्यास कार्य

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निबंध

1. राष्ट्र निर्माण में साहित्यकार की भूमिका
2. साहित्य समाज का दर्पण है
3. संस्कृति और समाज
4. पाश्चात्य संस्कृति का युवा वर्ग पर प्रभाव

लोकोक्तियों पर आधारित निबंध

1. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
2. दैव दैव आलसी पुकारा
3. कागा काको धन हरै, कोयल काकू देत
4. जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान

समस्या प्रधान निबंध

1. भ्रष्टाचार का दानव
2. महानगरीय जीवन : अभिशाप या वरदान
3. वरिष्ठ नागरिक - कितने सुरक्षित
4. निरक्षरता - एक अभिशाप

विज्ञान संबंधी निबंध

1. अंतरिक्ष विज्ञान और भारत
2. विज्ञान वरदान या अभिशाप
3. सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति
4. धर्म और विज्ञान

नारी विषयक निबंध

1. कामकाजी नारी की समस्याएँ
2. नारी शिक्षा: आज की आवश्यकता
3. महानगरों में असुरक्षित नारी
4. भारतीय समाज में नारी का स्थान

भारत संबंधी निबंध

1. समस्याओं से जूझता भारत
2. राष्ट्र, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयता
3. भारतीय गाँवों का बदलता स्वरूप
4. भारत की समन्वयवादी संस्कृति

युवा-पीढ़ी से संबंधित निबंध

1. छात्र असंतोष-कारण और समाधान
2. केबल संस्कृति और युवा पीढ़ी
3. विद्यार्थी और राजनीति
4. युवा पीढ़ी पर चलचित्रों का प्रभाव

विविध विषय

1. शिक्षा और व्यवसाय
2. विज्ञापन का फैलता मकड़जाल
3. नैतिक शिक्षा की प्रासंगिकता
3. सांप्रदायिकता: एक अभिशाप
4. हमारे पर्व: हमारी संस्कृति
5. मानसिक तनाव से घिरा आज का युवावर्ग
6. धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता
7. हमारे बिखरते परिवार
8. उपभोक्ता संस्कृति का बढ़ता प्रभाव
9. व्यायाम और स्वास्थ्य
10. संपर्क भाषा हिंदी
11. बाल मजदूरी-एक अभिशाप
12. शिक्षा का अधिकार कानून : कितना सार्थक

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-1
विषय : हिन्दी (ऐच्छिक)
कक्षा-XI

समय : 3 घण्टे **अ.अं. 90**

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें-

व्यक्ति, चाहे वह शहर में रहता हो या गाँव में, महल में रहता हो या झोपड़ी में, बहुमंजिली इमारत के फ्लैट में रहता हो या स्वतंत्र बंगले में, वह किसी न किसी का पड़ोसी अवश्य है। बिना पास-पड़ोस के मनुष्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

एक समय था जब एक ही गाँव, शहर अथवा गली मुहल्ले में रहने वालों के बीच इतनी घनिष्ठता थी कि वे एक दूसरे के यहाँ बाहर से आए लोगों को उनके गंतव्य तक पहुँचा देते थे अथवा उनका पता बता देते थे। क्योंकि वे मिलनसार थे, उनके बीच अपनापन था, वे एक दूसरे के सुख-दुख में सहभागी होते थे। लेकिन आज परिदृश्य पूरी तरह बदला हुआ है। एक ही इमारत में रहने वाले यह नहीं जानते कि पास वाले फ्लैट में कौन रहता है? तो गली मोहल्लों में रहने वालों से जान-पहचान होने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। वे रहते तो पास-पास हैं, लेकिन अजनबियों की तरह। क्या इसी का नाम पड़ोस है?

आज व्यस्त और भागमभाग भरे शहरी और महानगरीय जीवन में व्यक्ति अपने पास रहने वाले तक को नहीं पहचानता। आखिर पास रहकर भी यह दूरी क्यों?

आज महानगरों में रहने वाले लोग अपने आप में मस्त रहते हैं। उनका अपना एक अलग 'सोशल सर्कल' होता है, उसी में उनकी बैठक है, आना-जाना है। उनकी दुनिया वहीं तक सीमित है। उन्हें अपने आस-पास की दुनिया से कोई सरोकार नहीं। आस पड़ोस में अथवा अपने बहुमंजिले भवन में कौन रहता है? कौन नया व्यक्ति रहने आया है? और कौन छोड़कर चल गया है इससे किसी को कोई मतलब नहीं।

(क) आज का महानगरीय जीवन कैसा है? (2)

(ख) व्यस्तता का शहरी जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? (2)

(ग) पुराना समय कैसा था? (2)

(घ) आज के महानगरीय लोग कैसे हैं? (2)

(ङ) किसके बिना मनुष्य जीवन की कल्पना नहीं कर सकता? (1)

(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखें। (1)

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

नाम अलग हैं देश-देश के, पर वसुंधरा एक है,
फल-फूलों के रूप अलग पर भूमि उर्वरा एक है,

धरा बाँटकर हृदय न बाँटो, दूर रहो संहार से।।
कभी न सोचो तुम अनाथ, एकाकी या निष्प्राण रे!
बूँद-बूँद करती है मिलकर, सागर का निर्माण रे!
लहर लहर देती संदेश यह, दूर क्षितिज के पार से।।
धर्म वही है, जो करता है, मानव का उद्धार रे!
धर्म नहीं वह जो कि डाल दे, दिल में एक दरार रे!
करो न दूषित आँगन मन का, नफरत की दीवार से।।
सीमाओं को लांघ न कुचलो, स्वतंत्रता का शीश रे!
बमबारी की स्वरलिपि में मत लिखो शांति का गीत रे!
बँध न सकेगी लय गीतों की, ऐसे स्वर विस्तार से।।
राजनीति में स्वार्थ न लाओ, भरो न विष संसार में,
पशुता भरकर संस्कृति में, मत भरो वासना प्यार में,
करो न कलुषित जन-जीवन तुम, रूप प्रणय व्यापार से।।

(क) लहरें क्या संदेश दे रही हैं? 1

(ख) धर्म की पहचान क्या है? 1

(ग) शांति गीत कैसा होना चाहिए? 1

(घ) कवि क्या करने को मना करता है? 1

(ङ) राजनीति, संस्कृति और जन-जीवन के लिए क्या-क्या घातक है? 1

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबंध लिखिए।

1. राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान
2. समाचारपत्र और उसके लाभ
3. साहित्य समाज का दर्पण है
4. बिखरता पारिवारिक जीवन

4. अपने शहर की कानून व्यवस्था की निरंतर बिगड़ती स्थिति का विवरण देते हुए उससे निपटने के लिए पुलिस आयुक्त को पत्र लिखें।

अथवा

'दैनिक भास्कर' को अपने खेल विभाग के लिए संवाददाताओं की आवश्कता है। इस पद हेतु खेलों का ज्ञान और उनमें रुचि के साथ-साथ हिन्दी भाषा में लेखन अभ्यास तथा अच्छी गति हो। इस पद के लिए प्रधान सम्पादक को आवेदन पत्र लिखें।
(स्ववृत्त संलग्न करें)

5. (क) पटकथा क्या है? कथा और पटकथा में अन्तर स्पष्ट करें।

अथवा

प्रतिवेदन क्या है? प्रतिवेदन के प्रकारों को स्पष्ट करें।

(ख) आधुनिक जन संचार माध्यमों को स्पष्ट करें।

अथवा

6. किसी एक काव्यांश की सप्रंग व्याख्या कीजिए-

सॉँसनि ही सौं समीर गयो अरु, आँसुन ही सब नीर ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो, अरु भूमि गई तन की तनुता करि।।
'देव' जियै मिलिबेही की आस कि, आसहू पास आकश रह्यो भरि,
जा दिन तै मुख फेरि हरै हँसि, हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि।।

अथवा

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना।
जाग तुझको दूर जाना!
अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कंप हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले;
आज पी आलोक को डोले तिमिर की छोर छाया,
जागकर विद्युत-शिखाओं में निठुर तूफ़ान बोले!
पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना।
जाग तुझको दूर जाना!

7. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 3x3 = 6

(क) 'सपना' सवैये में गोपी की दोनों अवस्थाओं को स्पष्ट करें। साथ ही स्पष्ट करें कि नींद टूटने को भाग सो जाना क्यों कहा गया है?

(ख) 'संध्या के बाद' कविता के आधार पर 'कर्म और गुण के समान ही सकल आय व्यय का हो वितरण'-पंक्ति के माध्यम से कवि कैसे समाज की ओर संकेत कर रहा है?

(ग) 'घर में वापसी' कविता के आधार पर निम्न पंक्ति का आशय स्पष्ट करें -
'पत्नी की आँखें आँखे नहीं हाथ हैं,
जो मुझे थामे हुए हैं।'

8. निम्नलिखित क्व्यांशों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए- 3x3 = 6

(क) कोमल तन आज्ञा करवावति, कटि टेढ़ौ ह्वै आवति।
अति अधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति।

(ख) सिमट पंख सांझ की लाली
जा बैठी अब तरु शिखरों पर
ताम्रपर्ण पीपल से, शतमुख
झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर।
ज्योति स्तंभ-सा धंस सरिता में
सूर्य क्षितिज पर होता ओझल,

9. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 4

(क) ''मैं आज मनुष्य को एक घने अंधकार में देख रहा हूँ। उसके भीतर कुछ बुझ गया है। यह युग ही अन्धकारमय है। यह सर्वग्राही अन्धकार सम्पूर्ण विश्व को अपने उदर में छिपाए है। आज मनुष्य इस अन्धकार से घबरा उठा है। वह पथभ्रष्ट हो गया है। आज आत्मा में भी अन्धकार है। अन्तर की आँखें ज्योतिहीन हो गई हैं। वे उसे भेद नहीं पातीं। मानव-आत्मा अन्धकार में घुटती है। मैं देख रहा हूँ, मनुष्य की आत्मा भय और पीड़ा से त्रस्त है।''

अथवा

चारों ओर आँख उठाकर देखिए तो बिना काम करने वालों की ही चारों ओर बढ़ती है। रोज़गार कहीं कुछ भी नहीं है, अमीरों की मुसाहबी, दल्लाली या अमीरों के नौजवान लड़कों को खराब करना या किसी की जमा मार लेना, इसके सिवा बतलाइए कौन रोज़गार है जिससे कोई रुपया मिलें। चारों ओर दरिद्रता की आग लगी हुई है। किसी ने बहुत ठीक कहा है कि दरिद्र, कुटुंबी इस तरह अपनी इज्जत बचाए फिरता है, जैसे लाजवंती कुल की बहू फटे कपड़े में अपना अंग छिपाए रहती है। वही दशा हिन्दुस्तान की है।

10. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 3x2 = 6

(क) 'बच्चे हामिद ने बूढे हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई'-ईदगाह पाठ के आधार पर कथन का आशय स्पष्ट करें।

(ख) 'गूँगा दया या सहानुभूति नहीं, अधिकार चाहता था'- गूँगे कहानी के आधार पर कथन का आशय स्पष्ट करें।

(ग) 'उसकी पूरी जिंदगी भूल का एक नक्शा है' - इस कथन द्वारा लेखक व्यक्ति के बारे में क्या कहना चाहता है?

11. पद्माकर अथवा महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

हरिशंकर परसाई अथवा सुधार अरोड़ा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

12. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए- 4x2 = 8

(क) एकांकी (अण्डे के छिलके) में अम्माँ की जो तस्वीर उभरती है, अंत में वह बिल्कुल बदल जाती है- टिप्पणी करें।

(ख) 'लेखक जन्मजात कलाकार है' - यह तथ्य किस प्रकार उद्घाटित होता है।

(ग) नाना के घर किन-किन बातों का निषेध था? शरत् को उन निषिद्ध कार्यो को करना क्यों प्रिय था? ('दिशाहारा पाठ' के आधार पर उत्तर दें।)

13. (क) कला के प्रति लोगों का नजरिया पहले कैसा था? उसमें अब क्या परिवर्तन आया है? 4

(ख) धूमपान की हानियाँ बताते हुए सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध की सरकारी नीति का औचित्य स्पष्ट करें। 3

अथवा

शरत् की रचनाओं में उनके जीवन की अनेक घटनाएँ और पात्र सजीव हो उठे हैं। पाठ 'दिशाहारा' के आधार पर विवेचना कीजिए।

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-2
विषय : हिन्दी (ऐच्छिक)
कक्षा-XI

समय : 3 घण्टे **अ.अं. 90**

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

हिन्दी रंगमंच में गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। रंग महोत्सव के अवसर पर रंगमंच पर नाटकों का प्रदर्शन होता है हिन्दी रंगमंच से अनेक अनूदित नाट्य रचनाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का अभाव है। रंगमंच की माँग पर हिन्दी लेखकों ने भी लिखना आरम्भ किया। अधिकांश लेखक, कहानीकार जब नाटक की रचना करते हैं तो कई बार विधागत भेद को भुला देते हैं। कहानी के पात्रों के सपाट संवादों को कह देने भर से वह कथावस्तु नाटक नहीं बन जाती। रंग नाटक वही होता है, जिसे मंच पर भली भाँति खेला जा सके। कविता या संगीत आदि के माध्यम से काव्य को समास शैली में प्रस्तुत करने पर भी कोई रचना नाटक नहीं हो जाती।

नाटक का अपना विधागत स्वरूप होता है। यह कहानी अथवा कविता के स्वरूप से भिन्न होता है। अभिनय प्रदर्शन, मंच सज्जा और नाटकीय कार्य व्यापार की प्रस्तुति से रंग नाटक बनता है। अत: रंग नाटक की रचना को रंग वस्तु की अपेक्षाओं के रूप में ही जाना पहचाना जा सकता है। कहानी का रूपांतरण हो या मौलिक रचना नाटक आपके रूप और रंग से देश में एक अलग साहित्यिक सत्ता रखता है।

प्रश्न-

(1) हिन्दी रंगमंच पर अनूदित नाटकों की प्रस्तुति का क्या कारण है? 2

(2) कहानी के पात्रों के सपाट संवादों से रंग नाटक क्यों नहीं बनता? 2

(3) रंग नाटक की वस्तु को कैसे पहचाना जा सकता है? 2

(4) रंग नाटक से क्या तात्पार्य है? 2

(5) 'साहित्यिक' शब्द में से प्रत्यय अलग कर एक नवीन शब्द बनाए। 1

(6) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए 1

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 1

तिनका तिनका लाकर चिड़िया
रचती है आवास नया।
इसी तरह से रच जाता है
सर्जन का आकाश नया।
मानव और दानव में यूँ तो

भेद नजर नहीं आएगा
एक पोंछता कहते आँसू
जी भर एक रुलाएगा।

रचने से ही आ पाता है
जीवन में विश्वास नया
कुछ तो इस धरती पर केवल
खून बहाने आते हैं।
आग बिछाते हैं राहों में
फिर खुद ही जल जाते हैं।

जो होते खुद को मिटाने वाले
वे रचते इतिहास नया।

मंत्र नाश का पढ़ा करें कुछ
द्वार द्वार पर जा करके
फूल खिलने वाले रहते
घर घर फूल खिला करके।

(क) सर्जन का नया आकाश कैसे बनता है? 1

(ख) मानव और दानव में क्या अन्तर है? 1

(ग) जीवन में नया विश्वास कैसे आता है? 1

(घ) अत्याचारी का अन्त क्या होता है? 1

(ङ) नाश का मंत्र पढ़ने और फूल खिलाने से क्या तात्पर्य है? 1

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबंध लिखिए। 10

(क) भारत में राष्ट्रीय एकता का स्वरूप

(ख) भारत में बाल मजदूरी समस्या और समाधान

(ग) विज्ञापन के लाभ और हानियाँ

(घ) आतंकवाद समस्या और निराकरण

4. दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक को बसों में सुधार करने हेतु अनुरोध पत्र लिखिए। 5

अथवा

नगर निगम कार्यालय में सहायक पद हेतु स्ववृत्त सहित आवेदन पत्र लिखिए।

5. कार्यसूची और कार्यवृत्त को परिभाषित करते हुए दोनों में अन्तर स्पष्ट कीजिए। 5

6. जनसंचार किसे कहते हैं? जनसंचार के आधुनिक माध्यमों पर टिप्पणी कीजिए।

अथवा

किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(क) प्रेस विज्ञप्ति

(ख) अनुस्मारक

(ग) टिप्पण

(घ) परिपत्र

7. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या करें। 8

भौरंन को गुंजन बिहार बन कुंजन में
मंजुल मलारन को गावनो लागत है।
कहैं पद्माकर गुमानहूँ तैं मानहुँ तैं
प्रानहूँ वैं प्यारो मनभावनो लागत है।
मोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन
हिंडोरन को बृन्द छवि छावनो लगत है
नेह सरसावन में मेघ बरसावन में
सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है।

अथवा

वज्र का उर एक छोटे अश्रु-कण में धो गलाया,
दे किसी जीवन सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?
अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना?

8. निम्नलिखित काव्यांशों का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 3x2=6

(क) झहरि-झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि-घहरि घटा घेरी है, गगन में।
आनि कह्यौ स्याम मो सौं चलौ झूलिबे को आज'
फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं।।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में।
आँख खोलि देखौं तो न घन हैं, न घनश्याम,
वेई छाई बूँदें मेरे आंसुँ ह्वै दृगन में।।

(ख) जागृति नहीं अनिद्रा मेरी,
नहीं गई भव निशा अंधेरी।
अंधकार केंद्रित धरती पर,

देती रही ज्योति चकफेरी!

9. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 3x2=6

(क) 'मुरली तऊ गुपालहिं भावति' पद के आधार पर 'गिरिधर नार नवावति' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'हस्तक्षेप' कविता सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध की कविता है।' - स्पष्ट कीजिए

(ग) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के आधार पर बताइए कि बादलों का वर्णन करते हुए कवि को कालिदास की याद क्यों आती है?

10. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1888 में ज्योतिबा फुले को 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया तो उन्होंने कहा- ''मुझे 'महात्मा' कहकर मेरे संघर्ष को पूर्ण विराम मत दीजिए। जब व्यक्ति मठाधीश बन जाता है तब वह संघर्ष नहीं कर सकता। इसलिए आप सब साधारण जन ही रहने दें, मुझे अपने बीच से अलग न करें।'' महात्मा ज्योतिबा फुले की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे जो कहते थे, उसे अपने आचरण और व्यवहार में उतारकर दिखाते थे।

अथवा

चाँदनी में एक जादू होता है। लेकिन यह जादू अलग अलग लोगों के लिए अलग अलग है। न मालूम हमारी बात कहाँ से शुरू हुई। मैं डर-डर कर उससे बात करता जा रहा था। कहीं ऐसा न हो कि उसे जाने अनजाने मुझसे कोई चोट पहुँचे क्योंकि उसने अपने विचारों के लिए खून बहाया है, जिन्दगी खत्म की है।

11. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3x2=6

(क) 'दोपहर का भोजन' शीर्षक किस प्रकार से सार्थक है।?

(ख) 'टार्च बेचने वाले' पाठ के आधार पर निम्न कथन को स्पष्ट करें-

''भव्य पुरुष ने कहा- ''जहां अंधकार है वहीं प्रकाश है।''

(ग) 'खानाबदोश' कहानी में आज के समाज की किन-किन समस्याओं को रेखांकित किया गया है?

12. देव अथवा महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

रांगेय राघव अथवा भारतेंदु हरश्चिन्द्र का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

13. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 4x2=8

(क) राधा के चरित्र की ऐसी कौन सी विशेषताएँ हैं जिन्हें आप अपनाना चाहेंगे।

(ख) किस बात से पता चलता है कि मकबूल को अपने दादा से विशेष लगाव था?

(ग) पाठ 'दिशाहारा' के आधार पर शरत् तथा उसके पिता मोतीलाल के स्वभाव की समानताएं बताइए।

14. (क) 'पराया घर तो लगता ही है, भाभी' - 'अण्डे के छिलके एकांकी के आधार पर बताइए कि श्याम ने ऐसा क्यों कहा? 4

(ख) 'हुसैन की कहानी अपनी जबानी' आत्मकथा के आधार पर मकबूल के पिता की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। 3

अथवा

'दिशाहारा' के आधार पर निम्न कथन को स्पष्ट कीजिए -

''उस समय वह सोच भी नहीं सकता था कि मनुष्य को दुःख पहुँचाने के अलावा भी साहित्य का कोई उद्‌देश्य हो सकता है।''